إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ

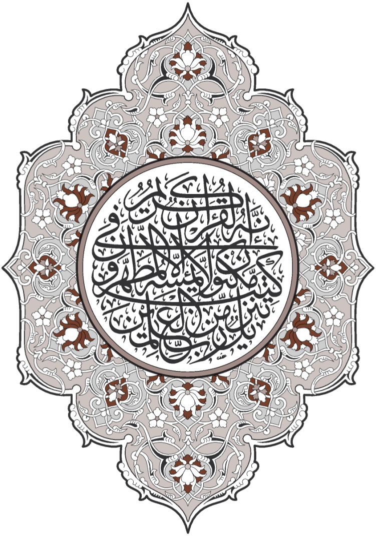

إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ فِي كِتَابٍ مَكْنُونٍ لَا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ تَنْزِيلٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ

इस कुर्आन मजीद और उस के अर्थों का अनुवाद तथा व्याख्या के छापने का आदेश
(सऊदी अरब के बादशाह)
हरमैन शरीफ़ैन सेवक किंग सल्मान बिन अब्दुल अज़ीज़ आल सऊद ने दिया।

تَشَرَّفَ بِالأَمْرِ بِطِبَاعَةِ هَـٰذَا المُصْحَفِ الشَّرِيفِ وَتَرْجَمَةِ مَعَانِيهِ
خَادِمُ الحَرَمَيْنِ الشَّرِيفَيْنِ المَلِكُ سَلْمَانُ بْنُ عَبْدِ العَزِيزِ آلُ سُعُودٍ
مَلِكُ المَمْلَكَةِ العَرَبِيَّةِ السُّعُودِيَّةِ

وَقفٌ لله تعالى من خادم الحرمين الشّريفين
الملك سلمان بن عبد العزيز آل سُعود
ولا يجوز بيعه
يُوزَّع مجّانًا

القرآن الكريم

وتَرجمةُ معانيهِ وتفسيره إلى اللُّغةِ الهنديّة

مجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشّريف

यह अनुवाद हरमैन शरीफ़ैन सेवक
किंग सल्मान बिन अब्दुल अज़ीज़ आल सऊद
की ओर से अल्लाह के वास्ते वक़्फ़ है।
और इसे बेचने की अनुमती नहीं है।

मुफ़्त में बांटा जाता है।

कुर्आन मजीद

और उस के अर्थों का
हिन्दी भाषा में अनुवाद
और व्याख्या।

अनुवाद और व्याख्या मौलाना अज़ीज़ुल हक़्क़ उमरी

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

مقدمة

بقلم معالي الشيخ الدكتور

عبد اللطيف بن عبد العزيز بن عبد الرحمن آل الشيخ

وزير الشؤون الإسلامية والدعوة والإرشاد

المشرف العام على المجمع

الحمد لله رب العالمين، القائل في كتابه الكريم:

﴿... قَدۡ جَآءَكُم مِّنَ ٱللَّهِ نُورٞ وَكِتَٰبٞ مُّبِينٞ﴾.

والصلاة والسلام على أشرف الأنبياء والمرسلين، نبينا محمد، القائل: «خيركم من تعلَّم القرآن وعلَّمه».

أما بعد:

فإنفاذاً لتوجيهات خادم الحرمين الشريفين، الملك سلمان بن عبدالعزيز آل سعود، -حفظه الله-، بالعناية بكتاب الله، والعمل على تيسير نشره، وتوزيعه بين المسلمين، في مشارق الأرض ومغاربها، وتفسيره، وترجمة معانيه إلى مختلف لغات العالم.

وإيماناً من وزارة الشؤون الإسلامية والدعوة والإرشاد بالمملكة العربية السعودية بأهمية ترجمة معاني القرآن الكريم إلى جميع لغات العالم المهمة تسهيلاً لفهمه على المسلمين الناطقين بغير العربية، وتحقيقاً للبلاغ المأمور به في قوله ﷺ: «بلِّغوا عني ولو آية».

وخدمة لإخواننا الناطقين باللغة الهندية يطيب لمجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف بالمدينة المنورة أن يقدم للقارئ الكريم هذه الترجمة إلى اللغة الهندية التي أعدَّها الشيخ عزيز الحق عُمَري، وقام بالإشراف عليها ومراجعتها من قبل المجمع الأستاذ الدكتور محمد الأعظمي، وقام بالتدقيق والمراجعة النهائية الدكتور سعيد أحمد حياة المشرَّفي.

ونحمد الله سبحانه وتعالى أن وفق لإنجاز هذا العمل العظيم الذي نرجو أن يكون خالصاً لوجهه الكريم، وأن ينفع به الناس.

إننا لندرك أن ترجمة معاني القرآن الكريم -مهما بلغت دقتها- ستكون قاصرة عن أداء المعاني العظيمة التي يدل عليها النص القرآني المعجز، وأن المعاني التي تؤديها الترجمة إنما هي حصيلة ما بلغه علم المترجم في فهم كتاب الله الكريم، وأنه يعتريها ما يعتري عمل البشر كلَّه من خطأ ونقص.

ومن ثم نرجو من كل قارئ لهذه الترجمة أن يوافي مجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف بالمدينة النبوية بما قد يجده فيها من خطأ أو نقص أو زيادة للإفادة من الاستدراكات في الطبعات القادمة إن شاء الله.

والله الموفق، وهو الهادي إلى سواء السبيل، اللَّهُمَّ تقبل منا إنك أنت السميع العليم.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

प्राक्कथन

आदर्णीय शैख़ डॉ
अब्दुल लतीफ बिन अबदुल अज़ीज़ बिन अब्दुर रहमान आलुश्शैख़
इस्लामी कार्यों, प्रचार एवं प्रसार
मंत्री, एवं प्रधान निरीक्षक
किंग फ़हद कुर्आन प्रिंटिंग कॉम्प्लेक्स, मदीना मुनव्वरा

सारी प्रशंसायें अल्लाह के लिये हैं जो सारे संसारों का पालनहार है। जिस का अपनी किताब में कथन हैः (तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकाश तथा खुली किताब आ गई है।)

और रहमत तथा सलाम हों उस नबी पर जो सब नबियों में श्रेष्ठ और उत्तम हैं। अर्थात हमारे नबी आदर्णीय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर। जिन का कथन हैः «तुम में सब से अच्छा वह व्यक्ति है जो कुर्आन सीखता और सिखाता है।»

अल्लाह की प्रशंसा और रहमत तथा सलाम के पश्चात्:

हरमैन शरीफ़ैन सेवकः शाह सल्मान बिन अब्दुल अज़ीज़ आल सऊद (अल्लाह उन की रक्षा करे) का आदेश है कि अल्लाह की पुस्तक (कुर्आन मजीद) के प्रचार, प्रसार तथा विश्व के मुसलमानों के बीच उस के वितरण तथा विभिन्न भाषाओं में उस के अनुवाद एंव व्याख्या की व्यवस्था की जाये।

हरमैन शरीफ़ैन सेवक की आज्ञापालन करते हुये इस्लामी कर्म तथा प्रचार प्रसार मंत्रालय विश्व की सभी महत्वपूर्ण भाषाओं में कुर्आन के अर्थों के अनुवाद और व्याख्या करने का प्रयत्न कर रहा है। इन्हीं भाषाओं में हिन्दी भाषा भी है। ताकि हिन्दी भाषक कुर्आन के भावार्थ को सरलता से समझ सकें। ताकि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के कथनः «मेरी बात लोगों तक पहुँचाओ, चाहे वह एक ही आयत क्यों न हो।» के आदेश की पूर्ति हो सके।

इसलिये हमें इस बात से अपार हर्ष हो रहा है कि हम "शाह फ़हद कुर्आन प्रकाशन साहित्य, मदीना मुनव्वरा" की ओर से पूरे कुर्आन के अर्थों का हिन्दी भाषा में अनुवाद तथा उस की संक्षेप व्याख्या प्रस्तुत कर रहे हैं।

यह अनुवाद और व्याख्या डॉक्टर प्रो॰ मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आज़मी के संरक्षण में, मौलाना अज़ीज़ुल हक़्क़ उमरी ने तैयार किया है। और क़ुर्आन प्रकाशन साहित्य की ओर से इस का संशोधन डॉक्टर सईद अहमद हयात मुशर्रफ़ी ने किया है।

हम अल्लाह की प्रशंसा करते हैं कि उस ने हमें यह कार्य करने का साहस दिया। और हम आशा करते हैं कि यह कार्य मात्र अल्लाह की प्रसन्नता के लिये होगा। और लोग इस से लाभांतित होंगे।

हम मानते हैं कि क़ुर्आन के अर्थों का कितनी ही गंभीरता से अनुवाद किया जाये पर वह उस के महान् अर्थों को वर्णित नहीं कर सकता। क्योंकि क़ुर्आन अपनी वर्णन शैली में भी चमत्कार है। अतः अनुवाद के द्वारा जो अर्थ दिखाई देता है वह उस का भावार्थ होता है जो अनुवादक ने क़ुर्आन से समझा है। जिस में हर प्रकार की त्रुटि संभव है। इसलिये प्रत्येक पाठक से अनुरोध है कि इस में वह जो भी त्रुटि पाये उस से किंग फ़हद क़ुर्आन प्रिंटिंग कॉम्प्लेक्स, मदीना मुनव्वरा

King Fahd Qur’an printing Complex,
Madina Munawarah, K. S. A.

को अवगत कराये ताकि आगामी प्रकाशन में उस का सुधार कर लिया जाये। अल्लाह ही हम सब का सहायक तथा मार्गदर्शक है।

हे हमारे पालनहार! हम से स्वीकार कर ले, तू ही सब सुनने वाला और जानने वाला है।

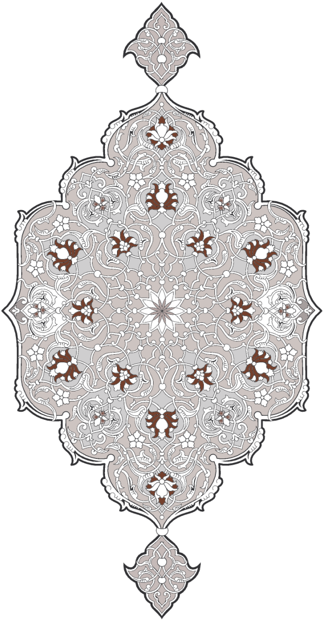

सूरह फ़ातिहा - 1

سُورَةُ الفَاتِحَة

सूरह फ़ातिहा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 7 आयतें हैं।

- यह सूरह आरंभिक युग में मक्का में उतरी, जो कुर्आन की भूमिका के समान है। इसी कारण इस का नाम ((सूरह फ़ातिहा)) अर्थातः "आरंभिक सूरह" है। इस का चमत्कार यह है कि इस की सात आयतों में पूरे कुर्आन का सारांश रख दिया गया है। और इस में कुर्आन के मौलिक संदेशः तौहीद, परलोक तथा रिसालत के विषय को संक्षेप में समो दिया गया है। इस में अल्लाह की दया, उस के पालक तथा पूज्य होने के गुणों को वर्णित किया गया है।
- इस सूरह के अर्थों पर विचार करने से बहुत से तथ्य उजागर हो जाते हैं। और ऐसा प्रतीत होता है कि सागर को गागर में बंद कर दिया गया है।
- इस सूरह में अल्लाह के गुण-गान तथा उस से प्रार्थना करने की शिक्षा दी गई है कि अल्लाह की सराहना और प्रशंसा किन शब्दों से की जाये। इसी प्रकार इस में बंदों को न केवल वंदना की शिक्षा दी गई है बल्कि उन्हें जीवन यापन के गुण भी बताये गये हैं।
- अल्लाह ने इस से पहले बहुत से समुदायों को सुपथ दिखाया किन्तु उन्हों ने कुपथ को अपना लिया, और इस में उसी कुपथ के अंधेरे से निकलने की दुआ है। बंदा अल्लाह से मार्ग-दर्शन के लिये दुआ करता है तो अल्लाह उस के आगे पूरा कुर्आन रख देता है कि यह सीधी राह है जिसे तू खोज रहा है। अब मेरा नाम लेकर इस राह पर चल पड़।

1. अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।
2. सब प्रशंसायें अल्लाह[1] के लिये हैं,

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ①

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ②

---

1 ((अल्लाह)) का अर्थः "हक़ीक़ी पूज्य" है। जो विश्व के रचयिता विधाता के लिये विशेष है।

जो सारे संसारों का पालनहार[1] है।

3. जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान्[2] है।

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

4. जो प्रतिकार[3] (बदले) के दिन का मालिक है।

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝

5. (हे अल्लाह!) हम केवल तुझी को पूजते हैं, और केवल तुझी से सहायता माँगते[4] हैं।

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝

---

[1] "पालनहार होने" का अर्थ यह है कि जिस ने इस विश्व की रचना कर के उस के प्रतिपालन की ऐसी विचित्र व्यवस्था की है कि सभी को अपनी आवश्यक्ता तथा स्थिति के अनुसार सब कुछ मिल रहा है। और विश्व का यह पूरा कार्य, सूर्य, वायु, जल, धरती सब जीवन की रक्षा एवं जीवन की प्रत्येक योग्यता की रखवाली में लगे हुऐ हैं, इस से सत्य पूज्य का परिचय और ज्ञान होता है।

[2] अर्थात वह विश्व की व्यवस्था एवं रक्षा अपनी अपार दया से कर रहा है, अतः प्रशंसा और पूजा के योग्य भी मात्र वही है।

[3] प्रतिकार (बदले) के दिन से अभिप्राय प्रलय का दिन है। आयत का भावार्थ यह है कि सत्य धर्म प्रतिकार के नियम पर आधारित है। अर्थात जो जैसा करेगा वैसा भरेगा। जैसे कोई जौ बोकर गेहूँ की, तथा आग में कूद कर शीतल होने की आशा नहीं कर सकता, ऐसे ही भले, बुरे कर्मों का भी अपना स्वभाविक गुण और प्रभाव होता है। फिर संसार में भी कुकर्मों का दुष्परिणाम कभी कभी देखा जाता है। परन्तु यह भी देखा जाता है कि दुराचारी, और अत्यचारी सुखी जीवन निर्वाह कर लेता है, और उसकी पकड़ इस संसार में नहीं होती, इस लिये न्याय के लिये एक दिन अवश्य होना चाहिये। और उसी का नाम "क़्यामत" (प्रलय का दिन) है।
"प्रतिकार के दिन का मालिक" होने का अर्थ यह है कि संसार में उस ने इन्सानों को भी अधिकार और राज्य दिये हैं। परन्तु प्रलय के दिन सब अधिकार उसी का रहेगा। और वही न्याय पूर्वक सब को उन के कर्मों का प्रतिफल देगा।

[4] इन आयतों में प्रार्थना के रूप में मात्र अल्लाह ही की पूजा और उसी को सहायतार्थ गुहारने की शिक्षा दी गई है। इस्लाम की परिभाषा में इसी का नाम "तौहीद" (एकेश्वरवाद) है। जो सत्य धर्म का आधार है। और अल्लाह के सिवा या उस के साथ किसी अन्य देवी देवता आदि को पुकारना, उस की पूजा करना, किसी प्रत्यक्ष साधन के बिना किसी को सहायता के लिये गुहारना, क्षचवम अथवा किसी व्यक्ति और वस्तु में अल्लाह का कोई विशेष गुण मानना आदि एकेश्वरवाद (तौहीद) के विरुद्ध है जो अक्षम्य पाप है। जिस के साथ कोई पुण्य का कार्य मान्य नहीं।

6. हमें सुपथ (सीधा मार्ग) दिखा।

7. उन का मार्ग जिन पर तू ने पुरस्कार किया।[1] उन का नहीं जिन पर तेरा प्रकोप[2] हुआ, और न ही उन का जो कुपथ (गुमराह) हो गये।

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ٦

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ٥ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۧ٧

---

1 इस आयत में सुपथ (सीधी राह) का चिन्ह यह बताया गया है कि यह उन की राह है जिन पर अल्लाह का पुरस्कार हुआ। उन की नहीं जो प्रकोपित हुये, और न उन की जो सत्य मार्ग से बहक गये।

2 "प्रकोपित" से अभिप्राय वह हैं जो सत्य धर्म को जानते हुये, मात्र अभिमान अथवा अपने पूर्वजों की परम्परागत प्रथा के मोह में अथवा अपनी बड़ाई के जाने के भय से नहीं मानते।

"कुपथ" (गुमराह) से अभिप्रेत वह हैं जो सत्य धर्म के होते हुऐ उस से दूर हो गये और देवी देवताओं आदि में अल्लाह के विशेष गुण मान कर उन को रोग निवारण, दुख दूर करने और सुख संतान आदि देने के लिये गुहारने लगे।

सूरह फ़ातिहा का महत्वः

इस सूरह के अर्थों पर विचार किया जाये तो इस में और कुर्आन के शेष भागों में संक्षेप तथा विस्तार जैसा संबंध है। अर्थात कुर्आन की सभी सूरतों में कुर्आन के जो लक्ष्य विस्तार के साथ बताये गये हैं सूरह फ़ातिहा में उन्हीं को संक्षिप्त रूप में बताया गया है। यदि कोई मात्र इसी सूरह के अर्थों को समझ ले तो भी वह सत्य धर्म तथा अल्लाह की इबादत (पूजा) के मूल लक्ष्यों को जान सकता है। और यही पूरे कुर्आन के विवरण का निचोड़ है।

सत्य धर्म का निचोड़ः

यदि सत्य धर्म पर विचार किया जाये तो उस में इन चार बातों का पाया जाना आवश्यक हैः

1- अल्लाह के विशेष गुणों की शुद्ध कल्पना।

2- प्रतिफल के नियम का विश्वास। अर्थात जिस प्रकार संसार की प्रत्येक वस्तु का एक स्वभाविक प्रभाव होता है इसी प्रकार कर्मों के भी प्रभाव और प्रतिफल होते हैं। अर्थात् सुकर्म का शुभ, और कुकर्म का अशुभ फल।

3- मरने के पश्चात् आख़िरत में जीवन का विश्वास। कि मनुष्य का जीवन इसी संसार में समाप्त नहीं हो जाता, बल्कि इस के पश्चात् भी एक जीवन है।

4- कर्मों के प्रतिकार (बदले) का विश्वास।

सूरह फ़ातिहा की शिक्षाः

सूरह फ़ातिहा एक प्रार्थना है। यदि किसी के दिल तथा मुख से रात दिन यही दुआ निकलती हो तो ऐसी दशा में उस के विचार तथा अक़ीदे (आस्था) की क्या

स्थिति हो सकती है! वह अल्लाह की सराहना करता है, परन्तु उस की नहीं जो वर्णों, जातियों तथा धार्मिक दलों का पूज्य है। बल्कि उस की जो सम्पूर्ण विश्व का पालनहार है। इस लिये वह पूरी मानव जाति का समान रूप से प्रतिपालक तथा सब के लिये दयालु है।

फिर उस के गुणों में से दया और न्याय के गुणों ही को याद करता है, मानो अल्लाह उस के लिये सर्वथा दया और न्याय है फिर वह उसके सामने अपना सिर झुका देता है और अपने भक्त होने का इक़्रार करता है। वह कहता हैः (हे अल्लाह!) मात्र तेरे ही आगे भक्ति और विनय के लिये सिर झुक सकता है। और मात्र तू ही हमारी विवशता और आवश्यक्ता में सहायता का सहारा है। वह अपनी पूजा तथा प्रार्थना दोनों को एक के साथ जोड़ देता है। और इस प्रकार सभी संसारिक शक्तियों और मानवी आदेशों से निश्चिन्त हो जाता है। अब किसी के द्वार पर उस का सिर नहीं झुक सकता। अब वह सब से निर्भय है। किसी के आगे अपनी विनय का हाथ नहीं फैला सकता। फिर वह अल्लाह से सीधी राह पर चलने की प्रार्थना करता है। इसी प्रकार वह वंचना और गुमराही से शरण (बचाव) की माँग करता है। मानव की विश्व व्यापी बुराई से, वर्ग तथा देश और धार्मिक दलों के भेद भाव से ताकि विभेद का कोई धब्बा भी उसके दिल में न रहे।

यही वह इन्सान है जिस के निर्माण के लिये क़ुर्आन आया है।

(देखियेः "उम्मुल किताब" - मौलाना अबुल कलाम आज़ाद)

इस सूरह की प्रधानताः

इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से वर्णित है कि जिब्रील फ़रिश्ता (अलैहिस्सलाम) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास थे कि आकाश से एक कड़ी आवाज़ सुनाई दी। जिब्रील ने सिर ऊपर उठाया, और कहाः यह आकाश का द्वार आज ही खोला गया है। आज से पहले यह कभी नहीं खुला। फिर उस से एक फ़रिश्ता उतरा। और कहा कि यह फ़रिश्ता धरती पर पहली बार उतरा है। फिर उस फ़रिश्ते ने सलाम किया, और कहाः आप दो "ज्योती" से प्रसन्न हो जाईये, जो आप से पहले किसी नबी को नहीं दी गईः "फ़ातिहतुल किताब" (अर्थातः सूरह फ़ातिहा), और सूरह "बक़रः" की अन्तिम आयतें। आप इन दोनों का कोई भी शब्द पढ़ेंगे तो उस में जो भी है वह आप को प्रदान किया जायेगा। (सहीह मुस्लिम, 806) और सहीह हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन", "सब्अ मसानी" (अर्थात सूरह फ़ातिहा), और महा क़ुर्आन है। जो विशेष रूप से मुझे प्रदान की गई है। (सहीह बुख़ारी, 4474)। इसी कारण हदीस में आया है कि जो सूरह फ़ातिहा न पढ़े उस की नमाज़ नहीं होती। (बुख़ारी- 756, मुस्लिम- 394)।

सूरह बक़रह - 2

سُورَةُ البَقَرَةِ

सूरह बक़रह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 286 आयतें हैं।

- यह सूरह क़ुर्आन की सब से बड़ी सूरह है। इस के एक स्थान पर "बक़रह" (अर्थात्: गाय) की चर्चा आई है जिस के कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस की आयत 1 से 21 तक में इस पुस्तक का परिचय देते हुये यह बताया गया है कि किस प्रकार के लोग इस मार्गदर्शन को स्वीकार करेंगे, और किस प्रकार के लोग इसे स्वीकार नहीं करेंगे।
- आयत 22 से 29 तक में सर्व साधारण लोगों को अपने पालनहार की आज्ञा का पालन करने के निर्देश दिये गये हैं। और जो इस से विमुख हों उन के दुराचारी जीवन और उस के दुष्परिणाम को, और जो स्वीकार कर लें उन के सदाचारी जीवन और शुभपरिणाम को बताया गया है।
- आयत 30 से 39 तक के अन्दर प्रथम मनुष्य आदम (अलैहिस्सलाम) की उत्पत्ति, और शैतान के विरोध की चर्चा करते हुये यह बताया गया है कि मनुष्य की रचना कैसे हुई, उसे क्यों पैदा किया गया, और उस की सफलता की राह क्या है?
- आयत 40 से 123 तक, बनी इस्राईल को सम्बोधित किया गया है कि यह अन्तिम पुस्तक और अन्तिम नबी वही हैं जिन की भविष्यवाणी और उन पर ईमान लाने का वचन तुम से तुम्हारी पुस्तक तौरात में लिया गया है। इस लिये उन पर ईमान लाओ। और इस आधार पर उन का विरोध न करो कि वह तुम्हारे वंश से नहीं हैं। वह अरबों में पैदा हुये हैं, इसी के साथ उन के दुराचारों और अपराधों का वर्णन भी किया गया है।
- आयत 124 से 167 तक आदरणीय इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के काबा का निर्माण करने तथा उन के धर्म को बताया गया है जो बनी इस्राईल तथा बनी इस्माईल (अरबों) दोनों ही के परम पिता थे कि वह यहूदी, ईसाई या किसी अन्य धर्म के अनुयायी नहीं थे। उन का धर्म यही इस्लाम था। और उन्हों ने ही काबा बनाने के समय मक्का में एक नबी भेजने की

प्रार्थना की थी जिसे अल्लाह ने पूरी किया। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धर्म पुस्तक कुर्आन के साथ भेजा।

- आयत 168 से 242 तक बहुत से धार्मिक, सामाजिक तथा परिवारिक विधान और नियम बताये गये हैं जो इस्लामी जीवन से संबन्धित हैं। और कुछ मूल आस्थावों का भी वर्णन किया गया है जिन के कारण मनुष्य मार्गदर्शन पर स्थित रह सकता है।
- आयत 243 से 283 तक के अन्दर मार्गदर्शन केन्द्र काबा को मुश्रिकों के नियंत्रण से मुक्त कराने के लिये जिहाद की प्रेरणा दी गई है, तथा ब्याज को अवैध घोषित कर के आपस के व्यवहार को उचित रखने के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 284 से 286 तक अन्तिम आयतों में उन लोगों के ईमान लाने की चर्चा की गई है जो किसी भेद-भाव के बिना अल्लाह के रसूलों पर ईमान लाये। इस लिये अल्लाह ने उन पर सीधी राह खोल दी। और उन्हों ने ऐसी दुआयें कीं जो उन के ईमान को उजागर करती हैं।
- हदीस में है कि जिस घर में सूरह बक़रः पढ़ी जाये उस से शैतान भाग जाता है। (सहीह मुस्लिम- 780)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
1. अलिफ, लाम, मीम।	الٓمّٓ ①
2. यह पुस्तक है, जिस में कोई संशय (संदेह) नहीं, उन को सीधी डगर दिखाने के लिये है, जो (अल्लाह से) डरते हैं।	ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ②
3. जो ग़ैब (परोक्ष)[1] पर ईमान (विश्वास) रखते हैं, तथा नमाज़ की	الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ

---

[1] इस्लाम की परिभाषा में, अल्लाह, उस के फ़रिश्तों, उस की पुस्तकों, उस के रसूलों तथा अन्तदिवस (प्रलय) और अच्छे बुरे भाग्य पर ईमान (विश्वास) को (ईमान बिल ग़ैब) कहा गया है। (इब्ने कसीर)

स्थापना करते हैं, और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है, उस में से दान करते हैं।	وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٣
4. तथा जो आप (नबी) पर उतारी गई (पुस्तक-क़ुर्आन) तथा आप से पूर्व उतारी गई (पुस्तकों[1] पर ईमान रखते हैं। तथा आख़िरत (परलोक)[2] पर भी विश्वास रखते हैं।	وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝٤
5. वही अपने पालनहार की बताई सीधी डगर पर हैं, तथा वही सफल होंगे।	اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٥
6. वास्तव[3] में जो काफ़िर (विश्वासहीन) हो गये (हे नबी!) उन्हें आप सावधान करें या न करें, वह ईमान नहीं लायेंगे।	اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٦
7. अल्लाह ने उन के दिलों तथा कानों पर मुहर लगा दी है। और उन की आँखों पर पर्दे पड़े हैं। तथा उन्हीं के लिये घोर यातना है।	خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ؕ وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۫ وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝٧
8. और[4] कुछ लोग कहते हैं कि हम अल्लाह तथा आख़िरत (परलोक) पर	وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ

---

[1] अर्थात तौरात, इंजील तथा अन्य आकाशीय पुस्तकों पर।

[2] आख़िरत पर ईमान का अर्थ हैः प्रलय तथा उस के पश्चात् फिर जीवित किये जाने तथा कर्मों के हिसाब एवं स्वर्ग तथा नरक पर विश्वास करना।

[3] इस से अभिप्राय वह लोग हैं, जो सत्य को जानते हुए उसे अभिमान के कारण नकार देते हैं।

[4] प्रथम आयतों में अल्लाह ने ईमान वालों की स्थिति की चर्चा करने के पश्चात् दो आयतों में काफ़िरों की दशा का वर्णन किया है। और अब उन मुनाफ़िक़ों (दुविधावादियों) की दशा बता रहा है जो मुख से तो ईमान की बात कहते हैं लेकिन दिल से अविश्वास रखते हैं।

ईमान ले आये। जब कि वह ईमान नहीं रखते।

الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝٨

9. वह अल्लाह को तथा जो ईमान लाये, उन्हें धोखा देते हैं। जब कि वह स्वयं अपने आप को धोखा देते हैं, परन्तु वह इसे समझते नहीं।

يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ وَمَا يَخْدَعُوْنَ
اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝٩

10. उन के दिलों में रोग (दुविधा) है, जिसे अल्लाह ने और अधिक कर दिया। और उन के लिये झूठ बोलने के कारण दुखदायी यातना है।

فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا ۚ وَلَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۢ ۙ بِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ۝١٠

11. और जब उन से कहा जाता है कि धरती में उपद्रव न करो, तो कहते हैं कि हम तो केवल सुधार करने वाले हैं।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ ۙ
قَالُوْٓا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ۝١١

12. सावधान! वही लोग उपद्रवी हैं, परन्तु उन्हें इस का बोध नहीं।

اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ۝١٢

13. और[1] जब उन से कहा जाता है कि जैसे और लोग ईमान लाये तुम भी ईमान लाओ, तो कहते हैं कि क्या मूर्खों के समान हम भी विश्वास कर लें? सावधान! वही मूर्ख हैं, परन्तु वह जानते नहीं।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا
اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ السُّفَهَآءُ ۭ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ
السُّفَهَآءُ وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۝١٣

14. तथा जब वह ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये, और जब अकेले में अपने शैतानों (प्रमुखों) के साथ होते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं। हम तो मात्र परिहास कर रहे हैं।

وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا
خَلَوْا اِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ ۙ
اِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُوْنَ ۝١٤

---

1 यह दशा उन मुनाफ़िक़ों की है जो अपने स्वार्थ के लिये मुसलमान हो गये, परन्तु दिल से इन्कार करते रहे।

15. अल्लाह उन से परिहास कर रहा है। तथा उन्हें उन के कुकर्मों में बहकने का अव्सर दे रहा है।

اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُوْنَ ﴿۱۵﴾

16. यह वे लोग हैं जिन्होंने सीधी डगर (सुपथ) के बदले गुमराही (कुपथ) खरीद ली। परन्तु उन के व्यापार में लाभ नहीं हुआ। और न उन्हों ने सीधी डगर पाई।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى فَمَا رَبِحَتْ
تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿۱۶﴾

17. उन[1] की दशा उन के जैसी है, जिन्हों ने अग्नि सुलगाई, और जब उन के आस-पास उजाला हो गया, तो अल्लाह ने उन का उजाला छीन लिया, तथा उन्हें ऐसे अंधेरों में छोड़ दिया जिन में उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता।

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ فَلَمَّآ اَضَآءَتْ
مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِيْ
ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ ﴿۱۷﴾

18. वह गूँगे, बहरे, अंधे हैं। अतः अब वह लौटने वाले नहीं।

صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿۱۸﴾

19. अथवा[2] (उन की दशा) आकाश की वर्षा के समान है, जिस में अंधेरे और कड़क तथा विद्युत हो, वह कड़क के कारण मृत्यु के भय से अपने कानों में उंगलियाँ डाल लेते हैं। और अल्लाह, काफ़िरों को अपने नियंत्रण में लिये हुये हैं।

اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ ۚ
يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ
حَذَرَ الْمَوْتِ ۗ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۹﴾

20. विद्युत उन की आँखों को उचक लेने के समीप हो जाती है, जब उन के लिये चमकती है तो उस के उजाले में चलने लगते हैं, और जब अंधेरा हो जाता है तो खड़े हो जाते हैं। और

يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ۗ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ
مَّشَوْا فِيْهِ ۙ وَاِذَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۰﴾

---

[1] यह दशा उन की है जो संदेह तथा दुविधा में पड़े रह गये। कुछ सत्य को उन्होंने स्वीकार भी किया, फिर भी अविश्वास के अंधेरों ही में रह गये।

[2] यह दूसरी उपमा भी दूसरे प्रकार के मुनाफ़िक़ों की दशा की है।

बादलों के छत्र में आ जाये, तथा फ़रिश्ते भी, और निर्णय ही कर दिया जाये? और सभी विषय अल्लाह ही की ओर फेरे[1] जायेंगे।

الْاَمْرُؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ (٢١٠)ع

211. बनी इस्राईल से पूछो कि हम ने उन्हें कितनी खुली निशानियाँ दीं? इस पर भी जिस ने अल्लाह की अनुकम्पा को, उस के अपने पास आ जाने के पश्चात् बदल दिया, तो अल्लाह की यातना भी बहुत कड़ी है।

سَلْ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ كَمْ اٰتَیْنٰهُمْ مِّنْ اٰیَةٍۭ بَیِّنَةٍؕ وَمَنْ یُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ الْعِقَابِ (٢١١)

212. काफ़िरों के लिये संसारिक जीवन शोभनीय (मनोहर) बना दिया गया है। तथा जो ईमान लाये यह उन का उपहास[2] करते हैं, और प्रलय के दिन अल्लाह के आज्ञाकारी उन से उच्च स्थान[3] पर रहेंगे। तथा अल्लाह जिसे चाहे अगणित आजीविका प्रदान करता है।

زُیِّنَ لِلَّذِیْنَ كَفَرُوا الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا وَیَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِیْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِؕ وَاللّٰهُ یَرْزُقُ مَنْ یَّشَآءُ بِغَیْرِ حِسَابٍ (٢١٢)

213. (आरंभ में) सभी मानव एक ही (स्वाभाविक) सत्धर्म पर थे। (फिर विभेद हुआ)। तो अल्लाह ने नबियों को शुभ समाचार सुनाने,[4] और

كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۫ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِیّٖنَ مُبَشِّرِیْنَ وَمُنْذِرِیْنَ ۪ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِیَحْكُمَ بَیْنَ النَّاسِ فِیْمَا

---

[1] अर्थात सब निर्णय परलोक में वही करेगा।

[2] अर्थात उन की निर्धनता तथा दरिद्रता के कारण।

[3] आयत का भावार्थ यह है कि काफ़िर संसारिक धन धान्य ही को महत्व देते हैं। जब कि परलोक की सफलता जो सत्धर्म और सत्कर्म पर आधारित है वही सब से बड़ी सफलता है।

[4] आयत 213 का सारांश यह है कि सभी मानव आरंभिक युग में स्वाभाविक जीवन व्यतीत कर रहे थे। फिर आपस में विभेद हुआ तो अत्याचार और उपद्रव होने लगा। तब अल्लाह की ओर से नबी आने लगे ताकि सब को एक सत्धर्म पर कर दें। और आकाशीय पुस्तकें भी इसी लिये अवतरित हूईं कि विभेद में निर्णय

اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ
اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًاۢ
بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا
فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ
اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢١٣﴾

(अवैज्ञा) से सचेत करने के लिये भेजा, और उन पर सत्य के साथ पुस्तक उतारी, ताकि वह जिन बातों पर विभेद कर रहे हैं, उन का निर्णय कर दें, और आप की दुराग्रह से उन्हों ने ही विभेद किया, जिन को (विभेद निवारण के लिये) यह पुस्तक दी गयी, तो जो ईमान लाये अल्लाह ने उस विभेद में उन्हें अपनी अनुमति से सत्पथ दर्शा दिया। और अल्लाह जिसे चाहे सत्पथ दर्शा देता है।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ
مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ مَسَّتْهُمُ
الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ
الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ
اللّٰهِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ ﴿٢١٤﴾

214. क्या तुम ने समझ रखा है कि यूँ ही स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे, हालाँकि अभी तक तुम्हारी वह दशा नहीं हुई जो तुम से पूर्व के ईमान वालों की हुई? उन्हें तंगियों तथा आपदाओं ने घेर लिया, और वह झँझोड़ दिये गये, यहाँ तक कि रसूल और जो उस पर ईमान लाये गुहारने लगे कि अल्लाह की सहायता कब आयेगी? (उस समय कहा गयाः) सुन लो! अल्लाह की सहायता समीप[1] है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ

215. हे नबी! वह आप से प्रश्न करते हैं कि कैसे व्यय (ख़र्च)करें? उन से कहो

कर के सब को एक मूल सत्धर्म पर लायें। परन्तु लोगों की दुराग्रह और आपसी द्वेष विभेद का कारण बने रहे। अन्यथा सत्धर्म (इस्लाम) जो एकता का आधार है वह अब भी सुरक्षित है। और जो व्यक्ति चाहेगा तो अल्लाह उस के लिये यह सत्य दर्शा देगा। परन्तु यह स्वयं उस की इच्छा पर आधारित है।

[1] आयत का भावार्थ यह है कि ईमान के लिये इतना ही बस नहीं कि ईमान को स्वीकार कर लिया तथा स्वर्गीय हो गये। इस के लिये यह भी आवश्यक है कि उन सभी परीक्षाओं में स्थिर रहो जो तुम से पूर्व सत्य के अनुयायियों के सामने आयीं, और तुम पर भी आयेंगी।

خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى
وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۗ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ
فَإِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢١٥﴾

कि जो भी धन तुम ख़र्च करो, अपने माता पिता, समीपवर्तियों, अनाथों, निर्धनों तथा यात्रियों (को दो)। तथा जो भी भलाई तुम करते हो, उसे अल्लाह भली भाँति जानता है।

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰى أَنْ
تَكْرَهُوْا شَيْئًا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰى أَنْ تُحِبُّوْا
شَيْئًا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا
تَعْلَمُوْنَ ﴿٢١٦﴾

216. हे ईमान वालो! तुम पर युद्ध करना अनिवार्य कर दिया गया है, और वह तुम्हें अप्रिय है, हो सकता है कि कोई चीज़ तुम्हें अप्रिय हो, और वही तुम्हारे लिये अच्छी हो, और इसी प्रकार सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हे प्रिय हो, और वह तुम्हारे लिये बुरी हो। अल्लाह जानता है और तुम नहीं[1] जानते।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ۖ قُلْ
قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ۖ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌ بِهٖ
وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ وَإِخْرَاجُ أَهْلِهٖ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ
اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۗ وَلَا يَزَالُوْنَ
يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ إِنِ
اسْتَطَاعُوْا ۚ وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ
فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَأُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۚ
هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢١٧﴾

217. हे नबी! वह[2] आप से प्रश्न करते हैं कि सम्मानित मास में युद्ध करना कैसा है? तो आप उन से कह दें कि उस में युद्ध करना घोर पाप है, परन्तु अल्लाह की राह से रोकना और उस का इन्कार करना, तथा मस्जिदे हराम से रोकना, और उस के निवासियों को उस से निकालना, अल्लाह के समीप उस से भी घोर पाप है। तथा फ़ितना (सत्धर्म) से विचलाना हत्या से भी भारी है। और वह तो तुम से युद्ध करते ही जायेंगे, यहाँ तक कि उन के बस

---

[1] आयत का भावार्थ यह है कि युद्ध ऐसी चीज़ नहीं जो तुम्हें प्रिय हो। परन्तु जब ऐसी स्थिति आ जाये कि शत्रु इस लिये आक्रमण और अत्याचार करने लगे कि लोगों ने अपने पूर्वजों की आस्था परम्परा त्याग कर सत्य को अपना लिया हैं, जैसा कि इस्लाम के आरंभिक युग में हुआ, तो सत्धर्म की रक्षा के लिये युद्ध करना अनिवार्य हो जाता है।

[2] अर्थात मिश्रणवादी।

में हो तो तुम्हें तुम्हारे धर्म से फेर दें, और तुम में से जो व्यक्ति अपने धर्म (इस्लाम) से फिर जायेगा, फिर कुफ़्र पर ही उस की मौत होगी, तो ऐसों का किया कराया, संसार तथा परलोक में व्यर्थ हो जायेगा। तथा वही नारकी हैं। और वह उस में सदावासी होंगे।

218. (इस के विपरीत) जो लोग ईमान लाये, और उन्होंने हिजरत[1] की, तथा अल्लाह की राह में जिहाद किया, तो वास्तव में वही अल्लाह की दया की आशा रखते हैं। तथा अल्लाह अति क्षमाशील और बहुत दयालु है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢١٨﴾

219. हे नबी! वह आप से मदिरा और जूआ के विषय में प्रश्न करते हैं। आप बता दें कि इन दोनों में बड़ा पाप है। तथा लोगों का कुछ लाभ भी है। परन्तु उन का पाप उन के लाभ से अधिक[2] बड़ा है। तथा वह आप से प्रश्न करते हैं कि अल्लाह की राह में क्या ख़र्च करें? उन से कह दो कि जो अपनी आवश्यक्ता से अधिक हो। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये आयतों (धर्मादेशों) को उजागर करता है। ताकि तुम सोच विचार करो।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ؕ قُلْ فِيْهِمَاۤ
اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۫ وَاِثْمُهُمَاۤ اَكْبَرُ
مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ە
قُلِ الْعَفْوَ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ
لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١٩﴾

---

[1] हिज्रत का अर्थ है: अल्लाह के लिये स्वदेश त्याग देना।

[2] अर्थात अपने लोक परलोक के लाभ के विषय में विचार करो और जिस में अधिक हानि हो उसे त्याग दो। यद्यपि उस में थोड़ा लाभ ही क्यों न हो यह मदिरा और जूआ से सम्बन्धित प्रथम आदेश है। आगामी सूरह निसा आयत 43 तथा सूरह माइदह आयत 90 में इन के विषय में अन्तिम आदेश आ रहा है।

220. और वह आप से अनाथों के विषय में प्रश्न करते हैं। तो उन से कह दो कि जिस बात में उन का सुधार हो वही सब से अच्छी है। यदि तुम उन से मिल कर रहो तो वह तुम्हारे भाई ही हैं, और अल्लाह जानता है कि कौन सुधारने और कौन बिगाड़ने वाला है। और यदि अल्लाह चाहता तो तुम पर सख़्ती[1] कर देता। वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वज्ञ है।

فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ؕ قُلْ
اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ؕ وَاِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ؕ
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
لَاَعْنَتَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۲۰﴾

221. तथा मुशिरक[2] स्त्रियों से तुम विवाह न करो, जब तक वह ईमान न लायें, और ईमान वाली दासी मुशिरक स्त्री से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हारे मन को भा रही हो, और अपनी स्त्रियों का विवाह मुशिरकों से न करो जब तक वह ईमान न लायें। और ईमान वाला दास मुशिरक से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हें भा रहा हो। वह तुम्हें अग्नि की ओर बुलाते हैं तथा अल्लाह स्वर्ग और क्षमा की ओर बुला रहा है। और सभी मानव के लिये अपनी आयतें (आदेश) उजागर कर रहा है ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ؕ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ
خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا
الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ؕ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ
مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ يَدْعُوْنَ اِلَى
النَّارِ ۖۚ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ
بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۲۱﴾ ع

222. तथा वह आप से मासिक धर्म के

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ؕ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ

---

[1] उन का खाना पीना अलग करने का आदेश दे कर।

[2] इस्लाम के विरोधियों से युद्ध ने यह प्रश्न उभार दिया कि उन से विवाह उचित है या नहीं? उस पर कहा जा रहा है कि उन से विवाह सम्बन्ध अवैध है, और इस का कारण भी बता दिया गया है कि वह तुम्हें सत्य से फेरना चाहते हैं। उन के साथ तुम्हारा विवाहिक सम्बन्ध कभी सफलता का कारण नहीं हो सकता।

विषय में प्रश्न करते हैं, तो कह दें कि वह मलीनता है। और उन के समीप भी न[1] जाओ जब तक पवित्र न हो जायें। फिर जब वह भली भाँति स्वच्छ[2] हो जायें तो उन के पास उसी प्रकार जाओ जैसे अल्लाह ने तुम्हें आदेश[3] दिया है। निश्चय अल्लाह तौबा करने वालों तथा पवित्र रहने वालों से प्रेम करता है।

فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ فِي الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى
يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ
اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ
الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿٢٢٢﴾

223. तुम्हारी पत्नियाँ तुम्हारे लिये खेतियाँ[4] हैं। तुम्हें अनुमति है कि जैसे चाहो अपनी खेतियों में जाओ। परन्तु भविष्य के लिये भी सत्कर्म करो। तथा अल्लाह से डरते रहो। और विश्वास रखो कि तुम्हें उस से मिलना है। और ईमान वालों को शुभ सूचना सुना दो।

نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۪ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ ۫
وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ
مُّلٰقُوْهُ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٢٣﴾

224. तथा अल्लाह के नाम पर अपनी शपथों को उपकार तथा सदाचार और लोगों में मिलाप कराने के लिये रोक[5] न बनाओ। और अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا
وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٤﴾

225. अल्लाह तुम्हारी निरर्थक शपथों पर तुम्हें नहीं पकड़ेगा, परन्तु जो शपथ

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ

---

[1] अर्थात संभोग करने के लिये।

[2] मासिक धर्म बन्द होने के पश्चात् स्नान कर के स्वच्छ हो जायें।

[3] अर्थात जिस स्थान को अल्लाह ने उचित किया है, वहीं संभोग करो।

[4] अर्थात संतान उत्पन्न करने का स्थान और इस में यह संकेत भी है कि भग के सिवा अन्य स्थान में संभोग हराम (अनुचित) है।

[5] अर्थात सदाचार और पुण्य न करने की शपथ लेना अनुचित है।

يُؤَاخِذُكُم بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ
حَلِيمٌ ﴿٢٢٥﴾

अपने दिलों के संकल्प से लोगे, उन पर पकड़ेगा, और अल्लाह अति क्षमाशील सहनशील है।

لِّلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِن نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ
أَشْهُرٍ ۖ فَإِن فَآءُو فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٢٦﴾

226. तथा जो लोग अपनी पत्नियों से संभोग न करने की शपथ लेते हों, वह चार महीने प्रतीक्षा करें। फिर[1] यदि अपनी शपथ से इस (बीच) फिर जायें तो अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٢٧﴾

227. और यदि उन्होंने तलाक़ का संकल्प ले लिया हो तो निःसन्देह अल्लाह सब कुछ सुनता और जानता है।

وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوٓءٍ ۚ وَلَا
يَحِلُّ لَهُنَّ أَن يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِيٓ أَرْحَامِهِنَّ
إِن كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَبُعُولَتُهُنَّ
أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِي ذَٰلِكَ إِنْ أَرَادُوٓا إِصْلَاحًا ۚ
وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ
وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ﴿٢٢٨﴾

228. तथा जिन स्त्रियों को तलाक़ दी गयी हो वह तीन बार रजवती होने तक अपने आप को विवाह से रोकी रखें। उन के लिये हलाल (वैध) नहीं है कि अल्लाह ने जो उन के गर्भाषयों में पैदा किया[2] है, उसे छुपायें। यदि वह अल्लाह तथा आख़िरत (परलोक) पर ईमान रखती हों। तथा उन के पति इस अवधि में अपनी पत्नियों को लौटा लेने के अधिकारी[3] हैं यदि वह मिलाप[4] चाहते हों। तथा

---

[1] यदि पत्नी से संबंध न रखने की शपथ ली जाये जिसे अर्बी में "ईला" के नाम से जाना जाता है तो उस का यह नियम है कि चार महीने प्रतीक्षा की जायेगी। यदि इस बीच पति ने फिर संबंध स्थापित कर लिया तो उसे शपथ का कफ़्फ़ारह (प्रायश्चित) देना होगा। अन्यथा चार महीने पूरे हो जाने पर न्यायालय उसे शपथ से फिरने या तलाक़ देने के लिये बाध्य करेगा।

[2] अर्थात मासिक धर्म अथवा गर्भ को।

[3] यह बताया गया है कि पति तलाक़ के पश्चात् पत्नी को लौटाना चाहे तो उसे इस का अधिकार है। क्यों कि विवाह का मूल लक्ष्य मिलाप है, अलगाव नहीं।

[4] हानि पहुँचाने अथवा दुःख देने के लिये नहीं।

सामान्य नियमानुसार स्त्रियों[1] के लिये वैसे ही अधिकार हैं जैसे पुरुषों का उन के ऊपर है। फिर भी पुरुषों को स्त्रियों पर एक प्रधानता प्राप्त है। और अल्लाह अति प्रभुत्वशील तत्वज्ञ है।

اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ

229. तलाक़ दो बार है। फिर नियमानुसार स्त्री को रोक लिया जाये या भली

---

[1] यहाँ यह ज्ञातव्य है कि जब इस्लाम आया तो संसार यह जानता ही न था कि स्त्रियों के भी कुछ अधिकार हो सकते हैं। स्त्री को संतान उत्पन्न करने का एक साधन समझा जाता था, और उन की मुक्ति इसी में थी कि वह पुरुषों की सेवा करें, प्राचीन धर्मानुसार स्त्री को पुरुष की सम्पत्ति समझा जाता था। पुरुष तथा स्त्री समान नहीं थे। स्त्री में मानव आत्मा के स्थान पर एक दूसरी आत्मा होती थी, रूमी विधान में भी स्त्री का स्थान पुरुष से बहुत नीचा था। जब कभी मानव शब्द बोला जाता तो उस से संबोधित पुरुष होता था। स्त्री पुरुष के साथ खड़ी नहीं हो सकती थी।

कुछ अमानवीय विचारों में जन्म से पाप का सारा बोझ स्त्री पर डाल दिया जाता। आदम के पाप का कारण हव्वा हुई। इस लिये पाप का पहला बीज स्त्री के हाथों पड़ा। और वही शैतान का साधन बनी। अब सदा स्त्री में पाप की प्रेरणा उभरती रहेगी, धार्मिक विषय में भी स्त्री पुरुष के समान न हो सकी।

परन्तु इस्लाम ने केवल स्त्रियों के अधिकार का विचार ही नहीं दिया बल्कि खुला एलान कर दिया कि जैसे पुरुषों के अधिकार हैं उसी प्रकार स्त्रियों के भी पुरुषों पर अधिकार हैं

कुर्आन ने इन चार शब्दों में स्त्री को वह सब कुछ दे दिया है जो उस का अधिकार था। और जो उसे कभी नहीं मिला था। इन शब्दों द्वारा उस के सम्मान और समता की घोषणा कर दी। दाम्पत्य जीवन तथा सामाजिक्ता की कोई ऐसी बात नहीं जो इन चार शब्दों में न आ गई हो। यद्यपि आगे यह भी कहा गया है कि पुरुषों के लिये स्त्रियों पर एक विशेष प्रधानता है। ऐसा क्यों है? इस का कारण हमें अगामी सूरह "निसा" में मिल जाता है कि यह इस लिये है कि पुरुष अपना धन स्त्रियों पर ख़र्च करते हैं। अर्थात परिवारिक जीवन की व्यवस्था के लिये कोई व्यवस्थापक अवश्य होना चाहिये। और इस का भार पुरुषों पर रखा गया है। यही उन की प्रधानता तथा विशेषता है। जो केवल एक भार है इस से पुरुष की जन्म से कोई प्रधानता सिद्ध नहीं होती। यह केवल एक परिवारिक व्यवस्था के कारण हुआ है।

भाँति विदा कर दिया जाये। और तुम्हारे लिये यह हलाल (वैध) नहीं है कि उन्हें जो कुछ तुम ने दिया है उस में से कुछ वापिस लो। फिर यदि तुम्हें यह भय[1] हो कि पति पत्नी अल्लाह की निर्धारित सीमाओं को स्थापित न रख सकेंगे तो उन दोनों पर कोई दोष नहीं कि पत्नी अपने पति को कुछ देकर मुक्ति[2] करा ले। यह अल्लाह की सीमायें हैं इन का उल्लंघन न करो। और जो अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करेंगे वही अत्याचारी हैं।

اَوْ تَسْرِيْحٌۢ بِاِحْسَانٍؕ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ
تَاْخُذُوْا مِمَّاۤ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـًٔا اِلَّاۤ اَنْ يَّخَافَاۤ
اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِؕ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا
حُدُوْدَ اللّٰهِۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا افْتَدَتْ
بِهٖؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَاۚ وَمَنْ
يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٢٩﴾

230. फिर यदि उसे (तीसरी बार) तलाक़ दे दी तो वह स्त्री उस के लिये हलाल (वैध) नहीं होगी, जब तक दूसरे पति से विवाह न कर ले। अब यदि दूसरा पति (संभोग के पश्चात्) उसे तलाक़ दे दे तब प्रथम पति से (निर्धारित अवधि पूरी कर के) फिर विवाह कर सकती है, यदि वह दोनों समझते हों कि अल्लाह की सीमाओं को स्थापित रख[3] सकेंगे। और यह

فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى
تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِمَاۤ اَنْ يَّتَرَاجَعَاۤ اِنْ ظَنَّاۤ اَنْ يُّقِيْمَا
حُدُوْدَ اللّٰهِؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا
لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٠﴾

---

[1] अर्थात पति के संरक्षकों को।

[2] पत्नी के अपने पति को कुछ दे कर विवाह बंधन से मुक्त करा लेने को इस्लाम की परिभाषा में "खुल्अ" कहा जाता है। इस्लाम ने जैसे पुरुषों को तलाक़ का अधिकार दिया है उसी प्रकार स्त्रियों को भी "खुल्अ" ले लेने का अधिकार दिया है। अर्थात वह अपने पति से तलाक़ माँग सकती है।

[3] आयत का भावार्थ यह है कि प्रथम पति ने तीन तलाक़ दे दी हों तो निर्धारित अवधि में भी उसे पत्नी को लौटाने का अव्सर नहीं दिया जायेगा। तथा पत्नी को यह अधिकार होगा कि निर्धारित अवधि पूरी कर के किसी दूसरे पति से धर्मविधान के अनुसार सहीह विवाह कर ले, फिर यदि दूसरा पति उसे सम्भोग

अल्लाह की सीमायें हैं, जिन्हें उन लोगों के लिये उजागर कर रहा है जो ज्ञान रखते हों।

231. और यदि स्त्रियों को (एक या दो) तलाक़ दे दो और उन की निर्धारित अवधि (इद्दत) पूरी होने लगे तो नियमानुसार उसे रोक लो, अथवा नियमानुसार विदा कर दो। उन्हें हानि पहुँचाने के लिये न रोको, ताकि उन पर अत्याचार करो, और जो कोई ऐसा करेगा तो वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करेगा। तथा अल्लाह की आयतों (आदेशों) को उपहास न बनाओ। और अपने ऊपर अल्लाह के उपकार तथा उस पुस्तक (कुर्आन) तथा हिक्मत (सुन्नत) को याद करो जिसे उस ने तुम पर उतारा है। और उस के द्वारा तुम को शिक्षा दे रहा है। तथा अल्लाह से डरो, और विश्वास रखो कि अल्लाह सब कुछ जानता है।[1]

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ
فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ سَرِّحُوهُنَّ
بِمَعْرُوفٍ ۚ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ ضِرَارًا
لِّتَعْتَدُوا ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ
نَفْسَهُ ۚ وَلَا تَتَّخِذُوا آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا ۚ
وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمَا أَنزَلَ
عَلَيْكُم مِّنَ الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُم بِهِ ۚ
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمٌ ﴿٢٣١﴾

232. और जब तुम अपनी पत्नियों को (तीन से कम) तलाक़ दो, और वह अपनी निश्चित अवधि (इद्दत) पूरी

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ
فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَن يَنكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا

के पश्चात् तलाक़ दे, या उस का देहान्त हो जाये तो प्रथम पति से निर्धारित अवधि पूरी करने के पश्चात् नये महर के साथ नया विवाह कर सकती है। लेकिन यह उस समय है जब दोनों यह समझते हों कि वे अल्लाह के आदेशों का पालन कर सकेंगे।

[1] आयत का अर्थ यह है कि पत्नी को पत्नी के रूप में रखो, और उन के अधिकार दो। अन्यथा तलाक़ दे कर उन की राह खोल दो। जाहिलिय्यत के युग के समान अँधेरे में न रखो। इस विषय में भी नैतिक्ता एवं संयम के आदर्श बनो और कुर्आन तथा सुन्नत के आदेशों का अनुपालन करो।

تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ ذٰلِكَ
يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٢﴾

कर लें, तो (स्त्रियों के संरक्षको!) उन्हें अपने पतियों से विवाह करने से न रोको, जब कि सामान्य नियमानुसार वह आपस में विवाह करने पर सहमत हों, यह तुम में से उसे निर्देश दिया जा रहा है जो अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान (विश्वास) रखता है, यही तुम्हारे लिये अधिक स्वच्छ तथा पवित्र है। और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।

وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ
لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ
رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا
وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌ ۢبِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ
بِوَلَدِهٖ ۗ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا
فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِمَا ؕ وَاِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ تَسْتَرْضِعُوْۤا اَوْلَادَكُمْ فَلَا
جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ مَّاۤ اٰتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٣﴾

233. और मातायें अपने बच्चों को पूरे दो वर्ष दूध पिलायें, और पिता को नियमानुसार उन्हें खाना कपड़ा देना है, किसी पर उस की सकत से अधिक भार नहीं डाला जायेगा, न माता को उस के बच्चे के कारण हानि पहुँचाई जाये, और न पिता को उस के बच्चे के कारण। और इसी प्रकार उस (पिता) के वारिस (उत्तराधिकारी) पर (खाना कपड़ा देने का) भार है। फिर यदि दोनों आपस की सहमति तथा परामर्श से (दो वर्ष से पहले) दूध छुड़ाना चाहें तो दोनों पर कोई दोष नहीं। और यदि (तुम्हारा विचार किसी अन्य स्त्री से) दूध पिलवाने का हो तो इस में भी तुम पर कोई दोष नहीं, जब कि जो कुछ नियमानुसार उसे देना है उस को चुका दिया हो, तथा अल्लाह से डरते रहो। और जान लो कि तुम जो कुछ करते हो उसे

अल्लाह देख रहा[1] है।

234. और तुम में से जो मर जायें और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जायें तो वह स्वयं को चार महीने दस दिन रोके रखें।[2] फिर जब उन की अवधि पूरी हो जाये तो वह सामान्य नियमानुसार अपने विषय में जो भी करें उस में तुम पर कोई दोष[3] नहीं। तथा अल्लाह तुम्हारे कर्मों से सूचित है।

235. इस अवधि में यदि तुम (उन) स्त्रियों को विवाह का संकेत दो अथवा अपने मन में छुपाये रखो तो तुम पर कोई दोष नहीं। अल्लाह जानता है कि उन का विचार तुम्हारे मन में आयेगा, परन्तु उन्हें गुप्त रूप से विवाह का वचन न दो। परन्तु यह कि नियमानुसार[4] कोई बात कहो। तथा विवाह के बंधन का निश्चय उस समय तक न करो जब तक

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٣٤﴾

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ۗ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۬ ۗ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ۗ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٣٥﴾ ع

---

1 तलाक़ की स्थिति में यदि माँ की गोद में बच्चा हो तो यह आदेश दिया गया है कि माँ ही बच्चे को दूध पिलाये और दूध पिलाने तक उस का ख़र्च पिता पर है। और दूध पिलाने की अवधि दो वर्ष है। साथ ही दो मूल नियम भी बताये गये हैं कि न तो माँ को बच्चे के कारण हानि पहुँचाई जाये और न पिता को। और किसी पर उस की शक्ति से अधिक ख़र्च का भार न डाला जाये।

2 उस की निश्चित अवधि चार महीने दस दिन है। वह तुरंत दूसरा विवाह नहीं कर सकती, और न इस से अधिक पति का सोग मनाये। जैसा कि जाहिलिय्यत में होता था कि पत्नी को एक वर्ष तक पति का सोग मनाना पड़ता था।

3 यदि स्त्री निश्चित अवधि के पश्चात् दूसरा विवाह करना चाहे, तो उसे रोका न जाये।

4 विवाह के विषय में जो बात की जाये वह खुली तथा नियमानुसार हो, गुप्त नहीं।

निर्धारित अवधि पूरी न हो जाये[1], तथा जान लो कि जो कुछ तुम्हारे मन में है उसे अल्लाह जानता है। अतः उस से डरते रहो और जान लो कि अल्लाह क्षमाशील, सहनशील है।

236. और तुम पर कोई दोष नहीं यदि तुम स्त्रियों को संभोग करने तथा महर (विवाह उपहार) निर्धारित करने से पहले तलाक़ दे दो। (इस स्थिति में) उन्हें कुछ दो। नियमानुसार धनी पर अपनी शक्ति के अनुसार तथा निर्धन पर अपनी शक्ति के अनुसार देना है। यह उपकारियों पर आवश्यक है।

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ
تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۚۖ وَّمَتِّعُوْهُنَّ ۚ
عَلَى الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًا ۢ
بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٣٦﴾

237. और यदि तुम उन को उन से संभोग करने से पहले तलाक़ दो इस स्थिति में कि तुम ने उन के लिये महर (विवाह उपहार) निर्धारित किया है तो निर्धारित महर का आधा देना अनिवार्य है। यह और बात है कि वह क्षमा कर दें। अथवा वह क्षमा कर दें जिन के हाथ में विवाह का बंधन[2] है। और क्षमा कर देना संयम से अधिक समीप है। और

وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ
فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ
اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ
النِّكَاحِ ؕ وَاَنْ تَعْفُوْٓا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ؕ وَلَا تَنْسَوُا
الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٧﴾

---

[1] जब तक अवधि पूरी न हो विवाह की बात तथा वचन नहीं होना चाहिये।

[2] अर्थात पति अपनी ओर से अधिक अर्थात पूरा महर दे तो यह प्रधानता की बात होगी। इन दो आयतों में यह नियम बताया गया है कि यदि विवाह के पश्चात् पति और पत्नी में कोई सम्बंध स्थापित हुआ हो, तो इस स्थिति में यदि महर निर्धारित न किया गया हो तो पति अपनी शक्ति अनुसार जो भी दे सकता हो, उसे अवश्य दे। और यदि महर निर्धारित हो तो इस स्थिति मे आधा महर पत्नी को देना अनिवार्य है। और यदि पुरुष इस से अधिक दे सके तो संयम तथा प्रधानता की बात होगी।

आपस में उपकार को न भूलो। तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह सब देख रहा है।

238. नमाज़ों का, विशेष रूप से माध्यमिक नमाज़ (अस्र) का ध्यान रखो।[1] तथा अल्लाह के लिये विनय पूर्वक खड़े रहो।

حَافِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۗ
وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ۝٢٣٨

239. और यदि तुम्हें भय[2] हो तो पैदल या सवार (जैसे संभव हो) नमाज़ पढ़ो, फिर जब निश्चिंत हो जाओ तो अल्लाह ने तुम्हें जैसे सिखाया है, जिसे पहले तुम नहीं जानते थे, वैसे अल्लाह को याद करो।

فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا
اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ۝٢٣٩

240. और जो तुम में से मर जायें, तथा पत्नियाँ छोड़ जायें, वह अपनी पत्नियों के लिये एक वर्ष तक उन को ख़र्च देने, तथा (घर से) न निकालने की वसिय्यत कर जायें तो यदि वह स्वयं निकल जायें[3] तथा सामान्य नियमानुसार अपने विषय में कुछ भी करें, तो तुम पर कोई दोष नहीं। अल्लाह प्रभावशाली तत्वज्ञ है।

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۖۚ
وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ
اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا
فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ۝٢٤٠

241. तथा जिन स्त्रियों को तलाक़ दी गयी हो, तो उन्हें भी उचित रूप से सामग्री मिलनी चाहिये, यह आज्ञाकारियों पर आवश्यक है।

وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ حَقًّا عَلَى
الْمُتَّقِيْنَ ۝٢٤١

---

[1] अस्र की नमाज़ पर ध्यान रखने के लिये इस कारण बल दिया गया है कि व्यवसाय में लीन रहने का समय होता है।

[2] अर्थात शत्रु आदि का।

[3] अर्थात एक वर्ष पूरा होने से पहले। क्यों कि उन की निश्चित अवधि चार महीनो और दस दिन ही निर्धारित है।

242. इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों को उजागर कर देता है ताकि तुम समझो।

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُوْنَ ۝٢٤٢ ع

243. क्या आप ने उन की दशा पर विचार नहीं किया जो अपने घरों से मौत के भय से निकल गये[1], जब कि उन की संख्या हज़ारों में थी, तो अल्लाह ने उन से कहा कि मर जाओ, फिर उन्हें जीवित कर दिया। वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये बड़ा उपकारी है, परन्तु अधिकांश लोग कृतज्ञयता नहीं करते।[2]

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ
حَذَرَ الْمَوْتِ ۠ فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ۣ ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ۭ اِنَّ
اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَشْكُرُوْنَ ۝٢٤٣

244. और तुम अल्लाह (के धर्म के समर्थन) के लिये युद्ध करो, और जान लो कि अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ ۝٢٤٤

245. कौन है, जो अल्लाह को अच्छा उधार[3] देता है, ताकि अल्लाह उसे उस के लिये कई गुना अधिक कर दे? और अल्लाह ही थोड़ा और अधिक करता है, और उसी की ओर तुम सब फेरे जावोगे।

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ
اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ۭ وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ ۠ وَاِلَيْهِ
تُرْجَعُوْنَ ۝٢٤٥

246. हे नबी! क्या आप ने बनी इस्राईल के प्रमुखों के विषय पर विचार नहीं किया, जो मूसा के बाद सामने आया? जब उस ने अपने नबी से कहाः हमारे लिये एक राजा बना दो।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ
مُوْسٰى ۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ
الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ۭ قَالُوْا وَمَا لَنَآ اَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ

---

[1] इस में बनी इस्राईल के एक गिरोह की ओर संकेत किया गया है।

[2] आयत का भावार्थ यह है कि जो लोग मौत से डरते हों, वह जीवन में सफल नहीं हो सकते, तथा जीवन और मौत अल्लाह के हाथ में है।

[3] अर्थात जिहाद के लिये धन ख़र्च करना अल्लाह को उधार देना है।

हम अल्लाह की राह में युद्ध करेंगे, (नबी ने) कहाः ऐसा तो नहीं होगा कि तुम्हें युद्ध का आदेश दे दिया जाये तो अवैज्ञा कर जाओ? उन्हों ने कहाः ऐसा नहीं हो सकता कि हम अल्लाह की राह में युद्ध न करें। जब कि हम अपने घरों और अपने पुत्रों से निकाल दिये गये हैं। परन्तु जब उन्हें युद्ध का अदेश दे दिया गया तो उन में से थोड़े के सिवा सब फिर गये। और अल्लाह अत्याचारियों को भली भाँति जानता है।

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَاَبْنَآئِنَا ؕ
فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ (٢٤٦)

247. तथा उन के नबी ने कहाः अल्लाह ने "तालूत" को तुम्हारा राजा बना दिया है। वह कहने लगेः "तालूत" हमारा राजा कैसे हो सकता है? हम उस से अधिक राज्य का अधिकार रखते हैं, वह तो बड़ा धनी भी नहीं है। (नबी ने) कहाः अल्लाह ने उसे तुम पर निर्वाचित किया है, और उसे अधिक ज्ञान तथा शारिरिक बल प्रदान किया है। और अल्लाह जिसे चाहे अपना राज्य प्रदान करे तथा अल्लाह ही विशाल, अति ज्ञानी[1] है।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ
مَلِكًا ؕ قَالُوْٓا اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ
اَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ؕ
قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهٗ بَسْطَةً فِى
الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤْتِىْ مُلْكَهٗ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ
وَاسِعٌ عَلِيْمٌ (٢٤٧)

248. तथा उन के नबी ने उन से कहाः उस के राज्य का लक्षण यह है कि वह ताबूत तुम्हारे पास आयेगा, जिस में तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे लिये संतोष तथा मूसा और हारून के घराने के छोड़े हुये

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖٓ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ
التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ
اٰلُ مُوْسٰى وَاٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ اِنَّ فِىْ
ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ع (٢٤٨)

---

[1] अर्थात उसी के अधिकार में सब कुछ है। और कौन राज्य की क्षमता रखता है? उसे भी वही जानता है।

إِسْرَآءِيلَ وَكَفَرَت طَّآئِفَةٌ ۖ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ
ءَامَنُوا عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ١٤

अल्लाह (के धर्म के प्रचार में)? तो हवारियों ने कहाः हम हैं अल्लाह के (धर्म के) सहायक। तो ईमान लाया ईस्राईलियों का एक समूह और कुफ़्र किया दूसरे समूह ने। तो हम ने समर्थन दिया उन को जो ईमान लाये उन के शत्रु के विरुद्ध, तो वही विजयी रहे।

सूरह जुमुआ - 62

سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ

सूरह जुमुआ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस की आयत 9 में जुमुआ का महत्व बताया गया है। इसलिये इस का नाम सूरह जुमुआ है।
- इस की आरंभिक आयत में अल्लाह की तस्बीह (पवित्रता) और उस के गुणों का वर्णन है।
- इस में अल्लाह के अनुग्रह को बताया गया है कि उस ने उम्मियों (अर्बों) में एक रसूल भेजा है और यहूदियों के कुकर्म और निर्मूल दावों पर पकड़ की गई है।
- मुसलमानों को जुमुआ की नमाज़ का पालन करने पर बल दिया गया है।
- हदीस में है कि उत्तम दिन जिस में सूर्य निकलता है जुमुआ का दिन है। उसी में आदम (अलैहिस्सलाम) पैदा किये गये। उसी दिन स्वर्ग में रखे गये। और उसी दिन स्वर्ग से निकाले गये। तथा प्रलय भी इसी दिन आयेगी। (सहीह मुस्लिमः 854) एक दूसरी हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः लोग जुमुआ छोड़ने से रुक जायें अन्यथा अल्लाह उन के दिलों पर मुहर लगा देगा। (सहीह मुस्लिमः 856)
- आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जुमुआ की नमाज़ में यह सूरह और सूरह मुनाफ़िकून पढ़ते थे। (सहीह मुस्लिमः 877)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करती हैं वह सब चीज़ें जो आकाशों तथा धरती में हैं। जो अधिपति, अति पवित्र, प्रभावशाली गुणी (दक्ष) है।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ①

2. वही है जिस ने निरक्षरों[1] में एक रसूल भेजा उन्हीं में से। जो पढ़ कर सुनाते हैं उन्हें अल्लाह की आयतें और पवित्र करते हैं उन को तथा शिक्षा देते हैं उन्हें पुस्तक (कुर्आन) तथा तत्वदर्शिता (सुन्नत[2]) की। यद्यपि वह इस से पूर्व खुले कुपथ में थे।

هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّنَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ
ءَايَٰتِهِۦ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَٰبَ وَالْحِكْمَةَ
وَإِن كَانُوا مِن قَبْلُ لَفِي ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ٢

3. तथा दूसरों के लिये भी उन में से जो अभी उन से नहीं[3] मिले हैं। वह अल्लाह प्रभुत्वशाली गुणी है।

وَءَاخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ٣

4. यह[4] अल्लाह का अनुग्रह है जिसे वह प्रदान करता है उस के लिये जिस के लिये वह चाहता है। और अल्लाह बड़े अनुग्रह वाला है।

ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۚ
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ٤

5. उन की दशा जिन पर तौरात का भार रखा गया फिर तदानुसार कर्म

مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرَىٰةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ

---

1 अनभिज्ञों से अभिप्रायः अरब हैं। अर्थात जो अहले किताब नहीं हैं। भावार्थ यह है कि पहले रसूल इस्राईल की संतति में आते रहे। और अब अन्तिम रसूल इस्माईल की संतति में आया है। जो अल्लाह की पुस्तक कुर्आन पढ़ कर सुनाते हैं। यह केवल अर्बों के नबी नहीं पूरे मनुष्य जाति के नबी हैं।

2 सुन्नत जिस के लिये हिक्मत शब्द आया है उस से अभिप्राय साधारण परिभाषा में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की हदीस, अर्थात आप का कथन और कर्म इत्यादि है।

3 अर्थात आप अरब के सिवा प्रलय तक के लिये पूरे मानव संसार के लिये भी रसूल बना कर भेजे गये हैं। हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से प्रश्न किया गया कि वह कौन हैं? तो आप ने अपना हाथ सल्मान फारसी के ऊपर रख दिया। और कहाः यदि ईमान सुरय्या (आकाश के कुछ तारों का नाम) के पास भी हो तो कुछ लोग उस को वहाँ से भी प्राप्त कर लेंगे। (सहीह बुख़ारीः 4897)

4 अर्थात आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अरबों तथा पूरे मानव संसार के लिये रसूल बनाना।

नहीं किया उस गधे के समान है जिस के ऊपर पुस्तकें[1] लदी हुई हों। बुरा है उस जाति का उदाहरण जिन्होंने झुठला दिया अल्लाह की आयतों को। और अल्लाह मार्ग दर्शन नहीं देता अत्याचारियों को।

ٱلْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًۢا ۚ بِئْسَ مَثَلُ ٱلْقَوْمِ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟
بِـَٔايَـٰتِ ٱللَّهِ ۚ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّـٰلِمِينَ ۝٥

6. आप कह दें कि हे यहुदियों! यदि तुम समझते हो कि तुम्हीं अल्लाह के मित्र हो अन्य लोगों के अतिरिक्त, तो कामना करो मरण की यदि तुम सच्चे[2] हो?

قُلْ يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ هَادُوٓا۟ إِن زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ أَوْلِيَآءُ لِلَّهِ
مِن دُونِ ٱلنَّاسِ فَتَمَنَّوُا۟ ٱلْمَوْتَ إِن كُنتُمْ
صَـٰدِقِينَ ۝٦

7. तथा वह अपने किये हुये कर्तूतों के कारण कदापि उस की कामना नहीं करेंगे। और अल्लाह भली-भाँति अवगत है अत्याचारियों से।

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهُۥٓ أَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۚ
وَٱللَّهُ عَلِيمٌۢ بِٱلظَّـٰلِمِينَ ۝٧

8. आप कह दें कि जिस मौत से तुम भाग रहे हो वह अवश्य तुम से मिल कर रहेगी। फिर तुम अवश्य फेर दिये जाओगे परोक्ष (छुपे) तथा प्रत्येक (खुले) के ज्ञानी की ओर। फिर वह तुम को सूचित कर देगा उस से जो तुम करते रहे।[3]

قُلْ إِنَّ ٱلْمَوْتَ ٱلَّذِى تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُۥ مُلَـٰقِيكُمْ ۖ
ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَـٰلِمِ ٱلْغَيْبِ وَٱلشَّهَـٰدَةِ فَيُنَبِّئُكُم
بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝٨

9. हे ईमान वालो! जब अज़ान दी जाये नमाज़ के लिये जुमुआ के दिन तो

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا نُودِىَ لِلصَّلَوٰةِ مِن يَوْمِ

---

[1] अर्थात जैसे गधे को अपने ऊपर लादी हुई पुस्तकों का ज्ञान नहीं होता कि उन में क्या लिखा है वैसे ही यह यहूदी तौरात के आदेशानुसार कर्म न कर के गधे के समान हो गये हैं।

[2] यहूदियों का दावा था कि वही अल्लाह के प्रियवर हैं। (देखियेः सूरह बक़रा, आयतः 111, तथा सूरह माइदा, आयतः 18) इसलिये कहा जा रहा है कि स्वर्ग में पहुँचने के लिये मौत की कामना करो।

[3] अर्थात तुम्हारे दुष्कर्मों के परिणाम से।

दौड़[1] जाओ अल्लाह की याद की ओर तथा त्याग दो क्रय-विक्रय।[2] यह उत्तम है तुम्हारे लिये यदि तुम जानो।

10. फिर जब नमाज़ हो जाये तो फैल जाओ धरती में। तथा खोज करो अल्लाह के अनुग्रह की तथा वर्णन करते रहो अल्लाह का अत्यधिक ताकि तुम सफल हो जाओ।

11. और जब वह देख लेते हैं कोई व्यापार अथवा खेल तो उस की ओर दौड़ पड़ते हैं।[3] तथा आप को छोड़ देते हैं खड़े। आप कह दें कि जो कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम है खेल तथा व्यापार से। और अल्लाह सर्वोत्तम जीविका प्रदान करने वाला है।

الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۚ
ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ٩

فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَوٰةُ فَانتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا
مِن فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ١٠

وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انفَضُّوا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ
قَائِمًا ۚ قُلْ مَا عِندَ اللَّهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ
التِّجَارَةِ ۚ وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ١١ ع

---

[1] अर्थ यह है कि जुमुआ की अज़ान हो जाये तो अपने सारे कारोबार बंद कर के जुमुआ का खुत्बा सुनने, और जुमुआ की नमाज़ पढ़ने के लिये चल पड़ो।

[2] इस से अभिप्राय संसारिक कारोबार है।

[3] हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जुमुआ का खुत्बा (भाषण) दे रहे थे कि एक कारवाँ ग़ल्ला लेकर आ गया। और सब लोग उस की ओर दौड़ पड़े। बारह व्यक्ति ही आप के साथ रह गये। उसी पर अल्लाह ने यह आयत उतारी (सहीह बुख़ारीः 4899)

सूरह मुनाफ़िक़ून - 63

سُورَةُ المُنَافِقُونَ

सूरह मुनाफ़िक़ून के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में **11** आयतें हैं।

- इस का नाम इस की प्रथम आयत से लिया गया है।
- इस में मुनाफ़िक़ों के उस दुर्व्यवहार का वर्णन है जो उन्होंने इस्लाम के विरोध में अपना रखा था जिस के कारण वह अक्षम्य अपराध के दोषी बन गये।
- आयत **9** से **11** तक में ईमान वालों को संबोधित कर के अल्लाह का स्मरण (याद) करने तथा उस की राह में दान करने पर बल दिया गया है। जिस से निफ़ाक़ (द्विधा) के रोग का पता भी लगता है। और उसे दूर करने का उपाय भी सामने आ जाता है।
- हदीस में है कि मुनाफ़िक़ के लक्षण तीन हैंः जब वह बात करे तो झूठ बोले। और जब वादा करे तो मुकर जाये। और जब उस के पास अमानत रखी जाये तो उस में ख़्यानत (विश्वासघात) करे। (सहीह बुख़ारीः **33**, सहीह मुस्लिमः **59**)
- दूसरी हदीस में एक चौथा लक्षण यह बताया गया है कि जब वह झगड़ा करे तो गाली दे। (सहीह बुख़ारीः **34**, तथा सहीह मुस्लिमः **58**)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ ○

1. जब आते हैं आप के पास मुनाफ़िक़ तो कहते हैं कि हम साक्ष्य (गवाही) देते हैं कि वास्तव में आप अल्लाह के रसूल हैं। तथा अल्लाह जानता है कि वास्तव में आप अल्लाह के रसूल हैं। और अल्लाह गवाही देता है कि

إِذَا جَآءَكَ ٱلْمُنَٰفِقُونَ قَالُوا۟ نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ ٱللَّهِ ۗ
وَٱللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُۥ وَٱللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ ٱلْمُنَٰفِقِينَ
لَكَٰذِبُونَ ①

मुनाफ़िक़ निश्चय झूठे[1] हैं।

2. उन्होंने बना रखा है अपनी शपथों को एक ढाल और रुक गये अल्लाह की राह से। वास्तव में वह बड़ा दुष्कर्म कर रहे हैं।

اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ
إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ②

3. यह सब कुछ इस कारण है कि वे ईमान लाये फिर कुफ़्र कर गये तो मुहर लगा दी अल्लाह ने उन के दिलों पर, अतः वह समझते नहीं।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا فَطُبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ
لَا يَفْقَهُونَ ③

4. और यदि आप उन्हें देखें तो आप को भा जायें उन के शरीर। और यदि वह बात करें तो आप सुनने लगें उन की बात, जैसे कि वह लकड़ियाँ हों दीवार के सहारे लगाई[2] हुईं। वह प्रत्येक कड़ी ध्वनी को अपने विरुद्ध[3] समझते हैं। वही शत्रु हैं, आप उन से सावधान रहें। अल्लाह उन को नाश करे, वह किधर फिरे जा रहे हैं!

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۖ وَإِن يَقُولُوا تَسْمَعْ
لِقَوْلِهِمْ ۖ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ۖ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ
عَلَيْهِمْ ۚ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۚ قَاتَلَهُمُ اللَّهُ ۖ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ④

---

[1] आदरणीय ज़ैद पुत्र अर्क़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि एक युद्ध में मैं ने (मुनाफ़िक़ों के प्रमुख) अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य को कहते हुये सुना कि उन पर ख़र्च न करो जो अल्लाह के रसूल के पास हैं। यहाँ तक कि वह बिखर जायें आप के आस-पास से। और यदि हम मदीना वापिस गये तो हम सम्मानित उस से अपमानित (इस से अभिप्राय वह मुसलमानों को ले रहे थे।) को अवश्य निकाल देंगे। मैं ने अपने चाचा को यह बात बता दी। और उन्होंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बता दी। तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य को बुलाया। उस ने और उस के साथियों ने शपथ ले ली कि उन्होंने यह बात नहीं कही है। इस कारण आप ने मुझे (अर्थातः ज़ैद पुत्र अर्क़म) झूठा समझ लिया। जिस पर मुझे बड़ा शोक हुआ। और मैं घर में रहने लगा। फिर अल्लाह ने यह सूरह उतारी तो आप ने मुझे बुला कर सुनायी। और कहा कि हे ज़ैद! अल्लाह ने तुम्हें सच्चा सिद्ध कर दिया है। (सहीह बुख़ारीः **4900**)

[2] जो देखने में सुन्दर परन्तु निर्बोध होती हैं।

[3] अर्थात प्रत्येक समय उन्हें धड़का लगा रहता है कि उन के अपराध खुल न जायें।

5. जब उन से कहा जाता है कि आओ, ताकि क्षमा की प्रार्थना करें तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल, तो मोड़ लेते हैं अपने सिर। तथा आप उन्हें देखते हैं कि वह रुक जाते हैं अभिमान (घमंड) करते हुये।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا
رُءُوْسَهُمْ وَرَاَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ۝٥

6. हे नबी! उन के समीप समान है कि आप क्षमा की प्रार्थना करें उन के लिये अथवा क्षमा की प्रार्थना न करें उन के लिये। कदापि नहीं क्षमा करेगा अल्लाह उन को। वास्तव में अल्लाह सुपथ नहीं दिखाता है अवैज्ञाकारियों को।

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ لَنْ
يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٦

7. यही वे लोग हैं जो कहते हैं कि मत ख़र्च करो उन पर जो अल्लाह के रसूल के पास रहते हैं ताकि वह बिखर जायें। जब कि अल्लाह ही के अधिकार में है आकाशों तथा धरती के सभी कोष (ख़ज़ाने)। परन्तु मुनाफ़िक़ समझते नहीं हैं।

هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ
اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ؕ وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝٧

8. वे कहते हैं कि यदि हम वापिस पहुँच गये मदीना तक तो निकाल[1] देगा सम्मानित उस से अपमानित को। जब कि अल्लाह ही के लिये सम्मान है एवं उस के रसूल तथा ईमान वालों के लिये। परन्तु मुनाफ़िक़ जानते नहीं।

يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ
مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ
وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٨ ع

9. हे ईमान वालो! तुम्हें अचेत न करें तुम्हारे धन तथा तुम्हारी संतान अल्लाह के स्मरण (याद) से। और जो ऐसा करेंगे वही क्षति ग्रस्त हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ
عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ۝٩

---

[1] सम्मानितः मुनाफ़िक़ों के मुख्या अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य ने स्वयं को, तथा अपमानितः रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को कहा था।

10. तथा दान करो उस में से जो प्रदान किया है हम ने तुम को, इस से पूर्व कि आ जाये तुम में से किसी के मरण का[1] समय, तो कहे कि मेरे पालनहार! क्यों नहीं अवसर दे दिया मुझ को कुछ समय का। ताकि मैं दान करता तथा सदाचारियों में हो जाता।

وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ
الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَآ اَخَّرْتَنِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ
قَرِيْبٍ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ١٠

11. और कदापि अवसर नहीं देता अल्लाह किसी प्राणी को जब आ जाये उस का निर्धारित समय। और अल्लाह भली-भाँति सूचित है उस से जो कुछ तुम कर रहे हो।

وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا
وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ١١

---

[1] हदीस में है कि मनुष्य का वास्तविक धन वही है जिस को वह इस संसार में दान कर जाये। और जिसे वह छोड़ जाये तो वह उस का नहीं बल्कि उस के वारिस का धन है। (सहीह बुख़ारीः 6442)

सूरह तग़ाबुन - 64

سُورَةُ التَّغَابُنِ

सूरह तग़ाबुन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 18 आयतें हैं।

- इस का नाम इस की आयत 9 में ((तग़ाबुन)) शब्द से लिया गया है। इस में अल्लाह का परिचय देते हुये यह बताया गया है कि इस विश्व की रचना सत्य के साथ हुई है। तथा नबूवत और परलोक के इन्कार के परिणाम से सावधान किया गया है। और ईमान लाने का आदेश दे कर हानि के दिन से सतर्क किया गया है। और ईमान तथा इन्कार दोनों का अन्त बताया गया है।
- आयत 11 से 13 तक में समझाया गया है कि संसारिक जीवन के भय से अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा पालन से मूँह न फेरना अन्यथा इस का अन्त विनाश कारी होगा।
- इस की आयत 14 से 18 तक में ईमान वालों को अपनी पत्नियों और संतान की ओर से सावधान रहने का निर्देश दिया गया है कि वह उन्हें कुपथ न कर दें। और धन तथा संतान के मोह में परलोक से अचेत न हो जायें। और जितना हो सके अल्लाह से डरते रहें। और अल्लाह की राह में दान करते रहें।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَٰوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

1. अल्लाह की पवित्रता वर्णन करती है प्रत्येक चीज़ जो आकाशों में है तथा जो धरती में है। उसी का राज्य है, और उसी के लिये प्रशंसा है। तथा वह जो चाहे कर सकता है।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنكُمْ كَافِرٌ وَمِنكُم مُّؤْمِنٌ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ②

2. वही है जिस ने उत्पन्न किया है तुम को, तो तुम में से कुछ काफ़िर हैं, और तुम में से कोई ईमान वाला है। तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो

उसे देख रहा है।[1]

3. उस ने उत्पन्न किया आकाशों तथा धरती को सत्य के साथ, तथा रूप बनाया तुम्हारा तो सुन्दर बनाया तुम्हारा रूप, और उसी की ओर फिर कर जाना है।[2]

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ
صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝٣

4. वह जानता है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, और जानता है जो तुम मन में रखते हो और जो बोलते हो। तथा अल्लाह भली-भाँति अवगत है दिलों के भेदों से।

يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ
مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ۝٤

5. क्या नहीं आई तुम्हारे पास उन की सूचना जिन्होंने कुफ़्र किया इस से पूर्व? तो उन्होंने चख लिया अपने कर्म का दुष्परिणाम। और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।[3]

اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۫ فَذَاقُوْا
وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٥

6. यह इस लिये कि आते रहे उन के पास उन के रसूल खुली निशानियाँ ले कर। तो उन्होंने कहाः क्या कोई मनुष्य हमें मार्ग दर्शन[4] देगा? अतः उन्होंने कुफ़्र किया। तथा मुँह फेर लिया और अल्लाह (भी उन से) निश्चिन्त हो गया तथा अल्लाह निस्पृह प्रशंसित है।

ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ
فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۖ فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى
اللّٰهُ ۗ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝٦

---

1 देखने का अर्थ कर्मों के अनुसार बदला देना है।

2 अर्थात प्रलय के दिन कर्मों का प्रतिफल पाने के लिये।

3 अर्थात परलोक में नरक की यातना है।

4 अर्थात रसूल मनुष्य कैसे हो सकता है। यह कितनी विचित्र बात है कि पत्थर की मुर्तियों को तो पूज्य बना लिया जाये इसी प्रकार मनुष्य को अल्लाह का अवतार और पुत्र बना लिया जाये, पर यदि रसूल सत्य ले कर आये तो उसे न माना जाये। इस का अर्थ यह हुआ कि मनुष्य कुपथ करे तो यह मान्य है, और यदि वह सीधी राह दिखाये तो मान्य नहीं।

7. समझ रखा है काफ़िरों ने कि वह कदापि फिर जीवित नहीं किये जायेंगे। आप कह दें कि क्यों नहीं? मेरे पालनहार की शपथ! तुम अवश्य जीवित किये जाओगे। फिर तुम्हें बताया जायेगा कि तुम ने (संसार में) क्या किया है। तथा यह अल्लाह पर अति सरल है।

زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ لَنْ يُبْعَثُوا ۚ قُلْ
بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا
عَمِلْتُمْ ۚ وَذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ٧

8. अतः तुम ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल[1] पर। तथा उस नूर (ज्योति[2]) पर जिसे हम ने उतारा है। तथा अल्लाह उस से जो तुम करते हो भली-भाँति सूचित है।

فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي أَنْزَلْنَا ۚ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ٨

9. जिस दिन वह तुम को एकत्र करेगा एकत्र किये जाने वाले दिन। तो वह क्षति (हानि) के खुल जाने[3] का दिन होगा। और जो ईमान लाया अल्लाह पर तथा सदाचार करता है तो वह क्षमा कर देगा उस के दोषों को, और प्रवेश देगा उसे ऐसे स्वर्गों में बहती होंगी जिन में नहरें वह सदावासी होंगे उन में। यही बड़ी सफलता है।

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ۖ ذَٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۗ وَمَنْ
يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ
وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ٩

10. और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और झुठलाया हमारी आयतों (निशानियों) को तो वही नारकी हैं जो सदावासी होंगे उस (नरक) में। तथा वह बुरा ठिकाना है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ
خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ١٠

---

[1] इस से अभिप्राय अन्तिम रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।

[2] ज्योति से अभिप्राय अन्तिम ईश-वाणी क़ुर्आन है।

[3] अर्थात काफ़िरों के लिये, जिन्होंने अल्लाह की आज्ञा का पालन नहीं किया।

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ
بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ⑪

11. जो आपदा आती है वह अल्लाह ही की अनुमति से आती है। तथा जो अल्लाह पर ईमान[1] लाये तो वह मार्ग दर्शन देता[2] है उस के दिल को। तथा अल्लाह प्रत्येक चीज़ को जानता है।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ
فَاِنَّمَا عَلٰي رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ⑫

12. तथा आज्ञा का पालन करो अल्लाह की तथा आज्ञा का पालन करो उस के रसूल की। फिर यदि तुम विमुख हुये तो हमारे रसूल का दायित्व केवल खुले रूप से (उपदेश) पहुँचा देना है।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ وَعَلَي اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ⑬

13. अल्लाह वह है जिस के सिवा कोई वंदनीय (सच्चा पूज्य) नहीं है। अतः अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये ईमान वालों को।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ
عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا
وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑭

14. हे लोगो जो ईमान लाये हो! वास्तव में तुम्हारी कुछ पत्नियाँ तथा संतान तुम्हारी शत्रु[3] हैं। अतः उन से सावधान रहो। और यदि तुम क्षमा से काम लो तथा सुधार करो और क्षमा कर दो तो वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۭ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ

15. तुम्हारे धन तथा तुम्हारी संतान तो तुम्हारे लिये एक परीक्षा हैं।

---

[1] अर्थ यह है कि जो व्यक्ति आपदा को यह समझ कर सहन करता है कि अल्लाह ने यही उस के भाग्य में लिखा है।

[2] हदीस में है कि ईमान वाले की दशा विभिन्न होती है। और उस की दशा उत्तम ही होती है। जब उसे सुख मिले तो कृतज्ञ होता है। और दुख हो तो सहन करता है। और यह उस के लिये उत्तम है। (मुस्लिमः 2999)

[3] अर्थात जो तुम्हें सदाचार एवं अल्लाह के आज्ञापालन से रोकते हों, फिर भी उन का सुधार करने और क्षमा करने का निर्देश दिया गया है।

أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٥﴾

तथा अल्लाह के पास बड़ा प्रतिफल[1] (बदला) है।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوا وَأَطِيعُوا
وَأَنْفِقُوا خَيْرًا لِّأَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَنْ يُّوقَ شُحَّ نَفْسِهٖ
فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٦﴾

16. तो अल्लाह से डरते रहो जितना तुम से हो सके तथा सुनो और आज्ञा पालन करो और दान करो। यह उत्तम है तुम्हारे लिये। और जो बचा लिया गया अपने मन की कंजूसी से तो वही सफल होने वाले हैं।

إِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٧﴾

17. यदि तुम अल्लाह को उत्तम ऋण[2] दोगे तो वह तुम्हें कई गुना बढ़ा कर देगा, और क्षमा कर देगा तुम्हें। और अल्लाह बड़ा गुणग्राही सहनशील है।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾ ع

18. वह परोक्ष और हाज़िर का ज्ञान रखने वाला है। वह अति प्रभावी तथा गुणी है।

---

[1] भावार्थ यह है कि धन और संतान के मोह में अल्लाह की अवैज्ञा न करो।

[2] ऋण से अभिप्राय अल्लाह की राह में दान करना है।

सूरह तलाक़ - 65

سُوْرَةُ الطَّلَاقِ

सूरह तलाक़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 12 आयतें हैं।

- इस सूरह में तलाक़ के नियम और आदेश बताये गये हैं। और मुसलमानों को चेतावनी दी गई है कि अल्लाह के आदेशों से मुँह न फेरें। और अवैज्ञाकारी जातियों के परिणाम को याद रखें। दूसरे शब्दों में इस्लाम के परिवारिक नियमों का पालन करें।

- «इद्दत» उस निश्चित अवधि का नाम है जिस के भीतर स्त्री के लिये तलाक़ या पति की मौत के पश्चात् दूसरे से विवाह करना अवैध और वर्जित होता है। तलाक़ के मूल नियम सूरह बक़रा तथा सूरह अह़ज़ाब में वर्णित हुये हैं। इस आयत में त़लाक़ देने का समय बताया गया है कि तलाक़ ऐसे समय में दी जाये जब इद्दत का आरंभ हो सके। अर्थात मासिक धर्म की स्थिति में तलाक़ न दी जाये। और मासिक धर्म से पवित्र होने पर संभोग न किया गया हो तब त़लाक़ दी जाये। «इद्दत के समय» से अभिप्राय यहाँ यही है। फिर यदि «तलाक़ रजई» दी हो तो निर्धारित अवधि पूरी होने तक वह अपने पति के घर ही में रहेगी। परन्तु यदि व्यभिचार कर जाये तो उसे घर से निकाला जा सकता है। नई बात उत्पन्न करने का अर्थ यह है कि अवधि के भीतर पति अपनी पत्नी को वापिस कर ले जिसे «रज्अत» करना कहा जाता है। और यह बात «रजई तलाक़» में ही होती है। अर्थात जब एक या दो तलाक़ ही दी हों। इस में यह संकेत भी है कि यदि पति तीन तलाक़ दे चुका हो जिस के पश्चात् पति को रज्अत का अधिकार नहीं होता तो पत्नी को भी उस के घर में रहने का अधिकार नहीं रह जाता। और न पति पर इस अवधि में उस के खाने-कपड़े का भार होता है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. हे नबी! जब तुम लोग त़लाक़ दो अपनी पत्नियों को तो उन्हें तलाक़

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ

وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ
بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ
وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ
ظَلَمَ نَفْسَهٗ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ①

दो उन की «इद्दत» के लिये, और गणना करो «इद्दत» की। तथा डरो अपने पालनहार, अल्लाह से। और न निकालो उन को उन के घरों से, और न वह स्वयं निकलें परन्तु यह कि वह कोई खुली बुराई कर जायें। तथा यह अल्लाह की सीमायें हैं। और जो उल्लंघन करेगा अल्लाह की सीमाओं का तो उस ने अत्याचार कर लिया अपने ऊपर। तुम नहीं जानते संभवतः अल्लाह कोई नई बात उत्पन्न कर दे इस के पश्चात।

فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ
فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ
وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ
مَخْرَجًا ②

2. फिर जब पहुँचने लगें अपने निर्धारित अवधि को तो उन्हें रोक लो नियमानुसार अथवा अलग कर दो नियमानुसार।[1] और गवाह (साक्षी) बनालो[2] अपने में से दो न्यायकारियों को। तथा सीधी गवाही दो अल्लाह के[3] लिये। इस की शिक्षा दी जा रही है उसे जो ईमान रखता हो अल्लाह तथा अन्त-दिवस (प्रलय) पर। और जो कोई डरता हो अल्लाह से तो वह बना देगा उस के लिये कोई निकलने का उपाय।

وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ
فَهُوَ حَسْبُهٗ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ
شَيْءٍ قَدْرًا ③

3. और उस को जीविका प्रदान करेगा उस स्थान से जिस का उसे अनुमान (भी) न हो। तथा जो अल्लाह पर निर्भर रहेगा तो वही उसे पर्याप्त है। निश्चय अल्लाह अपना कार्य पूरा कर

---

[1] अर्थात तलाक़ तथा रज्अत पर।

[2] यदि एक या दो तलाक़ दी हो। (देखियेः सूरह बक़रा, आयतः 229)

[3] अर्थात निष्पक्ष हो कर।

के रहेगा।[1] अल्लाह ने प्रत्येक वस्तु के लिये एक अनुमान (समय) नियत कर रखा है।

4. तथा जो निराश[2] हो जाती हैं मासिक धर्म से तुम्हारी स्त्रियों में से यदि तुम्हें संदेह हो तो उन की निर्धारित अवधि तीन मास है। तथा उन की जिन्हें मासिक धर्म न आता हो। और गर्भवती स्त्रियों की निर्धारित अवधि यह है कि प्रसव हो जाये। तथा जो अल्लाह से डरेगा वह उस के लिये उस का कार्य सरल कर देगा।

وَالّٰٓـِٔيْ يَىِٕسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآىِٕكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ
فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ۗ وَاُولَاتُ
الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۗ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ
يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ۝٤

5. यह अल्लाह का आदेश है जिसे उतारा है तुम्हारी ओर, अतः जो अल्लाह से डरेगा[3] वह क्षमा कर देगा उस से उस के दोषों को तथा प्रदान करेगा उसे बड़ा प्रतिफल।

ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗٓ اِلَيْكُمْ ۗ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ
سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗٓ اَجْرًا ۝٥

6. और उन को (निर्धारित अवधि में)

اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ

---

[1] अर्थात जो दुख़ तथा सुख भाग्य में अल्लाह ने लिखा है वह अपने समय में अवश्य पूरा होगा।

[2] निश्चित अवधि से अभिप्राय वह अवधि है जिस के भीतर कोई स्त्री तलाक़ पाने के पश्चात् दूसरा विवाह नहीं कर सकती। और यह अवधि उस स्त्री के लिये जिसे दीर्धायु अथवा अल्पायु होने के कारण मासिक धर्म न आये तीन मास तथा गर्भवती के लिये प्रसव है। और मासिक धर्म आने की स्थिति में तीन मासिक धर्म पूरा होना है।
हदीस में है कि सुबैआ असलमिय्या (रज़ियल्लाहु अन्हा) के पति मारे गये तो वह गर्भवती थी। फिर चालीस दिन बाद उस ने शिशु जन्म दिया। और जब उस की मंगनी हुई तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उसे विवाह दिया। (सहीह बुख़ारीः 4909)
पति की मौत पर चार महीना दस दिन की अवधि उस के लिये है जो गर्भवती न हो। (देखियेः सूरह बक़रा, आयतः 226)

[3] अर्थात उस के आदेश का पालन करेगा।

وَلَا تُضَآرُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ ۚ وَإِن كُنَّ أُولَٰتِ حَمْلٍ
فَأَنفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّىٰ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ
فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۖ وَأْتَمِرُوا بَيْنَكُم بِمَعْرُوفٍ ۖ وَإِن
تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهُۥٓ أُخْرَىٰ ٦

रखो जहाँ तुम रहते हो अपनी शक्ति अनुसार। और उन्हें हानि न पहुँचाओ उन्हें तंग करने के लिये। और यदि वह गर्भवती हों तो उन पर ख़र्च करो यहाँ तक की प्रसव हो जाये। फिर यदि दूध पिलायें तुम्हारे (शिशु) लिये तो उन्हें उन का परिश्रामिक दो। और विचार-विमर्श कर लो आपस में उचित रूप[1] से। और यदि तुम दोनों में तनाव हो जाये तो दूध पिलायेगी उस को कोई दूसरी स्त्री।

لِيُنفِقْ ذُو سَعَةٍ مِّن سَعَتِهِۦ ۖ وَمَن قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُۥ
فَلْيُنفِقْ مِمَّآ آتَاهُ ٱللَّهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ ٱللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَآ آتَاهَا ۚ
سَيَجْعَلُ ٱللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ٧

7. चाहिये की सम्पन्न (सुखी) ख़र्च दे अपनी कमाई के अनुसार, और तंग हो जिस पर उस की जीविका तो चाहिये कि ख़र्च दे उस में से जो दिया है उस को अल्लाह ने। अल्लाह भार नहीं रखता किसी प्राणी पर परन्तु उतना ही जो उसे दिया है। शीघ्र ही कर देगा अल्लाह तंगी के पश्चात् सुविधा।

وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِۦ فَحَاسَبْنَٰهَا
حِسَابًا شَدِيدًا وَعَذَّبْنَٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ٨

8. कितनी बस्तियाँ[2] थीं जिन के वासियों ने अवैज्ञा की अपने पालनहार और उस के रसूलों के आदेश की, तो हम ने हिसाब ले लिया उन का कड़ा हिसाब, और उन्हें यातना दी बुरी यातना।

فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَٰقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ٩

9. तो उस ने चख लिया अपने कर्म का दुष्परिणाम और उन का कार्य-परिणाम विनाश ही रहा।

أَعَدَّ ٱللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ فَٱتَّقُوا ٱللَّهَ يَٰٓأُولِى

10. तय्यार कर रखी है अल्लाह ने उन

---

[1] अर्थात परिश्रामिक के विषय में।

[2] यहाँ से अल्लाह की अवैज्ञा के दुष्परिणाम से सावधान किया जा रहा है।

الْاَلْبَابِ ۚۛ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚۛ قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۙ﴿١٠﴾

के लिये भीषण यातना। अतः अल्लाह से डरो, हे समझ वालो, जो ईमान लाये हो! निःसंदेह अल्लाह ने उतार दी है तुम्हारी ओर एक शिक्षा।

رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَمَنْ
يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ
لَهٗ رِزْقًا ﴿١١﴾

11. (अर्थात) एक रसूल[1] जो पढ़ कर सुनाते हैं तुम को अल्लाह की खुली आयतें ताकि वह निकाले उन को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये अन्धकारों से प्रकाश की ओर। और जो ईमान लाये तथा सदाचार करेगा वह उसे प्रवेश देगा ऐसे स्वर्गों में प्रवाहित हैं जिन में नहरें, वह सदावासी होंगे उन में। अल्लाह ने उस के लिये उत्तम जीविका तैयार कर रखी है।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ؕ
يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۧ ﴿١٢﴾

12. अल्लाह वह है जिस ने उत्पन्न किये सात आकाश तथा धरती में से उन्हीं के समान। वह उतारता है आदेश उन के बीच, ताकि तुम विश्वास करो कि अल्लाह जो कुछ चाहे कर सकता है। और यह की अल्लाह ने घेर रखा है प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान की पतिधि में।

---

1 अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को। अंधकारों से अभिप्रायः कुफ़्र, तथा प्रकाश से अभिप्रायः ईमान है।

सूरह तह़रीम - 66

سُورَةُ التَّحْرِيمِ

सूरह तह़रीम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 12 आयतें हैं।

- इस का नाम इस की प्रथम आयत से लिया गया है। जिस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की एक चूक पर सावधान किया गया है। जो आप से आप की अपनी पत्नियों से प्रेम के कारण हुई। और आप की पत्नियों की भी पकड़ की गई है। और उन्हें अपना सुधार करने की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- इस की आयत 6 से 8 तक में ईमान वालों को अपनी पत्नियों का सुधार करने से निश्चिन्त न होने और अपना दायित्व निभाने का निर्देश दिया गया है कि उन्हें प्रलोक के दण्ड से बचाने के लिये भरपूर प्रयास करें।
- आयत 9 में काफ़िरों तथा मुनाफ़िक़ों से जिहाद करने का आदेश दिया गया है। जो सदा आप के तथा मुसलमान स्त्रियों के बारे में कोई न कोई उपद्रव मचाते थे।
- आयत 10 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की दो पत्नियों को चेतावनी दी गई है। और अन्त में दो सदाचारी स्त्रियों का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ①

1. हे नबी! क्यों हराम (अवैध) करते हैं उसे जो हलाल (वैध) किया है अल्लाह ने आप के लिये? आप अपनी पत्नियों की प्रसन्नता[1] चाहते हैं? तथा अल्लाह

---

1 हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अस्र की नमाज़ के पश्चात् अपनी सब पत्नियों के यहाँ कुछ देर के लिये जाया करते थे। एक बार कई दिन अपनी पत्नी ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) के यहाँ अधिक देर तक रह गये। कारण यह था कि वह आप को मधु पिलाती थीं। आप की पत्नी आईशा तथा

अति क्षमी दयावान् है।

2. नियम बना दिया है अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी शपथों से निकलने[1] का। तथा अल्लाह संरक्षक है तुम्हारा, और वही सर्व ज्ञानी गुणी है।

قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْۚ وَاللّٰهُ
مَوْلٰىكُمْۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝٢

3. और जब नबी ने अपनी कुछ पत्नियों से एक[2] बात कही, तो उस ने उसे बता दिया, और अल्लाह ने उसे खोल दिया नबी पर, तो नबी ने कुछ से सूचित किया और कुछ को छोड़ दिया। फिर जब सूचित किया आप ने पत्नी को उस से तो उस ने कहाः किस ने सूचित किया आप को इस बात से? आप ने कहाः मुझे सूचित किया है सब जानने और सब से सूचित रहने वाले ने।

وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًاۚ فَلَمَّا
نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ
وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ
اَنْۢبَاَكَ هٰذَاۗ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝٣

4. यदि तुम[3] दोनों (हे नबी की पत्नियो!) क्षमा माँग लो अल्लाह से (तो तुम्हारे लिये उत्तम है), क्योंकि तुम दोनों के दिल कुछ झुक गये हैं। और यदि तुम दोनों एक-दूसरे की

اِنْ تَتُوْبَآ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَاۚ وَاِنْ
تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ
وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَۚ وَالْمَلٰۤىِٕكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ۝٤

हफ़्सा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने योजना बनाई कि जब आप आयें तो जिस के पास जायें वह यह कहे कि आप के मुँह से मग़ाफ़ीर (एक दुर्गंधित फूल) की गन्ध आ रही है। और उन्होंने यही किया। जिस पर आप ने शपथ ले ली कि अब मधु नहीं पीऊँगा। उसी पर यह आयत उतरी। (बुख़ारीः 4912) इस में यह संकेत भी है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को भी किसी हलाल को हराम करने अथवा हराम को हलाल करने का कोई अधिकार नहीं था।

[1] अर्थात प्रयाश्चित दे कर उस को करने का जिस के न करने की शपथ ली हो। शपथ के प्रयाश्चित (कफ़्फ़ारा) के लिये देखियेः माइदा, आयतः 81।

[2] अर्थात मधु न पीने की बात।

[3] दोनों से अभिप्रायः आदरणीय आईशा तथा आदरणीय हफ़्सा हैं।

सहायता करोगी आप के विरुद्ध तो निःसंदेह अल्लाह आप का सहायक है तथा जिब्रील और सदाचारी ईमान वाले और फ़रिश्ते (भी) इन के अतिरिक्त सहायक हैं।

5. कुछ दूर नहीं कि आप का पालनहार यदि आप तलाक़ दे दें तुम सभी को तो बदले में दे आप को पत्नियाँ तुम से उत्तम, इस्लाम वालियाँ, इबादत करने वालियाँ, आज्ञा पालन करने वालियाँ, क्षमा माँगने वालियाँ, व्रत रखने वालियाँ, विधवायें तथा कुमारियाँ।

عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا
خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ
عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ۝٥

6. हे लोगो जो ईमान लाये हो! बचाओ[1] अपने आप को तथा अपने परिजनों को उस अग्नि से जिस का ईंधन मनुष्य तथा पत्थर होंगे। जिस पर फ़रिश्ते नियुक्त हैं कड़े दिल, कड़े स्वभाव वाले। वह अवैज्ञा नहीं करते अल्लाह के आदेश की तथा वही करते हैं जिस का आदेश उन्हें दिया जाये।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا
وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ
شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ
وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝٦

7. हे काफ़िरो! बहाना न बनाओ आज, तुम्हें उसी का बदला दिया जा रहा है जो तुम करते रहे।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ؕ اِنَّمَا
تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٧

8. हे ईमान वालो! अल्लाह के आगे

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ؕ

---

[1] अर्थात तुम्हारा कर्तव्य है कि अपने परिजनों को इस्लाम की शिक्षा दो ताकि वह इस्लामी जीवन व्यतीत करें। और नरक का ईंधन बनने से बच जायें। हदीस में है कि जब बच्चा सात वर्ष का हो जाये तो उसे नमाज़ पढ़ने का आदेश दो। और जब दस वर्ष का हो जाये तो उसे नमाज़ के लिये (यदि ज़रूरत पड़े तो) मारो। (तिर्मिज़ी- 407)
पत्थर से अभिप्राय वह मुर्तियाँ हैं जिन्हें देवता और पूज्य बनाया गया था।

सच्ची[1] तौबा करो। संभव है कि तुम्हारा पालनहार दूर कर दे तुम्हारी बुराईयाँ तुम से, तथा प्रवेश करा दे तुम्हें ऐसे स्वर्गों में बहती हैं जिन में नहरें। जिस दिन वह अपमानित नहीं करेगा नबी को और न उन को जो ईमान लाये हैं उन के साथ। उन का प्रकाश[2] दौड़ रहा होगा उन के आगे तथा उन के दायें, वह प्रार्थना कर रहे होंगेः हे हमारे पालनहार! पूर्ण कर दे हमारे लिये हमारे प्रकाश को, तथा क्षमा कर दे हम को। वास्तव में तू जो चाहे कर सकता है।

عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللّٰهُ
النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ
وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ
اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٨

9. हे नबी! आप जिहाद करें काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से और उन पर कड़ाई करें।[3] उन का स्थान नरक है और वह बुरा स्थान है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ
عَلَيْهِمْ ۗ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۗ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٩

10. अल्लाह ने उदाहरण दिया है उन के लिये जो काफ़िर हो गये नूह की पत्नी तथा लूत की पत्नी का। जो दोनों विवाह में थीं दो भक्तों के हमारे सदाचारी भक्तों में से। फिर दोनों ने विश्वासघात[4] किया उन से।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ
وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ۗ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا
صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ
شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝١٠

---

[1] सच्ची तौबा का अर्थ यह है कि पाप को त्याग दे। और उस पर लज्जित हो तथा भविष्य में पाप न करने का संकल्प ले। और यदि किसी का कुछ लिया है तो उसे भरे और अत्याचार किया है तो क्षमा माँग ले।

[2] देखियेः सूरह हदीद, आयतः 12)।

[3] अर्थात जो काफ़िर इस्लाम के प्रचार से रोकते हैं, और जो मुनाफ़िक़ उपद्रव फैलाते हैं उन से कड़ा संघर्ष करें।

[4] विश्वासघात का अर्थ यह है कि आदरणीय नूह (अलैहिस्सलाम) की पत्नी ने ईमान तथा धर्म में उन का साथ नहीं दिया। आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह के यहाँ कर्म काम आयेगा। सम्बंध नहीं काम नहीं आयेंगे।

तो दोनों उन के, अल्लाह के यहाँ कुछ काम नहीं आये। तथा (दोनों स्त्रियों से) कहा गया कि प्रवेश कर जाओ नरक में प्रवेश करने वालों के साथ।

وَضَرَبَ ٱللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱمْرَأَتَ فِرْعَوْنَ
إِذْ قَالَتْ رَبِّ ٱبْنِ لِى عِندَكَ بَيْتًا فِى ٱلْجَنَّةِ وَنَجِّنِى مِن
فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِۦ وَنَجِّنِى مِنَ ٱلْقَوْمِ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿١١﴾

11. तथा उदाहरण[1] दिया है अल्लाह ने उन के लिये जो ईमान लाये फ़िरऔन की पत्नी का। जब उस ने प्रार्थना कीः हे मेरे पालनहार! बना दे मेरे लिये अपने पास एक घर स्वर्ग में, तथा मुझे मुक्त कर दे फ़िरऔन तथा उस के कर्म से, और मुझे मुक्त कर दे अत्याचारी जाति से।

وَمَرْيَمَ ٱبْنَتَ عِمْرَٰنَ ٱلَّتِىٓ أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا
فَنَفَخْنَا فِيهِ مِن رُّوحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمَٰتِ رَبِّهَا
وَكُتُبِهِۦ وَكَانَتْ مِنَ ٱلْقَٰنِتِينَ ﴿١٢﴾

12. तथा मर्यम, इम्रान की पुत्री का, जिस ने रक्षा की अपने सतीत्व की, तो फूँक दी हम ने उस में अपनी ओर से रूह (आत्मा)। तथा उस (मर्यम) ने सच्च माना अपने पालनहार की बातों और उस की पुस्तकों को। और वह इबादत करने वालों में से थी।

---

[1] हदीस में है कि पुरुषों में से बहुत पूर्ण हुये। पर स्त्रियों में इमरान की पुत्री मर्यम और फ़िरऔन की पत्नी आसिया ही पूर्ण हुईं। और आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की प्रधानता नारियों पर वही है जो सरीद (एक प्रकार का खाना) की सब खानों पर है। (सहीह बुख़ारीः 3411, सहीह मुस्लिमः 2431)

सूरह मुल्क - 67

سُورَةُ المُلْك

सूरह मुल्क के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 30 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ ही में अल्लाह के मुल्क (राज्य) की चर्चा की गई है। जिस से यह नाम लिया गया है।
- इस में मरण तथा जीवन का उद्देश्य बताते हुये आकाश तथा धरती की व्यवस्था पर विचार करने का आमंत्रण दिया गया है जिस से विश्व विधाता का ज्ञान होता है। और यह बात भी उजागर होती है कि मनुष्य का यह जीवन परीक्षा का जीवन है। और इस कुर्आन की बताई हुई बातों के इन्कार का दुष्परिणाम बताया गया है।
- आयत 13,14 में उन का शुभपरिणाम बताया गया है जो अपने पालनहार से डरते रहते हैं। जो प्रत्येक खुली और छुपी बात को जानता है और उस से कोई बात छुपी नहीं रह सकती।
- अन्त में मनुष्य को सोच-विचार का आमंत्रण देते हुये उसे अचेतना से चौंकाने का सामान किया गया है। यदि मनुष्य आँखें खोल कर इस विश्व को देखे तो कुर्आन का सच्च उजागर हो जायेगा। और वह अपने जीवन के लक्ष्य को समझ जायेगा। हदीस में है कि कुर्आन में तीस आयतों की एक सूरह है जिस ने एक व्यक्ति के लिये सिफ़ारिश की यहाँ तक कि उसे क्षमा कर दिया गया। (सुनन अबू दाऊदः 1400, हाकिम 1|565)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. शुभ है वह अल्लाह जिस के हाथ में राज्य है। तथा वह जो कुछ चाहे कर सकता है।

تَبٰرَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرُ ۝١

2. जिस ने उत्पन्न किया है मृत्यु तथा जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा

الَّذِىْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ

أَحۡسَنُ عَمَلًاؕ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡغَفُوۡرُۙ (٢)

ले कि तुम में किस का कर्म अधिक अच्छा है? तथा वह प्रभुत्वशाली अति क्षमावान् है।[1]

الَّذِىۡ خَلَقَ سَبۡعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ مَا تَرٰى فِىۡ خَلۡقِ الرَّحۡمٰنِ مِنۡ تَفٰوُتٍ ؕ فَارۡجِعِ الۡبَصَرَۙ هَلۡ تَرٰى مِنۡ فُطُوۡرٍ (٣)

3. जिस ने उत्पन्न किये सात आकाश ऊपर तले। तो क्या तुम देखते हो अत्यंत कृपाशील की उत्पत्ति में कोई असंगति? फिर पुनः देखो, क्या तुम देखते हो कोई दराड़?

ثُمَّ ارۡجِعِ الۡبَصَرَ كَرَّتَيۡنِ يَنۡقَلِبۡ اِلَيۡكَ الۡبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيۡرٌ (٤)

4. फिर बार-बार देखो, वापिस आयेगी तुम्हारी ओर निगाह थक-हार कर।

وَلَقَدۡ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنۡيَا بِمَصَابِيۡحَ وَجَعَلۡنٰهَا رُجُوۡمًا لِّلشَّيٰطِيۡنِ وَاَعۡتَدۡنَا لَهُمۡ عَذَابَ السَّعِيۡرِ (٥)

5. और हम ने सजाया है संसार के आकाशों को प्रदीपों (ग्रहों) से। तथा बनाया है उन्हें (तारों को) मार भगाने का साधन शैतानों[2] को, और तय्यार की है हम ने उन के लिये दहकती अग्नि की यातना।

وَلِلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا بِرَبِّهِمۡ عَذَابُ جَهَنَّمَ ؕ وَبِئۡسَ الۡمَصِيۡرُ (٦)

6. और जिन्होंने कुफ़्र किया अपने पालनहार के साथ तो उनके लिये नरक की यातना है। और वह बुरा स्थान है।

اِذَاۤ اُلۡقُوۡا فِيۡهَا سَمِعُوۡا لَهَا شَهِيۡقًا وَّهِىَ تَفُوۡرُۙ (٧)

7. जब वह फेंके जायेंगे उस में तो सुनेंगे उस की दहाड़ और वह खौल रही होगी।

تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الۡغَيۡظِ ؕ كُلَّمَاۤ اُلۡقِىَ فِيۡهَا فَوۡجٌ سَاَلَهُمۡ خَزَنَتُهَاۤ اَلَمۡ يَاۡتِكُمۡ نَذِيۡرٌ (٨)

8. प्रतीत होगा की फट पड़ेगी रोष (क्रोध) से, जब-जब फेंका जायेगा उस में कोई समूह तो प्रश्न करेंगे उन से उस के प्रहरीः क्या नहीं आया तुम्हारे पास कोई सावधान करने वाला (रसूल)?

---

[1] इस में आज्ञा पालन की प्रेरणा तथा अवैज्ञा पर चेतावनी है।

[2] जो चोरी से आकाश की बातें सुनते हैं। (देखियेः सूरह साफ़्फ़ात आयतः 7,10)

9. वह कहेंगेः हाँ हमारे पास आया सावधान करने वाला। पर हम ने झुठला दिया, और कहा कि नहीं उतारा है अल्लाह ने कुछ। तुम ही बड़े कुपथ में हो।

قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ
اللَّهُ مِن شَيْءٍ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ٩

10. तथा वह कहेंगेः यदि हम ने सुना और समझा होता तो नरक के वासियों में न होते।

وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ
السَّعِيرِ ١٠

11. ऐसे वह स्वीकार कर लेंगे अपने पापों को। तो दूरी[1] है नरक वासियों के लिये।

فَاعْتَرَفُوا بِذَنبِهِمْ فَسُحْقًا لِّأَصْحَابِ السَّعِيرِ ١١

12. निःसंदेह जो डरते हों अपने पालनहार से बिन देखे उन्हीं के लिये क्षमा है तथा बड़ा प्रतिफल है।[2]

إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ
وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ١٢

13. तुम चुपके बोलो अपनी बात अथवा ऊँचे स्वर में। वास्तव में वह भली-भाँति जानता है सीनों के भेदों को।

وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ
الصُّدُورِ ١٣

14. क्या वह नहीं जानेगा जिस ने उत्पन्न किया? और वह सूक्ष्मदर्शक[3] सर्व सूचित है?

أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ١٤

15. वही है जिस ने बनाया है तुम्हारे लिये धरती को वशवर्ती, तो चलो फिरो उस के क्षेत्रों में तथा खाओ उस की प्रदान की हुई जीविका। और उसी की ओर तुम्हें फिर जीवित हो कर जाना है।

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُولًا فَامْشُوا
فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِن رِّزْقِهِ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ١٥

---

[1] अर्थात अल्लाह की दया से।

[2] हदीस में है कि मैं ने अपने सदाचारी भक्तों के लिये ऐसी चीज़ तय्यार की है जिसे न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी दिल ने सोचा। (सहीह बुख़ारीः 3244, सहीह मुस्लिमः 2824)

[3] बारीक बातों को जानने वाला।

16. क्या तुम निर्भय हो गये हो उस से जो आकाश में है कि वह धँसा दे धरती में फिर वह अचानक काँपने लगे।

ءَأَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ أَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ
الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُوْرُ ⑯

17. अथवा निर्भय हो गये उस से जो आकाश में है कि वह भेज दे तुम पर पथरीली वायु तो तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कैसा रहा मेरा सावधान करना?

أَمْ أَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ أَنْ يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ
حَاصِبًا فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ⑰

18. झुठला चुके हैं इन[1] से पूर्व के लोग तो कैसी रही मेरी पकड़?

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ
نَكِيْرِ ⑱

19. क्या उन्होंने नहीं देखा पक्षियों की ओर अपने ऊपर पँख फैलाते तथा सिकोड़ते। उन को अत्यंत कृपाशील ही थामता है। निःसंदेह वह प्रत्येक वस्तु को देख रहा है।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ
مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمٰنُ إِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيْرٌ ⑲

20. कौन है वह तुम्हारी सेना जो तुम्हारी सहायता कर सकेगी अल्लाह के मुक़ाबले में? काफ़िर तो बस धोखे ही में हैं।

أَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ
دُوْنِ الرَّحْمٰنِ إِنِ الْكٰفِرُوْنَ إِلَّا فِيْ غُرُوْرٍ ⑳

21. या कौन है जो तुम्हें जीविका प्रदान कर सके यदि रोक ले वह अपनी जीविका? बल्कि वह घुस गये हैं अवैज्ञा तथा घृणा में।[2]

أَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ
رِزْقَهٗ بَلْ لَّجُّوْا فِيْ عُتُوٍّ وَّنُفُوْرٍ ㉑

22. तो क्या जो चल रहा हो औंधा हो कर अपने मुँह के बल वह अधिक मार्गदर्शन पर है या जो सीधा हो कर चल रहा हो सीधी राह पर?[3]

أَفَمَنْ يَّمْشِيْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖٓ أَهْدٰٓى
أَمَّنْ يَّمْشِيْ سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ㉒

---

1 अर्थात मक्का वासियों से पहले आद, समूद आदि जातियों ने। तो लूत (अलैहिस्सलाम) की जाति पर पत्थरों की वर्षा हुई।

2 अर्थात सत्य से घृणा में।

3 इस में काफ़िर तथा ईमानधारी का उदाहरण है। और दोनों के जीवन- लक्ष्य को बताया गया है कि काफ़िर सदा मायामोह में रहते हैं।

23. हे नबी! आप कह दें कि वही है जिस ने पैदा किया है तुम्हें और बनाये हैं तुम्हारे कान तथा आँख और दिल। बहुत ही कम आभारी (कृतज्ञ) होते हो।	قُلْ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۗ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٣﴾
24. आप कह दें: उसी ने फैलाया है तुम्हें धरती में और उसी की ओर एकत्रित[1] किये जाओगे।	قُلْ هُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾
25. तथा वह कहते हैं कि यह वचन कब पूरा होगा यदि तुम सच्चे हो?	وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾
26. आप कह दें: उस का ज्ञान बस अल्लाह ही को है। और मैं केवल खुला सावधान करने वाला हूँ।	قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۖ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٦﴾
27. फिर जब वह देखेंगे उसे समीप, तो बिगड़ जायेंगे उन के चेहरे जो काफ़िर हो गये। तथा कहा जायेगा: यह वही है जिस की तुम माँग कर रहे थे।	فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿٢٧﴾
28. आप कह दें: देखो यदि अल्लाह नाश कर दे मुझ को तथा मेरे साथियों को अथवा दया करे हम पर, तो (बताओ कि) कौन है जो शरण देगा काफ़िरों को दुःखदायी[2] यातना से?	قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِيَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾
29. आप कह दें: वह अत्यंत कृपाशील है। हम उस पर ईमान लाये तथा उसी पर भरोसा किया, तो तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कौन खुले कुपथ में है।	قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٩﴾

---

[1] प्रलय के दिन अपने कर्मों के लेख-जोखा तथा प्रतिकार के लिये।

[2] अर्थात तुम हमारा बुरा तो चाहते हो परन्तु अपनी चिन्ता नहीं करते।

قُلۡ أَرَءَيۡتُمۡ إِنۡ أَصۡبَحَ مَآؤُكُمۡ غَوۡرٗا فَمَن
يَأۡتِيكُم بِمَآءٖ مَّعِينِۭ ٣٠

30. आप कह दें: भला देखो यदि तुम्हारा
पानी गहराई में चला जाये, तो कौन है
जो तुम्हें ला कर देगा बहता हुआ जल?

सूरह क़लम - 68

سُورَةُ القَلَمِ

सूरह क़लम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 52 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ ही में क़लम शब्द आया है। जिस से यह नाम लिया गया है। और इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बारे में बताया गया है कि आप का चरित्र क्या है। और जो आप के विरोधी आप को पागल कहते हैं वह कितने पतित (गिरे हुये) हैं।
- इस में शिक्षा के लिये एक बाग़ के स्वामियों का उदाहरण दिया गया है। जिन्होंने अल्लाह के कृतज्ञ न होने के कारण अपने बाग़ के फल खो दिये। फिर आज्ञाकारियों को स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है। और विरोधियों के इस विचार का खण्डन किया गया है कि आज्ञाकारी और अपराधी बराबर हो जायेंगे।
- इस में बताया गया है कि आज जो अल्लाह को सज्दा करने से इन्कार करते हैं वह परलोक में भी उसे सज्दा नहीं कर सकेंगे।
- आयत 48 से 50 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को काफ़िरों के विरोध पर सहन करने के निर्देश दिये गये हैं।
- अन्त में बताया गया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह की बात बता रहे हैं, जो सब मनुष्यों के लिये सर्वथा शिक्षा है, आप पागल नहीं हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ۝١

1. नून। और शपथ है लेखनी (क़लम) की तथा उस[1] की जिसे वह लिखते हैं।

---

1 अर्थात क़ुर्आन की। जिसे उतरने के साथ ही नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) लेखको से लिखवाते थे। जैसे ही कोई सूरह या आयत उतरती लेखक क़लम तथा चमड़ों और झिल्लियों के साथ उपस्थित हो जाते थे, ताकि पूरे संसार के मनुष्यों

2. नहीं हैं आप अपने पालनहार के अनुग्रह से पागल।	مَآ أَنتَ بِنِعۡمَةِ رَبِّكَ بِمَجۡنُونٖ ٢
3. तथा निश्चय प्रतिफल (बदला) है आप के लिये अनन्त।	وَإِنَّ لَكَ لَأَجۡرًا غَيۡرَ مَمۡنُونٖ ٣
4. तथा निश्चय ही आप बड़े सुशील हैं।	وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٖ ٤
5. तो शीघ्र आप देख लेंगे, तथा वह (काफ़िर भी) देख लेंगे।	فَسَتُبۡصِرُ وَيُبۡصِرُونَ ٥
6. कि पागल कौन है।	بِأَييِّكُمُ ٱلۡمَفۡتُونُ ٦
7. वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है उसे जो कुपथ हो गया उस की राह से। और वही अधिक जानता है उन्हें जो सीधी राह पर हैं।	إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعۡلَمُ بِمَن ضَلَّ عَن سَبِيلِهِۦ وَهُوَ أَعۡلَمُ بِٱلۡمُهۡتَدِينَ ٧
8. तो आप बात न मानें झुठलाने वालों की।	فَلَا تُطِعِ ٱلۡمُكَذِّبِينَ ٨
9. वह चाहते हैं कि आप ढीले हो जायें तो वह भी ढीले हो[1] जायें।	وَدُّواْ لَوۡ تُدۡهِنُ فَيُدۡهِنُونَ ٩
10. और बात न मानें[2] आप किसी अधिक	وَلَا تُطِعۡ كُلَّ حَلَّافٖ مَّهِينٍ ١٠

को कुर्आन अपने वास्तविक रूप में पहुँच सके। और सदा के लिये सुरक्षित हो जाये। क्योंकि अब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पश्चात् कोई नबी और कोई पुस्तक नहीं आयेगी। और प्रलय तक के लिये अब पूरे संसार के नबी आप ही हैं। और उन के मार्ग दर्शन के लिये कुर्आन ही एकमात्र धर्म पुस्तक है। इसीलिये इसे सुरक्षित कर दिया गया है। और यह विशेषता किसी भी आकाशीय ग्रन्थ को प्राप्त नहीं है। इसलिये अब मोक्ष के लिये अन्तिम नबी तथा अन्तिम धर्म ग्रन्थ कुर्आन पर ईमान लाना अनिवार्य है।

[1] जब काफ़िर, इस्लाम के प्रभाव को रोकने में असफल हो गये तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धमकी और लालच देने के पश्चात्, कुछ लो और कुछ दो की नीति पर आ गये। इसलिये कहा गया कि आप उन की बातों में न आयें। और परिणाम की प्रतीक्षा करें।

[2] इन आयतों में किसी विशेष काफ़िर की दशा का वर्णन नहीं बल्कि काफ़िरों के

शपथ लेने वाले हीन व्यक्ति की।

11. जो व्यंग करने वाला, चुगलियाँ खाता फिरता है।

12. भलाई से रोकने वाला, अत्याचारी, बड़ा पापी है।

13. घमंडी है और इस के पश्चात् कुवंश (वर्णन संकर) है।

14. इस लिये कि वह धन तथा पुत्रों वाला है।

15. जब पढ़ी जाती हैं उस पर हमारी आयतें तो कहता हैः यह पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।

16. शीघ्र ही हम दाग़ लगा देंगे उस के सूंड[1] पर।

17. निःसंदेह हम ने उन को परीक्षा में डाला[2] है जिस प्रकार बाग़ वालों को परीक्षा में डाला था। जब उन्होंने शपथ ली कि अवश्य तोड़ लेंगे उस के फल भोर होते ही।

18. और इन्शा अल्लाह (यदि अल्लाह ने

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِيمٍ ۝١١

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ۝١٢

عُتُلٍّ بَعْدَ ذَٰلِكَ زَنِيمٍ ۝١٣

أَن كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ۝١٤

إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ءَايَٰتُنَا قَالَ أَسَٰطِيرُ ٱلْأَوَّلِينَ ۝١٥

سَنَسِمُهُۥ عَلَى ٱلْخُرْطُومِ ۝١٦

إِنَّا بَلَوْنَٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ أَصْحَٰبَ ٱلْجَنَّةِ
إِذْ أَقْسَمُوا۟ لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ۝١٧

وَلَا يَسْتَثْنُونَ ۝١٨

प्रमुखों के नैतिक पतन तथा कुविचारों और दूराचारों को बताया गया है जो लोगों को इस्लाम के विरोध उकसा रहे थे। तो फिर क्या इन की बात मानी जा सकती है?

1 अर्थात नाक पर जिसे वह घमंड से ऊँची रखना चाहता है। और दाग़ लगाने का अर्थ अपमानित करना है।

2 अर्थात मक्का वालों को। इसलिये यदि वह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ईमान लायेंगे तो उन पर सफलता की राह खुलेगी। अन्यथा संसार और परलोक दोनों की यातना के भागी होंगे।

चाहा) नहीं कहा।	
19. तो फिर गया उस (बाग़) पर एक कुचक्र आप के पालनहार की ओर से, और वह सोये हुये थे।	فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ (١٩)
20. तो वह हो गया जैसे उजाड़ खेती हो।	فَاَصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ ۙ (٢٠)
21. अब वे एक-दूसरे को पुकारने लगे भोर होते हीः	فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ ۙ (٢١)
22. कि तड़के चलो अपनी खेती पर यदि फल तोड़ने हैं।	اَنِ اغْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِيْنَ (٢٢)
23. फिर वह चल दिये आपस में चुपके-चुपके बातें करते हूये।	فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَافَتُوْنَ ۙ (٢٣)
24. कि कदापि न आने पाये उस (बाग़) के भीतर आज तुम्हारे पास कोई निर्धन।[1]	اَنْ لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّسْكِيْنٌ ۙ (٢٤)
25. और प्रातः ही पहुँच गये कि वह फल तोड़ सकेंगे।	وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ (٢٥)
26. फिर जब उसे देखा तो कहाः निश्चय हम राह भूल गये।	فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْٓا اِنَّا لَضَآلُّوْنَ ۙ (٢٦)
27. बल्कि हम वंचित हो[2] गये।	بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ (٢٧)
28. तो उन में से बिचले भाई ने कहाः क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि तुम (अल्लाह की) पवित्रता का वर्णन क्यों नहीं करते?	قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ (٢٨)
29. वह कहने लगेः पवित्र है हमारा	قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ (٢٩)

---

[1] ताकि उन्हें कुछ दान न करना पड़े।

[2] पहले तो सोचा कि राह भूल गये हैं। किन्तु फिर देखा कि बाग़ तो उन्हीं का है तो कहा कि यह तो ऐसा उजाड़ हो गया है कि अब कुछ तोड़ने के लिये रह ही नहीं गया है। वास्तव में यह हमारा दुर्भाग्य है।

पालनहार! वास्तव में हम ही अत्याचारी थे।

30. फिर सम्मुख हो गया एक-दूसरे की निन्दा करते हुये।	فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ۝٣٠
31. कहने लगे हाय अफ़्सोस! हम ही विद्रोही थे।	قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ۝٣١
32. संभव है हमारा पालनहार हमें बदले में प्रदान करे इस से उत्तम (बाग़)। हम अपने पालनहार ही की ओर रुचि रखते हैं।	عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ۝٣٢
33. ऐसे ही यातना होती है और आख़िरत (परलोक) की यातना इस से भी बड़ी है। काश वह जानते!	كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ۗ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝٣٣
34. निःसंदेह सदाचारियों के लिये उन के पालनहार के पास सुखों वाले स्वर्ग हैं।	اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝٣٤
35. क्या हम आज्ञाकारियों[1] को पापियों के समान कर देंगे?	اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ۝٣٥
36. तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसा निर्णय कर रहे हो?	مَا لَكُمْ ۗ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ۝٣٦
37. क्या तुम्हारे पास कोई पुस्तक है जिस में तुम पढ़ते हो?	اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ ۝٣٧
38. कि तुम्हें वही मिलेगा जो तुम चाहोगे?	اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ۝٣٨
39. या तुम ने हम से शपथें ले रखी हैं जो प्रलय तक चली जायेंगी कि तुम्हें वही मिलेगा जिस का तुम निर्णय करोगे?	اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُوْنَ ۝٣٩

---

[1] मक्का के प्रमुख कहते थे कि यदि प्रलय हुई तो वहाँ भी हमें यही संसारिक सुख-सुविधा प्राप्त होंगी। जिस का खण्डन इस आयत में किया जा रहा है। अभिप्राय यह है कि अल्लाह के हाँ देर है पर अंधेर नहीं है।

40. आप उन से पूछिये कि उन में कौन इस की ज़मानत लेता है?	سَلْهُمْ أَيُّهُم بِذَٰلِكَ زَعِيمٌ ٤٠
41. क्या उन के कुछ साझी हैं? फिर तो वह अपने साझियों को लायें[1] यदि वह सच्चे हैं।	أَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ فَلْيَأْتُوا۟ بِشُرَكَآئِهِمْ إِن كَانُوا۟ صَٰدِقِينَ ٤١
42. जिस दिन पिंडली खोल दी जायेगी और वह बुलाये जायेंगे सज्दा करने के लिये तो (सज्दा) नहीं कर सकेंगे।[2]	يَوْمَ يُكْشَفُ عَن سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى ٱلسُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ٤٢
43. उन की आँखें झुकी होंगी, और उन पर अपमान छाया होगा। वह (संसार में) सज्दा करने के लिये बुलाये जाते रहे और वह स्वस्थ थे।	خَٰشِعَةً أَبْصَٰرُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۖ وَقَدْ كَانُوا۟ يُدْعَوْنَ إِلَى ٱلسُّجُودِ وَهُمْ سَٰلِمُونَ ٤٣
44. अतः आप छोड़ दें मुझे तथा उसे जो झुठला रहा है इस बात (क़ुर्आन) को, हम उन्हें धीरे-धीरे खींच लायेंगे[3] इस प्रकार कि उन्हें ज्ञान भी नहीं होगा।	فَذَرْنِى وَمَن يُكَذِّبُ بِهَٰذَا ٱلْحَدِيثِ ۖ سَنَسْتَدْرِجُهُم مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ٤٤
45. तथा हम उन्हें अवसर दे रहे हैं।[4] वस्तुतः हमारा उपाय सुदृढ़ है।	وَأُمْلِى لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِى مَتِينٌ ٤٥
46. तो क्या आप माँग कर रहे हैं किसी परिश्रामिक[5] की, तो वह बोझ से	أَمْ تَسْـَٔلُهُمْ أَجْرًا فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ٤٦

---

[1] ताकि वह उन्हें अच्छा स्थान दिला दें।

[2] हदीस में है कि प्रलय के दिन अल्लाह अपनी पिंडली खोलेगा तो प्रत्येक मोमिन पुरुष तथा स्त्री सज्दे में गिर जायेंगे। हाँ वह शेष रह जायेंगे जो दिखावे और नाम के लिये (संसार में) सज्दे किया करते थे। वह सज्दा करना चाहेंगे परन्तु उन की रीढ़ की हड्डी तख़्त के समान बन जायेगी जिस के कारण उन के लिये सज्दा करना असंभव हो जायेगा। (बुख़ारीः 4919)

[3] अर्थात उन के बुरे परिणाम की ओर।

[4] अर्थात संसारिक सुख-सुविधा में मग्न रखेंगे। फिर अन्ततः वह यातना में ग्रस्त हो जायेंगे।

[5] अर्थात धर्म के प्रचार पर।

दबे जा रहे हैं?	
47. या उन के पास ग़ैब का ज्ञान है जिसे वह लिख[1] रहे हैं?	أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ۝٤٧
48. तो आप धैर्य रखें अपने पालनहार के निर्णय तक और न हो जायें मछली वाले के समान।[2] जब उस ने पुकारा और वह शोक पूर्ण था।	فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُن كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ۝٤٨ ؕ
49. और यदि न पा लेती उसे उस के पालनहार की दया तो वह फेंक दिया जाता बंजर में, और वह बुरी दशा में होता।	لَّوْلَا أَن تَدَارَكَهُ نِعْمَةٌ مِّن رَّبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ۝٤٩
50. फिर चुन लिया उसे उस के पालनहार ने और बना दिया उसे सदाचारियों में से।	فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝٥٠
51. और ऐसा लगता है कि जो काफ़िर हो गये वह अवश्य फिसला देंगे आप को अपनी आँखों से (घूर कर) जब वह सुनते हों क़ुर्आन को। तथा कहते हैं कि वह अवश्य पागल है।	وَإِن يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ۝٥١
52. जब कि यह (क़ुर्आन) तो बस एक[3] शिक्षा है पूरे संसार वासियों के लिये।	وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ۝٥٢ ع

---

[1] या लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तक) उन के अधिकार में है इस लिये आप का आज्ञा पालन नहीं करते और उसी से ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं?

[2] इस से अभिप्राय यूनुस (अलैहिस्सलाम) हैं जिन को मछली ने निगल लिया था। (देखियेः सूरह साफ़्फ़ात, आयतः 139)

[3] इस में यह बताया गया है कि क़ुर्आन केवल अरबों के लिये नहीं, संसार के सभी देशों और जातियों की शिक्षा के लिये उतरा है।

सूरह हाक़्क़ा - 69

سُوْرَةُ الْحَاقَّةِ

सूरह हाक़्क़ा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 52 आयतें हैं।

- इस का प्रथम शब्द ((अल हाक़्क़ा)) है जिस से यह नाम लिया गया है। और इस का अर्थ हैः वह घड़ी जिस का आना सच्च है। इस में प्रलय के अवश्य आने की सूचना दी गई है।
- आयत 4 से 12 तक उन जातियों की यातना द्वारा शिक्षा दी गई है जिन्होंने प्रलय का इन्कार किया तथा रसूलों को झुठलाया। फिर आयत 13 से 18 तक प्रलय का भ्यावः दृश्य दिखाया गया है।
- आयत 19 से 37 तक सदाचारियों तथा दुराचारियों का परिणाम बताया गया है। फिर काफ़िरों को संबोधित कर के उन पर कुर्आन तथा रसूल की सच्चाई को उजागर किया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अल्लाह की तस्बीह (पवित्रतागान) बयान करते रहने का आदेश दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
1. जिस का होना सच्च है।	اَلْحَآقَّةُ ۙ ١
2. वह क्या है जिस का होना सच्च है?	مَا الْحَآقَّةُ ۚ ٢
3. तथा आप क्या जानें कि क्या है जिस का होना सच्च है?	وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ۗ ٣
4. झुठलाया समूद तथा आद (जाति) ने अचानक आ पड़ने वाली (प्रलत)को।	كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ٤
5. फिर समूद, तो वह ध्वस्त कर दिये गये अति कड़ी ध्वनी से।	فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ٥
6. तथा आद, तो वह ध्वस्त कर दिये	وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۙ ٦

गये एक तेज़ शीतल आँधी से।	
7. लगाये रखा उसे उन पर सात रातें तथा आठ दिन निरन्तर, तो आप देखते कि वह जाति उस में ऐसे पछाड़ी हुई है जैसे खजूर के खोकले तने।[1]	سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ ۙ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۚ ۝٧
8. तो क्या आप देखते हैं कि उन में से कोई शेष रह गया है?	فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ بَاقِيَةٍ ۝٨
9. और किया यही पाप फ़िरऔन ने और जो उस के पूर्व थे, तथा जिन की बस्तियाँ औंधी कर दी गईं।	وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ۚ ۝٩
10. उन्होंने नहीं माना अपने पालनहार के रसूल को। अन्ततः उस ने पकड़ लिया उन्हें, कड़ी पकड़।	فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ۝١٠
11. हम ने, जब सीमा पार कर गया जल, तो तुम्हें सवार कर दिया नाव[2] में।	اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ۙ ۝١١
12. ताकि हम बना दें उसे तुम्हारे लिये एक शिक्षा प्रद यादगार। और ताकि सुरक्षित रख लें इसे सुनने वाले कान।	لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ۝١٢
13. फिर जब फूँक दी जायेगी सूर नरसिंघा) में एक फूँक।	فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ۙ ۝١٣
14. और उठाया जायेगा धरती तथा पर्वतों को तो दोनों चूर-चूर कर दिये जायेंगे[3] एक ही बार में।	وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ۙ ۝١٤
15. तो उसी दिन होनी हो जायेगी।	فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۙ ۝١٥

---

1 उन के भारी और लम्बे होने की उपमा खजूर के तने से दी गई है।

2 इस में नूह (अलैहिससलाम) के तूफ़ान की ओर संकेत है। और सभी मनुष्य उन की संतान हैं इसलिये यह दया सब पर हूई है।

3 देखियेः सूरह ताहा, आयतः 20, आयतः 103, 108।

16. तथा फट जायेगा आकाश, तो वह उस दिन क्षीण निर्बल हो जायेगा।	وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ﴿١٦﴾
17. और फ़रिश्ते उस के किनारों पर होंगे तथा उठाये होंगे आप के पालनहार के अर्श (सिंहासन) को अपने ऊपर उस दिन आठ फ़रिश्ते।	وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا ؕ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ﴿١٧﴾ ؕ
18. उस दिन तुम (अल्लाह के पास) उपस्थित किये जाओगे, नहीं छुपा रह जायेगा तुम में से कोई।	يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾
19. फिर जिसे दिया जायेगा उस का कर्मपत्र दायें हाथ में वह कहेगाः यह लो मेरा कर्मपत्र पढ़ो।	فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ﴿١٩﴾ ۚ
20. मुझे विश्वास था कि मैं मिलने वाला हूँ अपने हिसाब से।	اِنِّيْ ظَنَنْتُ اَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ﴿٢٠﴾ ۚ
21. तो वह अपने मन चाहे सुख में होगा।	فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾ ۙ
22. उच्च श्रेणी के स्वर्ग में।	فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾ ۙ
23. जिस के फलों के गुच्छे झुक रहे होंगे।	قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾
24. (उन से कहा जायेगा)ः खाओ तथा पियो आनन्द ले कर उस के बदले जो तुम ने किया है विगत दिनों (संसार) में।	كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓئًا ۢبِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾
25. और जिसे दिया जायेगा उस का कर्मपत्र उस के बायें हाथ में तो वह कहेगाः हाय! मुझे मेरा कर्मपत्र दिया ही न जाता!	وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ﴿٢٥﴾ ۚ
26. तथा मैं न जानता कि क्या है मेरा हिसाब?!	وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾ ۚ

27. काश मेरी मौत ही निर्णायक[1] होती!	يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۚ﴿٢٧﴾
28. नहीं काम आया मेरा धन।	مَآ اَغْنٰى عَنِّیْ مَالِيَهْ ۚ﴿٢٨﴾
29. मुझ से समाप्त हो गया मेरा प्रभुत्व।[2]	هَلَكَ عَنِّیْ سُلْطٰنِيَهْ ۚ﴿٢٩﴾
30. (आदेश होगा कि) उसे पकड़ो और उस के गले में तौक़ डाल दो।	خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ۙ﴿٣٠﴾
31. फिर नरक में उसे झोंक दो।	ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ۙ﴿٣١﴾
32. फिर उसे एक जंजीर, जिस की लम्बाई सत्तर गज़ है में जकड़ दो।	ثُمَّ فِیْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ۭ﴿٣٢﴾
33. वह ईमान नहीं रखता था महिमाशाली अल्लाह पर।	اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ۙ﴿٣٣﴾
34. और न प्रेरणा देता था दरिद्र को भोजन कराने की।	وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۭ﴿٣٤﴾
35. अतः नहीं है उस का आज यहाँ कोई मित्र।	فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ۙ﴿٣٥﴾
36. और न कोई भोजन, पीप के सिवा।	وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ۙ﴿٣٦﴾
37. जिसे पापी ही खायेंगे।	لَّا يَاْكُلُهٗٓ اِلَّا الْخٰطِــُٔوْنَ ۧ﴿٣٧﴾
38. तो मैं शपथ लेता हूँ उस की जो तुम देखते हो।	فَلَآ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ۙ﴿٣٨﴾
39. तथा जो तुम नहीं देखते हो।	وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ ۙ﴿٣٩﴾
40. निःसंदेह यह (क़ुर्आन) अदरणीय रसूल का कथन[3] है।	اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ۙ﴿٤٠﴾

---

1 अर्थात उस के पश्चात् मैं फिर जीवित न किया जाता।

2 इस का दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि परलोक के इन्कार पर जितने तर्क दिया करता था आज सब निष्फल हो गये।

3 यहाँ अदरणीय रसूल से अभिप्राय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं। तथा सूरह तक्वीर आयत 19 में फ़रिश्ते जिब्रील (अलैहिससलाम) जो वह़्यी

41. और वह किसी कवि का कथन नहीं है। तुम लोग कम ही विश्वास करते हो।

وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۚ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾

42. और न यह किसी ज्योतिषी का कथन है, तुम कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो।

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ۚ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾

43. सर्वलोक के पालनहार का उतारा हुआ है।

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٣﴾

44. और यदि इस (नबी) ने हम पर कोई बात बनाई[1] होती।

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ﴿٤٤﴾

45. तो अवश्य हम पकड़ लेते उस का सीधा हाथ।

لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ﴿٤٥﴾

46. फिर अवश्य काट देते उस के गले की रग।

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ﴿٤٦﴾

47. फिर तुम से कोई (मुझे) उस से रोकने वाला न होता।

فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ﴿٤٧﴾

48. निःसंदेह यह एक शिक्षा है सदाचारियों के लिये।

وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾

49. तथा वास्तव में हम जानते हैं कि तुम में कुछ झुठलाने वाले हैं।

وَاِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾

50. और निश्चय यह पछतावे का कारण होगा काफ़िरों[2] के लिये।

وَاِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾

लाते थे वह अभिप्राय हैं। यहाँ कुर्आन को आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन इस अर्थ में कहा गया है कि लोग उसे आप से सुन रहे थे। और इसी प्रकार आप जिब्रील (अलैहिस्सलाम) से सुन रहे थे। अन्यथा वास्तव में कुर्आन अल्लाह ही का कथन है जैसा कि आगामी आयतः 43 में आ रहा है।

[1] इस आयत का भावार्थ यह है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अपनी ओर से वह्यी (प्रकाशना) में कुछ अधिक या कम करने का अधिकार नहीं है। यदि वह ऐसा करेंगे तो उन्हें कड़ी यातना दी जायेगी।

[2] अर्थात जो कुर्आन को नहीं मानते वह अन्ततः पछतायेंगे।

51. वस्तुतः यह विश्वासनीय सत्य है।

52. अतः आप पवित्रता का वर्णन करें अपने महिमावान पालनहार के नाम की।

وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٥١﴾

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٥٢﴾

सूरह मआरिज - 70

سُورَةُ المَعَارِج

सूरह मआरिज के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 44 आयतें हैं।

- इस की आयत 3 में ((ज़िल मआरिज)) का शब्द आया है। उसी से यह नाम लिया गया है जिस का अर्थ हैः ऊँचाईयों वाला।
- इस में क़्यामत (प्रलय) की यातना की जल्दी मचाने वालों को सूचित किया गया है कि वह यातना अपने समय पर अवश्य आ कर रहेगी। फिर प्रलय की दशा को बताया गया है कि वह कितनी भीषण घड़ी होगी।
- आयत 19 से 25 तक मनुष्य की साधारण कमज़ोरी का वर्णन करते हुये यह बताया गया है कि इसे इबादत (नमाज़) के द्वारा ही दूर किया जा सकता है जिस से वह गुण पैदा होते हैं जिन से मनुष्य स्वर्ग के योग्य होता है।
- अन्तिम आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का उपहास करने वालों और क़ुर्आन सुनाने से आप को रोकने के लिये आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर पिल पड़ने वालों को कड़ी चेतावनी दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
1. प्रश्न किया एक प्रश्न करने[1] वाले ने उस यातना के बारे में जो आने वाली है।	سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ①
2. काफ़िरों पर। नहीं है जिसे कोई दूर करने वाला।	لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ ②
3. अल्लाह ऊँचाईयों वाले की ओर से।	مِّنَ اللّٰهِ ذِي الْمَعَارِجِ ③

---

[1] कहा जाता है कि नज़्र पुत्र हारिस अथवा अबू जह्ल ने यह माँग की थी, कि ((हे अल्लाह यदि यह सत्य है तेरी ओर से तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा दे))। (देखियेः सूरह अन्फ़ाल, आयतः 32)

4. चढ़ते हैं फ़रिश्ते तथा रूह[1] जिस की ओर, एक दिन में जिस का माप पचास हज़ार वर्ष है।	تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍۚ ٤
5. अतः (हे नबी!) आप सहन[2] करें अच्छे प्रकार से।	فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ٥
6. वह समझते हैं उस को दूर।	اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًاۙ ٦
7. और हम देख रहे है उसे समीप।	وَّنَرٰىهُ قَرِيْبًاۗ ٧
8. जिस दिन हो जायेगा आकाश पिघली हुई धात के समान।	يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِۙ ٨
9. तथा हो जायेंगे पर्वत रंगा-रंग धुने हुये ऊन के समान।[3]	وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِۙ ٩
10. और नहीं पूछेगा कोई मित्र किसी मित्र को।	وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًاۚ ١٠
11. (जब कि) वह उन्हें दिखाये जायेंगे। कामना करेगा पापी कि दण्ड के रूप में दे दे उस दिन की यातना के अपने पुत्रों को।	يُّبَصَّرُوْنَهُمْۗ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِيْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِىِٕذٍۢ بِبَنِيْهِۙ ١١
12. तथा अपनी पत्नी और अपने भाई को।	وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِۙ ١٢
13. तथा अपने समीपवर्ती परिवार को जो उसे शरण देता था।	وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُـْٔوِيْهِۙ ١٣
14. और जो धरती में है सभी[4]को फिर	وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًاۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِۙ ١٤

---

1 रूह से अभिप्राय फ़रिश्ता जिब्रील (अलैहिस्सलाम) है।

2 अर्थात संसार में सत्य को स्वीकार करने से।

3 देखियेः सूरह क़ारिआ।

4 हदीस में है कि जिस नारकी को सब से सरल यातना दी जायेगी, उस से अल्लाह कहेगाः क्या धरती का सब कुछ तुम्हें मिल जाये तो उसे इस के दण्ड में दे दोगे? वह कहेगाः हाँ। अल्लाह कहेगाः तुम आदम की पीठ में थे, तो मैं ने तुम से इस से सरल की माँग की थी कि मेरा किसी को साझी न बनाना तो तुम ने इन्कार

वह उसे यातना से बचा दे।

15. कदापि (ऐसा) नहीं (होगा)। वह अग्नि की ज्वाला होगी।

كَلَّآ ۖ إِنَّهَا لَظَىٰ ﴿١٥﴾

16. खाल उधेड़ने वाली।

نَزَّاعَةً لِّلشَّوَىٰ ﴿١٦﴾

17. वह पुकारेगी उसे जिस ने पीछा दिखाया[1] तथा मुँह फेरा।

تَدْعُوا مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١٧﴾

18. तथा (धन) एकत्र किया फिर सौंत कर रखा।

وَجَمَعَ فَأَوْعَىٰ ﴿١٨﴾

19. वास्तव में मनुष्य अत्यंत कच्चे दिल का पैदा किया गया है।

إِنَّ الْإِنسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ﴿١٩﴾

20. जब उसे पहुँचता है दुःख तो उद्विग्न हो जाता है।

إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ﴿٢٠﴾

21. और जब उसे धन मिलता है तो कंजूसी करने लगता है।

وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ﴿٢١﴾

22. सिवाय उनके जो नमाज़ी हैं।

إِلَّا الْمُصَلِّينَ ﴿٢٢﴾

23. जो अपनी नमाज़ का सदा पालन[2] करते हैं।

الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ﴿٢٣﴾

24. और जिन के धनों में निश्चित भाग है।

وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ﴿٢٤﴾

25. याचक (माँगने वाला), तथा वंचित[3] का।

لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ﴿٢٥﴾

26. तथा जो सत्य मानते हैं प्रतिकार (प्रलय) के दिन को।

وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿٢٦﴾

किया और शिर्क किया। (सहीह बुख़ारीः 6557, सहीह मुस्लिमः 2805)

[1] अर्थात सत्य से।

[2] अर्थात बड़ी पाबंदी से नमाज़ पढ़ते हों।

[3] अर्थात जो न माँगने के कारण वंचित रह जाता है।

27. तथा जो अपने पालनहार की यातना से डरते हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ۚ ٢٧

28. वास्तव में आप के पालनहार की यातना निर्भय रहने योग्य नहीं है।

اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ٢٨

29. तथा जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۙ ٢٩

30. सिवाये अपनी पत्नियों और अपने स्वामित्व में आई दासियों[1] के तो वही निन्दित नहीं हैं।

اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۚ ٣٠

31. और जो चाहे इस के अतिरिक्त तो वही सीमा का उल्लंघन करने वाले हैं।

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۚ ٣١

32. और जो अपनी अमानतों तथा अपने वचन का पालन करते हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۙ ٣٢

33. और जो अपने साक्ष्यों (गवाहियों) पर स्थित रहने वाले हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ۙ ٣٣

34. तथा जो अपनी नमाज़ों की रक्षा करते हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۗ ٣٤

35. वही स्वर्गों में सम्मानित होंगे।

اُولٰٓئِكَ فِيْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ۚ ٣٥

36. तो क्या हो गया है उन काफ़िरों को, कि आप की ओर दौड़े चले आ रहे हैं।

فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ۙ ٣٦

37. दायें तथा बायें से समूहों में हो[2] कर।

عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِيْنَ ٣٧

---

[1] इस्लाम में उसी दासी से संभोग उचित है जिसे सेना-पति ने ग़नीमत (परिहार) के दूसरे धनों के समान किसी मुजाहिद के स्वामित्व में दे दिया हो। इस से पूर्व किसी बंदी स्त्री से संभोग पाप तथा व्यभिचार है। और उस से संभोग भी उस समय वैध है जब उसे एक बार मासिक धर्म आ जाये। अथवा गर्भवती हो तो प्रसव के पश्चात् ही संभोग किया जा सकता है। इसी प्रकार जिस के स्वामित्व में आई हो उस के सिवा और कोई उस से संभोग नहीं कर सकता।

[2] अर्थात जब आप क़ुर्आन सुनाते हैं तो उस का उपहास करने के समूहों में हो

38. क्या उन में से प्रत्येक व्यक्ति लोभ (लालच) रखता है कि उसे प्रवेश दे दिया जायेगा सुख के स्वर्गों में?	أَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيْمٍ ۙ ٣٨
39. कदापि ऐसा न होगा, हम ने उन की उत्पत्ति उस चीज़ से की है जिसे वे[1] जानते हैं।	كَلَّا ؕ إِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ٣٩
40. तो मैं शपथ लेता हूँ पूर्वों (सूर्योदय के स्थानों) तथा पश्चिमों (सूर्यास्त के स्थानों) की, वास्तव में हम अवश्य सामर्थ्यवान हैं।	فَلَآ أُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ إِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ۙ ٤٠
41. इस बात पर कि बदल दें उन से उत्तम (उत्पत्ति) को तथा हम विवश नहीं हैं।	عَلٰٓى أَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ٤١
42. अतः आप उन्हें झगड़ते तथा खेलते छोड़ दें यहाँ तक कि वह मिल जायें अपने उस दिन से जिस का उन्हें वचन दिया जा रहा है।	فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ۙ ٤٢
43. जिस दिन वह निकलेंगे क़ब्रों (और समाधियों) से दौड़ते हुये जैसे वह अपनी मुर्तियों की ओर दौड़ रहे हों।[2]	يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا كَأَنَّهُمْ إِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ۙ ٤٣
44. झुकी होंगी उन की आँखें, छाया होगा उन पर अपमान, यही वह दिन है जिस का वचन उन्हें दिया जा[3] रहा था।	خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ٤٤

कर आ जाते हैं। और इन का दावा यह है कि स्वर्ग में जायेंगे।

[1] अर्थात हीन जल (वीर्य) से। फिर भी घमंड करते हैं। तथा अल्लाह और उस के रसूल को नहीं मानते।

[2] या उन के थानों की ओर। क्योंकि संसार में वे सूर्योदय के समय बड़ी तीव्रगति से अपनी मुर्तियों की ओर दौड़ते थे।

[3] अर्थात रसूलों तथा धर्मशास्त्रों के माध्यम से।

सूरह नूह - 71

سُوْرَةُ نُوْحٍ

सूरह नूह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 28 आयतें हैं।

- इस में नूह (अलैहिस्सलाम) के उपदेश का पूरा वर्णन है जिस से इस का नाम सूरह नूह है। और इस में उन की कथा का वर्णन ऐसे किया गया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरोधी चौंक जायें।
- इस में अल्लाह से नूह (अलैहिस्सलाम) की गुहार को प्रस्तुत किया गया है। और आयत 25 में उस यातना की चर्चा है जो उन की जाति पर आई थी।
- अन्त में नूह (अलैहिस्सलाम) की उस प्रार्थना का वर्णन है जो उन्होंने इस यातना के समय की थी जो उन की जाति पर आई।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
1. निःसंदेह हम ने भेजा नूह को उस की जाति की ओर, कि सावधान कर अपनी जाति को इस से पूर्व कि आये उन के पास दुःखदायी यातना।	اِنَّآ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١﴾
2. उस ने कहाः हे मेरी जाति! वास्तव में मैं खुला सावधान करने वाला हूँ तुम्हें।	قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢﴾
3. कि इबादत (वंदना) करो अल्लाह की तथा डरो उस से और बात मानो मेरी।	اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿٣﴾
4. वह क्षमा कर देगा तुम्हारे लिये तुम्हारे पापों को, तथा अवसर देगा तुम्हें निर्धारित समय[1] तक। वास्तव में जब अल्लाह का निर्धारित समय आ	يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ اِذَا جَاۗءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤﴾

---

1 अर्थात तुम्हारी निश्चित आयु तक।

जायेगा तो उस में देर न होगी। काश तुम जानते।

5. नूह ने कहाः मेरे पालनहार! मैं ने बुलाया अपनी जाति को (तेरी ओर) रात और दिन।

قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ۝٥

6. तो मेरे बुलावे ने उन के भागने ही को अधिक किया।

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَاءِيْ إِلَّا فِرَارًا ۝٦

7. और मैं ने जब-जब उन्हें बुलाया तो उन्होंने दे लीं अपनी ऊँगलियाँ अपने कानों में, तथा ओढ़ लिये अपने कपड़े,[1] तथा अड़े रह गये और बड़ा घमंड किया।

وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوٓا أَصَابِعَهُمْ
فِيٓ آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا
وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝٧

8. फिर मैं ने उन्हें उच्च स्वर से बुलाया।

ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝٨

9. फिर मैं ने उन से खुल कर कहा और उन से धीरे-धीरे (भी) कहा।

ثُمَّ إِنِّيٓ أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۝٩

10. मैं ने कहाः क्षमा माँगो अपने पालनहार से, वास्तव में वह बड़ा क्षमाशील है।

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۝١٠

11. वह वर्षा करेगा आकाश से तुम पर धाराप्रवाह वर्षा।

يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ۝١١

12. तथा अधिक देगा तुम्हें पुत्र तथा धन और बना देगा तुम्हारे लिये बाग़ तथा नहरें।

وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَلْ
لَكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهَارًا ۝١٢

13. क्या हो गया है तुम्हें कि नहीं डरते हो अल्लाह की महिमा से?

مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ۝١٣

14. जब कि उस ने पैदा किया है तुम्हें

وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ۝١٤

---

1 ताकि मेरी बात न सुन सकें।

विभिन्न प्रकार[1] से।

اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۙ﴿١٥﴾

15. क्या तुम ने नहीं देखा कि कैसे पैदा किये हैं अल्लाह ने सात आकाश ऊपर-तले?

وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٦﴾

16. और बनाया है चन्द्रमा को उन में प्रकाश, और बनाया है सूर्य को प्रदीप।

وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا ۙ﴿١٧﴾

17. और अल्लाह ही ने उगाया है तुम्हें धरती[2] से अद्‌भुत रूप से।

ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ﴿١٨﴾

18. फिर वह वापिस ले जायेगा तुम्हें उस में और निकालेगा तुम को उस से।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ۙ﴿١٩﴾

19. और अल्लाह ने बनाया है तुम्हारे लिये धरती को बिस्तर।

لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۠﴿٢٠﴾

20. ताकि तुम चलो उस की खुली राहों में।

قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِيْ وَاتَّبَعُوْا مَنْ لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهٗ وَوَلَدُهٗۤ اِلَّا خَسَارًا ۚ﴿٢١﴾

21. नूह ने निवेदन किया: मेरे पालनहार! उन्होंने मेरी अवैज्ञा की, और अनुसरण किया उस का[3] जिस के धन और संतान ने उस की क्षति ही को बढ़ाया।

وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ۚ﴿٢٢﴾

22. और उन्होंने बड़ी चाल चली।

وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ۬ وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ وَنَسْرًا ۚ﴿٢٣﴾

23. और उन्होंने कहा: तुम कदापि न छोड़ना अपने पूज्यों को, और कदापि न छोड़ना वद्द को, न सुवाअ को और न यग़ूस को और यऊक़ को तथा न नस्र[4] को।

---

[1] अर्थात वीर्य से, फिर रक्त से, फिर माँस और हड्डियों से।

[2] अर्थात तुम्हारे मूल आदम (अलैहिस्सलाम) को।

[3] अर्थात अपने प्रमुखों का।

[4] यह सभी नूह (अलैहिस्सलाम) की जाति के बुतों के नाम हैं। यह पाँच सदाचारी व्यक्ति थे जिन के मरने के पश्चात् शैतान ने उन्हें समझाया कि इन की मुर्तियाँ

24. और कुपथ (गुमराह) कर दिया है उन्होंने बहुतों को, और अधिक कर दे तू (भी) अत्याचारियों के कुपथ[1] (कुमार्ग) को।

وَقَدۡ أَضَلُّواْ كَثِيرٗاۖ وَلَا تَزِدِ ٱلظَّٰلِمِينَ
إِلَّا ضَلَٰلٗا ﴿٢٤﴾

25. वह अपने पापों के कारण डुबो[2] दिये गये फिर पहुँचा दिये गये नरक में। और नहीं पाया उन्होंने अपने लिये अल्लाह के मुक़ाबिले में कोई सहायक।

مِّمَّا خَطِيٓـَٰٔتِهِمۡ أُغۡرِقُواْ فَأُدۡخِلُواْ نَارٗا فَلَمۡ
يَجِدُواْ لَهُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ أَنصَارٗا ﴿٢٥﴾

26. तथा कहा नूह नेः मेरे पालनहार! न छोड़ धरती पर काफ़िरों का कोई घराना।

وَقَالَ نُوحٞ رَّبِّ لَا تَذَرۡ عَلَى ٱلۡأَرۡضِ مِنَ
ٱلۡكَٰفِرِينَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾

27. (क्यों कि) यदि तू उन्हें छोड़ेगा तो वह कुपथ करेंगे तेरे भक्तों को, और नहीं जन्म देंगे परन्तु दुष्कर्मी बड़े काफ़िर को।

إِنَّكَ إِن تَذَرۡهُمۡ يُضِلُّواْ عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوٓاْ
إِلَّا فَاجِرٗا كَفَّارٗا ﴿٢٧﴾

28. मेरे पालनहार! क्षमा कर दे मुझ को तथा मेरे माता-पिता को और उसे जो प्रवेश करे मेरे घर में ईमान ला कर, तथा ईमान वालों और ईमान वालियों को। तथा काफ़िरों के विनाश ही को अधिक कर।

رَّبِّ ٱغۡفِرۡ لِي وَلِوَٰلِدَيَّ وَلِمَن دَخَلَ بَيۡتِيَ
مُؤۡمِنٗا وَلِلۡمُؤۡمِنِينَ وَٱلۡمُؤۡمِنَٰتِۖ وَلَا تَزِدِ
ٱلظَّٰلِمِينَ إِلَّا تَبَارَۢا ﴿٢٨﴾

बना लो। जिस से तुम्हें इबादत की प्रेरणा मिलेगी। फिर कुछ युग व्यतीत होने के पश्चात् समझाया कि यही पूज्य हैं। और उन की पूजा अरब तक फैल गई।

[1] नूह (अलैहिस्सलाम) ने 950 वर्ष तक उन्हें समझाया। (देखियेः सूरह अन्कबूत, आयतः 14) और जब नहीं माने तो यह निवेदन किया।

[2] इस का संकेत नूह (अलैहिस्सलाम) के तूफ़ान की ओर है। (देखियेः सूरह हूद, आयतः 40, 44)

सूरह जिन्न - 72

سُورَةُ الجِنِّ

सूरह जिन्न के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 28 आयतें हैं।

- इस में जिन्नों की बातें बताई गई हैं। इसलिये इस का यह नाम है। जिन्होंने कुर्आन सुना और उस के सच्च होने की गवाही दी। फिर मक्का के मुश्रिकों को सावधान किया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मुख से नबूवत के बारे में बातें उजागर की गई हैं। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को न मानने पर नरक की यातना से सूचित किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) कहोः मेरी ओर वह़्यी (प्रकाशना[1]) की गई है कि ध्यान से सुना जिन्नों के एक समूह ने। फिर कहा कि हम ने सुना है एक विचित्र कुर्आन।

قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ١

2. जो दिखाता है सीधी राह, तो हम ईमान लाये उस पर। और हम कदापि साझी नहीं बनायेंगे अपने पालनहार के साथ किसी को।

يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ ۖ وَلَن نُّشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا ٢

3. तथा निःसंदेह महान् है हमारे पालनहार की महिमा, नहीं बनाई है उस ने कोई संगीनी (पत्नी) और न कोई संतान।

وَأَنَّهُ تَعَالَىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ٣

---

[1] सूरह अह़क़ाफ़ आयतः 29, में इस का वर्णन किया गया है। इस सूरह में यह बताया गया है कि जब जिन्नों ने कुर्आन सुना तो आप ने न जिन्नों को देखा और न आप को उस का ज्ञान हुआ। बल्कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को वह़्यी (प्रकाशना) द्वारा इस से सूचित किया गया।

4. तथा निश्चय हम अज्ञान में कह रहे थे अल्लाह के संबंध में झूठी बातें।

وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ٤

5. और यह कि हम ने समझा कि मनुष्य तथा जिन्न नहीं बोल सकते अल्लाह पर कोई झूठ बात।

وَّاَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ٥

6. और वास्तविक्ता यह है कि मनुष्य में से कुछ लोग शरण माँगते थे जिन्नों में से कुछ लोगों की तो उन्हों ने अधिक कर दिया उन के गर्व को।

وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ٦

7. और यह कि मनुष्यों ने भी वही समझा जो तुम ने अनुमान लगाया कि कभी अल्लाह फिर जीवित नहीं करेगा किसी को।

وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ٧

8. तथा हम ने स्पर्श किया आकाश को तो पाया कि भर दिया गया है प्रहरियों तथा उल्कावों से।

وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ٨

9. और यह कि हम बैठते थे उस (आकाश) में सुन गुन लेने के स्थानों में, और जो अब सुनने का प्रयास करेगा वह पायेगा अपने लिये एक उल्का घात में लगा हुआ।

وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ؕ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ٩

10. और यह कि हम नहीं समझ पाते कि क्या किसी बुराई का इरादा किया गया धरती वालों के साथ या इरादा किया है उन के साथ उन के पालनहार ने सीधी राह पर लाने का?

وَّاَنَّا لَا نَدْرِيْۤ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ١٠

11. और हम में से कुछ सदाचारी हैं और हम में से कुछ इस के विपरीत हैं। हम विभिन्न प्रकारों में विभाजित हैं।

وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ؕ كُنَّا طَرَآىِٕقَ قِدَدًا ١١

12. तथा हमें विश्वास हो गया है कि हम कदापि विवश नहीं कर सकते अल्लाह को धरती में और न विवश कर सकते हैं उसे भाग कर।

وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِى الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۝١٢

13. तथा जब हम ने सुनी मार्ग दर्शन की बात तो उस पर ईमान ला आये, अब जो भी ईमान लायेगा अपने पालनहार पर तो नहीं भय होगा उसे अधिकार हनन का और न किसी अत्याचार का।

وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ ۭ فَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ۝١٣

14. और यह कि हम में से कुछ मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं और कुछ अत्याचारी हैं। तो जो आज्ञाकारी हो गये तो उन्होंने खोज ली सीधी राह।

وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ۭ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰۗىِٕكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۝١٤

15. तथा जो अत्याचारी हैं तो वह नरक का ईंधन हो गये।

وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝١٥

16. और यह कि यदि वह स्थित रहते सीधी राह (अर्थात इस्लाम) पर तो हम सींचते उन्हें भरपूर जल से।

وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّاۗءً غَدَقًا ۝١٦

17. ताकि उन की परीक्षा लें इस में, और जो विमुख होगा अपने पालनहार की स्मरण (याद) से, तो उसे उस का पालनहार ग्रस्त करेगा कड़ी यातना में।

لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ۭ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝١٧

18. और यह कि मस्जिदें[1] अल्लाह के लिये हैं। अतः मत पुकारो अल्लाह के साथ किसी को।

وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ۝١٨

19. और यह कि जब खड़ा हुआ अल्लाह का

وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا

---

[1] मस्जिद का अर्थ सज्दा करने का स्थान है। भावार्थ यह है कि अल्लाह के सिवा किसी अन्य की इबादत तथा उस के सिवा किसी से प्रार्थना तथा विनय करना अवैध है।

भक्त[1] उसे पुकारता हुआ तो समीप था कि वह लोग उस पर पिल पड़ते।

يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾

20. आप कह दें कि मैं तो केवल अपने पालनहार को पुकारता हूँ। और साझी नहीं बनाता उस का किसी अन्य को।

قُلْ إِنَّمَا أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ﴿٢٠﴾

21. आप कह दें कि मैं अधिकार नहीं रखता तुम्हारे लिये किसी हानि का न सीधी राह पर लगा देने का।

قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾

22. आप कह दें कि मुझे कदापि नहीं बचा सकेगा अल्लाह से कोई।[2] और न मैं पा सकूँगा उस के सिवा कोई शरणागार (बचने का स्थान)।

قُلْ إِنِّي لَنْ يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ ۙ وَلَنْ أَجِدَ
مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾

23. परन्तु पहुँचा सकता हूँ अल्लाह का आदेश तथा उस का उपदेश। और जो अवैज्ञा करेगा अल्लाह तथा उस के रसूल की तो वास्तव में उसी के लिये नरक की अग्नि है जिस में वह नित्य सदावासी होगा।

إِلَّا بَلَاغًا مِنَ اللَّهِ وَرِسَالَاتِهِ ۚ وَمَنْ يَعْصِ
اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ
فِيهَا أَبَدًا ﴿٢٣﴾

24. यहाँ तक कि जब देख लेंगे जिस का उन्हें वचन दिया जाता है तो उन्हें विश्वास हो जायेगा कि किस के सहायक निर्बल और किस की संख्या कम है।

حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ
أَضْعَفُ نَاصِرًا وَأَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾

25. आप कह दें कि मैं नहीं जानता कि समीप है जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है अथवा बनायेगा मेरा

قُلْ إِنْ أَدْرِي أَقَرِيبٌ مَا تُوعَدُونَ
أَمْ يَجْعَلُ لَهُ رَبِّي أَمَدًا ﴿٢٥﴾

---

[1] अल्लाह के भक्त से अभिप्राय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं। तथा भावार्थ यह है कि जिन्न तथा मनुष्य मिल कर क़ुर्आन तथा इस्लाम की राह से रोकना चाहते हैं।

[2] अर्थात यदि मैं उस की अवैज्ञा करूँ और वह मुझे यातना देना चाहे।

पालनहार उस के लिये कोई अवधि?

26. वह ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञानी है अतः वह अवगत नहीं कराता है अपने परोक्ष पर किसी को।

27. सिवाये रसूल के जिसे उस ने प्रिय बना लिया है फिर वह लगा देता है उस वह्यी के आगे तथा उस के पीछे रक्षक।[1]

28. ताकि वह देख ले कि उन्होंने पहुँचा दिये हैं अपने पालनहार के उपदेश।[2] और उस ने घेर रखा है जो कुछ उन के पास है और प्रत्येक वस्तु को गिन रखा है।

عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾

اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿٢٧﴾

لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾

---

[1] अर्थात ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। किन्तु यदि धर्म के विषय में कुछ परोक्ष की बातों की वह्यी अपने किसी रसूल की ओर करता है तो फ़रिश्तों द्वारा उस की रक्षा की व्यवस्था भी करता है ताकि उस में कुछ मिलाया न जा सके। रसूल को जितना ग़ैब का ज्ञान दिया जाता है वह इस आयत से उजागर हो जाता है। फिर भी कुछ लोग आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पूरे ग़ैब का ज्ञानी मानते हैं। और आप को गुहारते और सब जगह उपस्थित कहते हैं। और तौहीद को आधात पहुँचा कर शिर्क करते हैं।

[2] अर्थात वह रसूलों की दशा को जानता है। उस ने प्रत्येक चीज़ को गिन रखा है ताकि रसूलों के उपदेश पहुँचाने में कोई कमी और अधिक्ता न हो। इसलिये लोगों को रसूलों की बातें मान लेनी चाहिये।

सूरह मुज़्ज़म्मिल - 73

سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ

सूरह मुज़्ज़म्मिल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 20 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को «अल मुज़्ज़म्मिल» (चादर ओढ़ने वाला) कह कर संबोधित किया गया है। जो इस सूरह का यह नाम रखे जाने का कारण है।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को रात्री में नमाज़ पढ़ने का निर्देश दिया गया है। और इस का लाभ बताया गया है। और विरोधियों की बातों को सहन करने और उन के परिणाम को बताया गया है।
- मक्का के काफ़िरों को सावधान किया गया है कि जैसे फ़िरऔन की ओर हम ने रसूल भेजा वैसे ही तुम्हारी ओर रसूल भेजा है। तो उस का जो दुष्परिणाम हुआ उस से शिक्षा लो अन्यथा कुफ़्र कर के परलोक की यातना से कैसे बच सकोगे?
- और इस सूरह के अन्त में, रात्री में नमाज़ का जो आदेश दिया गया था, उसे सरल कर दिया गया। इसी प्रकार लस में फ़र्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ों के पालन तथा ज़कात देने के आदेश दिये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हे चादर ओढ़ने वाले!
2. खड़े रहो (नमाज़ में) रात्री के समय परन्तु कुछ[1] समय।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۙ①

قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ②

---

[1] हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) रात में इतनी नमाज़ पढ़ते थे कि आप के पैर सूज जाते थे। आप से कहा गयाः ऐसा क्यों करते हैं? जब कि अल्लाह ने आप के पहले और पिछले गुनाह क्षमा कर दिये हैं? आप ने कहाः क्या मैं उस का कृतज्ञ भक्त न बनूँ? (बुख़ारीः 1130, मुस्लिमः 2819)

نِّصۡفَهُۥٓ أَوِ ٱنقُصۡ مِنۡهُ قَلِيلًا ٣

3. (अर्थात) आधी रात अथवा उस से कुछ कम।

أَوۡ زِدۡ عَلَيۡهِ وَرَتِّلِ ٱلۡقُرۡءَانَ تَرۡتِيلًا ٤

4. या उस से कुछ अधिक, और पढ़ो क़ुर्आन रुक-रुक कर।

إِنَّا سَنُلۡقِي عَلَيۡكَ قَوۡلٗا ثَقِيلًا ٥

5. हम उतारेंगे (हे नबी!) आप पर एक भारी बात (क़ुर्आन)।

إِنَّ نَاشِئَةَ ٱلَّيۡلِ هِيَ أَشَدُّ وَطۡـٔٗا وَأَقۡوَمُ قِيلًا ٦

6. वास्तव में रात में जो इबादत होती है वह अधिक प्रभावी है (मन को) एकाग्र करने में। तथा अधिक उचित है बात (प्रार्थना) के लिये।

إِنَّ لَكَ فِي ٱلنَّهَارِ سَبۡحٗا طَوِيلٗا ٧

7. आप के लिये दिन में बहुत से कार्य हैं।

وَٱذۡكُرِ ٱسۡمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلۡ إِلَيۡهِ تَبۡتِيلٗا ٨

8. और स्मरण (याद) करें अपने पालनहार के नाम की, और सब से अलग हो कर उसी के हो जायें।

رَّبُّ ٱلۡمَشۡرِقِ وَٱلۡمَغۡرِبِ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَٱتَّخِذۡهُ وَكِيلٗا ٩

9. वह पूर्व तथा पश्चिम का पालनहार है। नहीं है कोई पूज्य (वंदनीय) उस के सिवा, अतः उसी को अपना करता धरता बना लें।

وَٱصۡبِرۡ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَٱهۡجُرۡهُمۡ هَجۡرٗا جَمِيلٗا ١٠

10. और सहन करें उन बातों को जो वे बना रहे हैं।[1] और अलग हो जायें उन से सुशीलता के साथ।

وَذَرۡنِي وَٱلۡمُكَذِّبِينَ أُوْلِي ٱلنَّعۡمَةِ وَمَهِّلۡهُمۡ قَلِيلًا ١١

11. तथा छोड़ दें मुझे तथा झुठलाने वाले सुखी (सम्पन्न) लोगों को। और उन्हें अवसर दें कुछ देर।

إِنَّ لَدَيۡنَآ أَنكَالٗا وَجَحِيمٗا ١٢

12. वस्तुतः हमारे पास (उनके लिये) बहुत सी बेड़ियाँ तथा दहकती अग्नि है।

وَطَعَامٗا ذَا غُصَّةٖ وَعَذَابًا أَلِيمٗا ١٣

13. और भोजन जो गले में फंस जाये

---

[1] अर्थात आप के तथा सत्धर्म के विरुद्ध।

और दुःखदायी यातना है।

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ
كَثِيبًا مَّهِيلًا ﴿١٤﴾

14. जिस दिन काँपेगी धरती और पर्वत, तथा हो जायेंगे पर्वत भुरभुरी रेत के ढेर।

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ
فِرْعَوْنَ رَسُولًا ﴿١٥﴾

15. हम ने भेजा है तुम्हारी ओर एक रसूल[1] तुम पर गवाह (साक्षी) बना कर जैसे भेजा फ़िरऔन की ओर एक रसूल (मूसा) को।

فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا
وَبِيلًا ﴿١٦﴾

16. तो अवैज्ञा की फ़िरऔन ने उस रसूल की और हम ने पकड़ लिया उस को कड़ी पकड़।

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ
الْوِلْدَانَ شِيبًا ﴿١٧﴾

17. तो कैसे बचोगे यदि कुफ़्र किया तुम ने उस दिन से जो बना देगा बच्चों को (शोक के कारण) बूढ़ा?

السَّمَاءُ مُنفَطِرٌ بِهِ ۚ كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ﴿١٨﴾

18. आकाश फट जायेगा उस दिन। उस का वचन पूरा हो कर रहेगा।

إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَن شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ
رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿١٩﴾

19. वास्तव में यह (आयतें) एक शिक्षा हैं। तो जो चाहे अपने पालनहार की ओर राह बना ले।[2]

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِن ثُلُثَيِ
اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ مِّنَ الَّذِينَ
مَعَكَ ۚ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ عَلِمَ أَن
لَّن تُحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۖ فَاقْرَءُوا
مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۚ عَلِمَ أَن سَيَكُونُ

20. निःसंदेह आप का पालनहार जानता है कि आप खड़े होते हैं (तहज्जुद की नमाज़ के लिये) दो तिहाई रात्री के लग-भग, तथा आधी रात और तिहाई रात, तथा एक समूह उन लोगों का जो आप के साथ हैं और

---

[1] अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को गवाह होने के अर्थ के लिये। (देखियेः सूरह बक़रा, आयतः 143, तथा सूरह हज्ज, आयतः 78) इस में चेतावनी है कि यदि तुम ने अवैज्ञा की तो तुम्हारी दशा भी फ़िरऔन जैसी होगी।

[2] अर्थात इन आयतों का पालन कर के अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त कर लें।

مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِى الْاَرْضِ
يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ
يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ فَاقْرَءُوْا
مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ
وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ۚ وَمَا تُقَدِّمُوْا
لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ
هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ۚ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ۖ
اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٢٠

अल्लाह ही हिसाब रखता है रात तथा दिन का। वह जानता है कि तुम पूरी रात नमाज़ के लिये खड़े नहीं हो सकोगे। अतः उस ने दया कर दी तुम पर। तो पढ़ो जितना सरल हो क़ुर्आन में से।[1] वह जानता है कि तुम में कुछ रोगी होंगे और कुछ दूसरे यात्रा करेंगे धरती में खोज करते हुये अल्लाह के अनुग्रह (जीविका) की, और कुछ दूसरे युद्ध करेंगे अल्लाह की राह में, अतः पढ़ो जितना सरल हो उस में से। तथा स्थापना करो नमाज़ की, और ज़कात देते रहो, और ऋण दो अल्लाह को अच्छा ऋण।[2] तथा जो भी आगे भेजोगे भलाई में से तो उसे अल्लाह के पास पाओगे। वही उत्तम और उस का बहुत बड़ा प्रतिफल होगा। और क्षमा माँगते रहो अल्लाह से, वास्तव में वह अति क्षमाशील दयावान् है।

---

1 क़ुर्आन पढ़ने से अभिप्राय तहज्जुद की नमाज़ है। और अर्थ यह है कि रात्री में जितनी नमाज़ हो सके पढ़ लो। हदीस में है कि भक्त अल्लाह के सब से समीप अन्तिम रात्री में होता है। तो तुम यदि हो सके कि उस समय अल्लाह को याद करो तो याद करो। (तिर्मिज़ीः 3579, यह हदीस सहीह है।)

2 अच्छे ऋण से अभिप्राय अपने उचित साधन से अर्जित किये हुये धन को अल्लाह की प्रसन्नता के लिये उस के मार्ग में ख़र्च करना है। इसी को अल्लाह अपने ऊपर ऋण क़रार देता है। जिस का बदला वह सात सौ गुना तक बल्कि उस से भी अधिक प्रदान करेगा।
(देखियेः सूरह बक़रा, आयतः 261)

सूरह मुद्दस्सिर - 74

سُورَةُ المُدَّثِّر

सूरह मुद्दस्सिर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है , इस में 56 आयतें हैं।

- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ((अल मुद्दस्सिर)) कह कर संबोधित किया गया है। अर्थात चादर ओढ़ने वाले। इस लिये इस को यह नाम दिया गया है। और आप को सावधान करने का निर्देश देते हुये अच्छे स्वभाव तथा शुभकर्म की शिक्षा दी गई है।
- आयत 11 से 31 तक कुरैश के प्रमुखों को जो इस्लाम का विरोध कर रहे थे नरक की यातना की धमकी दी गई है। तथा 32 से 48 तक परलोक के बारे में चेतावनी है।
- अन्त में कुर्आन के शिक्षा होने को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि बात दिल में उतर जाये।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. हे चादर ओढ़ने[1] वाले!

يٰٓاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ①

2. खड़े हो जाओ, फिर सावधान करो।

قُمْ فَاَنْذِرْ ②

---

[1] नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर प्रथम वह्यी के पश्चात् कुछ दिनों तक वह्यी नहीं आई। फिर एक बार आप जा रहे थे कि आकाश से एक आवाज़ सुनी। ऊपर देखा तो वही फ़रिश्ता जो आप के पास «हिरा» गुफ़ा में आया था आकाश तथा धरती के बीच एक कुर्सी पर विराजमान था। जिस से आप डर गये। और धरती पर गिर गये। फिर घर आये, और अपनी पत्नी से कहाः मुझे चादर ओढ़ा दो, मुझे चादर ओढ़ा दो। उस ने चादर ओढ़ा दी। और अल्लाह ने यह सूरह उतारी। फिर निरन्तर वह्यी आने लगी। (सहीह बुख़ारीः 4925, 4926, सहीह मुस्लिमः 161) प्रथम वह्यी से आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को नबी बनाया गया। और अब आप पर धर्म के प्रचार का भार रख दिया गया। इन आयतों में आप के माध्यम से मुसलमानों को पवित्र रहने के निर्देश दिये गये हैं।

3. तथा अपने पालनहार की महिमा का वर्णन करो।	وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝٣
4. तथा अपने कपड़ों को पवित्र रखो।	وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝٤
5. और मलीनता को त्याग दो।	وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝٥
6. तथा उपकार न करो इसलिये कि उस के द्वारा अधिक लो।	وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۝٦
7. और अपने पालनहार ही के लिये सहन करो।	وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝٧
8. फिर जब फूँका जायेगा[1] नरसिंघा में।	فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُورِ ۝٨
9. तो उस दिन अति भीषण दिन होगा।	فَذَٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ ۝٩
10. काफ़िरों पर सरल न होगा।	عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُ يَسِيرٍ ۝١٠
11. आप छोड़ दें मुझे और उसे जिस को मैं ने पैदा किया अकेला।	ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ۝١١
12. फिर दे दिया उसे अत्यधिक धन।	وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَمْدُودًا ۝١٢
13. और पुत्र उपस्थित रहने[2] वाले।	وَبَنِينَ شُهُودًا ۝١٣
14. और दिया मैं ने उसे प्रत्येक प्रकार का संसाधन।	وَمَهَّدْتُ لَهُ تَمْهِيدًا ۝١٤
15. फिर भी वह लोभ रखता है कि उसे और अधिक दूँ।	ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ۝١٥
16. कदापि नहीं। वह हमारी आयतों का विरोधी है।	كَلَّا ۖ إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا عَنِيدًا ۝١٦
17. मैं उसे चढ़ाऊँगा कड़ी[3] चढ़ाई।	سَأُرْهِقُهُ صَعُودًا ۝١٧

---

[1] अर्थात प्रलय के दिन।

[2] जो उस की सेवा में उपस्थित रहते हैं। कहा गया है कि इस से अभिप्राय वलीद पुत्र मुग़ीरा है जिस के दस पुत्र थे।

[3] अर्थात कड़ी यातना दूँगा। (इब्ने कसीर)

18. उस ने विचार किया और अनुमान लगाया।[1]	إِنَّهُۥ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۝١٨
19. वह मारा जाये! फिर उस ने कैसा अनुमान लगाया?	فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝١٩
20. फिर (उस पर अल्लाह की) मार! उस ने कैसा अनुमान लगाया?	ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝٢٠
21. फिर पुनः विचार किया।	ثُمَّ نَظَرَ ۝٢١
22. फिर माथे पर बल दिया और मुँह बिदोरा।	ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۝٢٢
23. फिर (सत्य से) पीछे फिरा और घमंड किया।	ثُمَّ أَدْبَرَ وَٱسْتَكْبَرَ ۝٢٣
24. और बोला कि यह तो पहले से चला आ रहा एक जादू है।[2]	فَقَالَ إِنْ هَٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ يُؤْثَرُ ۝٢٤
25. यह तो बस मनुष्य[3] का कथन है।	إِنْ هَٰذَآ إِلَّا قَوْلُ ٱلْبَشَرِ ۝٢٥
26. मैं उसे शीघ्र ही नरक में झोंक दूँगा।	سَأُصْلِيهِ سَقَرَ ۝٢٦
27. और आप क्या जानें कि नरक क्या है।	وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا سَقَرُ ۝٢٧
28. न शेष रखेगी, और न छोड़ेगी।	لَا تُبْقِى وَلَا تَذَرُ ۝٢٨
29. वह खाल झुलसा देने वाली।	لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ۝٢٩
30. नियुक्त हैं उन पर उन्नीस (रक्षक फ़रिश्ते)।	عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ۝٣٠
31. और हम ने नरक के रक्षक फ़रिश्ते	وَمَا جَعَلْنَآ أَصْحَٰبَ ٱلنَّارِ إِلَّا مَلَٰٓئِكَةً

---

[1] क़ुर्आन के संबन्ध में प्रश्न किया गया तो वह सोचने लगा कि कौन सी बात बनाये, और उस के बारे में क्या कहे? (इब्ने कसीर)

[2] अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह किसी से सीख लिया है। कहा जाता है कि वलीद पुत्र मुग़ीरा ने अबू जह्ल से कहा था कि लोगों में क़ुर्आन के जादू होने का प्रचार किया जाये।

[3] अर्थात अल्लाह की वाणी नहीं है।

وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا ۙ
لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَزْدَادَ الَّذِينَ
آمَنُوا إِيمَانًا ۙ وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
وَالْمُؤْمِنُونَ ۙ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ
وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا ۚ
كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن
يَشَاءُ ۚ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ ۚ
وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْبَشَرِ ﴿٣١﴾

ही बनाये हैं। और उन की संख्या को काफ़िरों के लिये परीक्षा बना दिया गया है। ताकि विश्वास कर लें अहले[1] किताब, और बढ़ जायें जो ईमान लाये हैं ईमान में। और संदेह न करें जो पुस्तक दिये गये हैं और ईमान वाले। और ताकि कहें वे जिन के दिलों में (द्विधा का) रोग है तथा काफ़िर[2] कि क्या तात्पर्य है अल्लाह का इस उदाहरण से? ऐसे ही कुपथ करता है अल्लाह जिसे चाहता है, और संमार्ग दर्शाता है जिसे चाहता है। और नहीं जानता है आप के पालनहार की सेनाओं को उस के सिवा कोई और। तथा नहीं है यह (नरक की चर्चा) किन्तु मनुष्य की शिक्षा के लिये।

كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾

32. ऐसी बात नहीं, शपथ है चाँद की!

وَاللَّيْلِ إِذْ أَدْبَرَ ﴿٣٣﴾

33. तथा रात्री की जब व्यतीत होने लगे!

وَالصُّبْحِ إِذَا أَسْفَرَ ﴿٣٤﴾

34. और प्रातः की जब प्रकाशित हो जाये!

إِنَّهَا لَإِحْدَى الْكُبَرِ ﴿٣٥﴾

35. वास्तव में (नरक) एक[3] बहुत बड़ी चीज़ है।

نَذِيرًا لِّلْبَشَرِ ﴿٣٦﴾

36. डराने के लिये लोगों को।

---

[1] क्योंकि यहूदियों तथा ईसाईयों की पुस्तकों में भी नरक के अधिकारियों की यही संख्या बताई गई है।

[2] जब कुरैश ने नरक के अधिकारियों की चर्चा सुनी तो अबू जह्ल ने कहाः हे कुरैश के समूह! क्या तुम में से दस-दस लोग, एक-एक फ़रिश्ते के लिये काफ़ी नहीं हैं? और एक व्यक्ति ने जिसे अपने बल पर बड़ा गर्व था कहा कि 17 को मैं अकेला देख लूँगा। और तुम सब मिल कर दो को देख लेना। (इब्ने कसीर)

[3] अर्थात जैसे रात्री के पश्चात् दिन होता है उसी प्रकार कर्मों का भी परिणाम सामने आना है। और दुष्कर्मों का परिणाम नरक है।

37. उस के लिये तुम में से जो चाहे[1] आगे होना अथवा पीछे रहना।	لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ ٣٧
38. प्रत्येक प्राणी अपने कर्मों के बदले में बंधक है।[2]	كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ٣٨
39. दाहिने वालों के सिवा।	اِلَّآ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ٣٩
40. वह स्वर्गों में होंगे, वह प्रश्न करेंगे।	فِيْ جَنّٰتٍ يَتَسَآءَلُوْنَ ٤٠
41. अपराधियों से।	عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ٤١
42. तुम्हें क्या चीज़ ले गई नरक में।	مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ٤٢
43. वह कहेंगेः हम नहीं थे नमाज़ियों में से।	قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ٤٣
44. और नहीं भोजन कराते थे निर्धन को।	وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ٤٤
45. तथा कुरेद करते थे कुरेद करने वालों के साथ।	وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ٤٥
46. और हम झुठलाया करते थे प्रतिफल के दिन (प्रलय) को।	وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ٤٦
47. यहाँ तक की हमारी मौत आ गई।	حَتّٰىٓ اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ٤٧
48. तो उन्हें लाभ नहीं देगी सिफ़ारिशियों (अभिस्तावकों) की सिफ़ारिश।[3]	فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ٤٨
49. तो उन्हें क्या हो गया है कि इस शिक्षा (कुर्आन) से मुँह फेर रहे हैं?	فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ٤٩
50. मानो वह (जंगली) गधे हैं बिदकाये हुये।	كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ٥٠
51. जो शिकारी से भागे हैं।	فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ٥١

---

[1] अर्थात आज्ञा पालन द्वारा अग्रसर हो जाये, अथवा अवैज्ञा कर के पीछे रह जाये।

[2] यदि सत्कर्म किया तो मुक्त हो जायेगा।

[3] अर्थात नबियों और फ़रिश्तों इत्यादि की। किन्तु जिस से अल्लाह प्रसन्न हो और उस के लिये सिफ़ारिश की अनुमति दे।

52. बल्कि चाहता है प्रत्येक व्यक्ति उन में से कि उसे खुली[1] पुस्तक दी जाये।

53. कदापि यह नहीं (हो सकता) बल्कि वह आख़िरत (परलोक) से नहीं डरते हैं।

54. निश्चय यह (क़ुर्आन) तो एक शिक्षा है।

55. अब जो चाहे शिक्षा ग्रहण करे।

56. और वह शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकते, परन्तु यह कि अल्लाह चाह ले। वही योग्य है कि उस से डरा जाये और योग्य है कि क्षमा कर दे।

بَلْ يُرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾

كَلَّا ۖ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٥٣﴾

كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾

فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ﴿٥٥﴾

وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۚ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾

---

[1] अर्थात वे चाहते हैं कि प्रत्येक के ऊपर वैसे ही पुस्तक उतारी जाये जैसे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतारी गई है। तब वे ईमान लायेंगे। (इब्ने कसीर)

सूरह क़ियामा - 75

سُورَةُ الْقِيَامَةِ

सूरह क़ियामा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 40 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में क़्यामत (प्रलय) की शपथ ली गई है जिस से इस का नाम «सूरह क़ियामा» है।
- इस में प्रलय के निश्चित होने का वर्णन करते हुये संदेहों को दूर किया गया है। और उस की कुछ स्थितियों को प्रस्तुत किया गया है।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को वह्यी ग्रहण करने के विषय में कुछ निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 20 से 25 तक विरोधियों को मायामोह पर चेतावनी देते हुये, प्रलय के दिन सदाचारियों की सफलता तथा दुराचारियों की विफलता दिखाई गई है।
- आयत 26 में मौत की दशा दिखाई गई है।
- आयत 31 से 35 तक प्रलय को न मानने वालों की निन्दा की गई है।
- अन्त में फिर जीवित किये जाने के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ۝

1. मैं शपथ लेता हूँ क़्यामत (प्रलय) के दिन[1] की!

لَآ أُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيَامَةِ ۝١

2. तथा शपथ लेता हूँ निन्दा[2] करने वाली अन्तरात्मा की।

وَلَآ أُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۝٢

---

[1] किसी चीज़ की शपथ लेने का अर्थ होता हैः उस का निश्चित् होना। अर्थात प्रलय का होना निश्चित् है।

[2] मनुष्य के अन्तरात्मा की यह विशेषता है कि वह बुराई करने पर उस की निन्दा करती है।

3. क्या मनुष्य समझता है कि हम एकत्र नहीं कर सकेंगे दोबारा उस की अस्थियों को?	أَيَحْسَبُ الْإِنسَانُ أَلَّن نَّجْمَعَ عِظَامَهُ ﴿٣﴾
4. क्यों नहीं? हम सामर्थ्यवान हैं इस बात पर कि सीधी कर दें उस की ऊंगलियों की पोर-पोर।	بَلَىٰ قَادِرِينَ عَلَىٰ أَن نُّسَوِّيَ بَنَانَهُ ﴿٤﴾
5. बल्कि मनुष्य चाहता है कि वह कुकर्म करता रहे अपने आगे[1] भी।	بَلْ يُرِيدُ الْإِنسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ﴿٥﴾
6. वह प्रश्न करता है कि कब आना है प्रलय का दिन?	يَسْأَلُ أَيَّانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ ﴿٦﴾
7. तो जब चुंधिया जायेगी आँख।	فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ﴿٧﴾
8. और गहना जायेगा चाँद।	وَخَسَفَ الْقَمَرُ ﴿٨﴾
9. और एकत्र कर दिये[2] जायेंगे सूर्य और चाँद।	وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ﴿٩﴾
10. कहेगा मनुष्य उस दिन कि कहाँ है भागने का स्थान?	يَقُولُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ﴿١٠﴾
11. कदापि नहीं, कोई शरणागार नहीं।	كَلَّا لَا وَزَرَ ﴿١١﴾
12. तेरे पालनहार की ओर ही उस दिन जा कर रुकना है।	إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ﴿١٢﴾
13. सूचित कर दिया जायेगा मनुष्य को उस दिन उस से जो उस ने आगे भेजा, तथा जो पीछे[3] छोड़ा।	يُنَبَّأُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ﴿١٣﴾
14. बल्कि मनुष्य स्वयं अपने विरुद्ध एक	بَلِ الْإِنسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ﴿١٤﴾

---

[1] अर्थात वह प्रलय तथा हिसाब का इन्कार इसलिये है ताकि वह पूरी आयु कुकर्म करता रहे।

[2] अर्थात दोनों पश्चिम से अंधेरे हो कर निकलेंगे।

[3] अर्थात संसार में जो कर्म किया। और जो करना चाहिये था फिर भी नहीं किया।

खुला[1] प्रमाण है।	
15. चाहे वह कितने ही बहाने बनाये।	وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ۝١٥
16. हे नबी! आप न हिलायें[2] अपनी ज़ुबान, ताकि शीघ्र याद कर लें इस क़ुर्आन को।	لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ۝١٦
17. निश्चय हम पर है उसे याद कराना और उस को पढ़ाना।	اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ۝١٧
18. अतः जब हम उसे पढ़ लें तो आप उस के पीछे पढ़ें।	فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ۝١٨
19. फिर हमारे ही ऊपर है उस का अर्थ बताना।	ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ۝١٩
20. कदापि नहीं[3], बल्कि तुम प्रेम करते हो शीघ्र प्राप्त होने वाली चीज़ (संसार) से।	كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ۝٢٠
21. और छोड़ देते हो परलोक को।	وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ۝٢١
22. बहुत से मुख उस दिन प्रफुल्ल होंगे।	وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ نَّاضِرَةٌ ۝٢٢
23. अपने पालनहार की ओर देख रहे होंगे।	اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۝٢٣
24. और बहुत से मुख उदास होंगे।	وَوُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ بَاسِرَةٌ ۝٢٤
25. वह समझ रहे होंगे कि उन के साथ कड़ा व्यवहार किया जायेगा।	تَظُنُّ اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۝٢٥

---

[1] अर्थात वह अपने अपराधों को स्वयं भी जानता है क्योंकि पापी का मन स्वयं अपने पाप की गवाही देता है।

[2] हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रिश्ते जिब्रील से वह्यी पूरी होने से पहले इस भय से उसे दुहराने लगते कि कुछ भूल न जायें। उसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारीः 4928, 4929)
इसी विषय को सूरह ताहा तथा सूरह आला में भी दुहराया गया है।

[3] यहाँ से बात फिर काफ़िरों की ओर फिर रही है।

26. कदापि नहीं[1], जब पहुँचेगी प्राण हंसलियों (गलों) तक।	كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۙ ٢٦
27. और कहा जायेगाः कौन झाड़-फूँक करने वाला है?	وَقِيْلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ۙ ٢٧
28. और विश्वास हो जायेगा कि यह (संसार से) जुदाई का समय है।	وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ۙ ٢٨
29. और मिल जायेगी पिंडली- पिंडली[2] से।	وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ۙ ٢٩
30. तेरे पालनहार की ओर उसी दिन जाना है।	اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِنِ الْمَسَاقُ ؕ ٣٠
31. तो न उस ने सत्य को माना और न नमाज़ पढ़ी।	فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ۙ ٣١
32. किन्तु झुठलाया और मुँह फेर लिया।	وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۙ ٣٢
33. फिर गया अपने परिजनों की ओर अकड़ता हुआ।	ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ؕ ٣٣
34. शोक है तेरे लिये, फिर शोक है।	اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ۙ ٣٤
35. फिर शोक है तेरे लिये, फिर शोक है।	ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ؕ ٣٥
36. क्या मनुष्य समझता है कि वह छोड़ दिया जायेगा वयर्थ?[3]	اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ؕ ٣٦
37. क्या वह नहीं था वीर्य की बूंद जो (गर्भाश्य में) बूंद-बूंद गिराई जाती है?	اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ۙ ٣٧
38. फिर वह बंधा रक्त हुआ, फिर	ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ۙ ٣٨

---

[1] अर्थात यह विचार सहीह नहीं कि मौत के पश्चात् सड़-गल जायेंगे और दोबारा जीवित नहीं किये जायेंगे। क्योंकि आत्मा रह जाती है जो मौत के साथ ही अपने पालनहार की ओर चली जाती है।

[2] अर्थात मौत का समय आ जायेगा जो निरन्तर दुख का समय होगा। (इब्ने कसीर)

[3] अर्थात न उसे किसी बात का आदेश दिया जायेगा और न रोका जायेगा और न उस से कर्मों का हिसाब लिया जायेगा।

अल्लाह ने उसे पैदा किया और उसे बराबर बनाया।

39. फिर उस का जोड़ाः नर और नारी बनाया।

فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۝٣٩

40. तो क्या वह सामर्थ्यवान नहीं कि मुर्दों को जीवित करे दे?

اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ
الْمَوْتٰى ۝٤٠

सूरह दहर - 76

سُورَةُ الدَّهْرِ

सूरह दहर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 31 आयतें हैं।

- इस सूरह में यह शब्द आने के कारण इस का नाम (सूरह दहर) है। इस का दूसरा नाम (सूरह इन्सान) भी है। दहर का अर्थः ((युग)) है।
- इस में मनुष्य की उत्पत्ति का उद्देश्य बताया गया है। और काफ़िरों के लिये कड़ी यातना का एलान किया गया है।
- आयत 5 से 22 तक सदाचारियों के भारी प्रतिफल का वर्णन है। और 23 से 26 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धैर्य, नमाज़ तथा तस्बीह का निर्देश दिया गया है। इस के पश्चात् उन को चेतावनी दी गई है जो परलोक से अचेत हो कर मायामोह में लिप्त हैं।
- अन्त में कुर्आन की शिक्षा मान लेने की प्रेरणा दी गई है। ताकि लोग अल्लाह की दया में प्रवेश करें। और विरोधियों को दुःखदायी यातना की चेतावनी दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. क्या व्यतीत हुआ है मनुष्य पर युग का एक समय जब वह कोई विचर्चित[1] वस्तु न था?

هَلْ أَتٰى عَلَى الْإِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ١

2. हम ने ही पैदा किया मनुष्य को मिश्रित (मिले हुये) वीर्य[2] से, ताकि उस की परीक्षा लें। और बनाया उसे सुनने तथा देखने वाला।

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ٢

---

1 अर्थात उस का कोई अस्तित्व न था।

2 अर्थात नर-नारी के मिश्रित वीर्य से।

3. हम ने उसे राह दर्शा दी।[1] (अब) वह चाहे तो कृतज्ञ बने अथवा कृतघ्न।	إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ٣
4. निःसंदेह हम ने तय्यार की है काफ़िरों (कृतघ्नों) के लिये ज़ंजीर तथा तौक़ और दहकती अग्नि।	إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَٰفِرِينَ سَلَٰسِلَا۟ وَأَغْلَٰلًا وَسَعِيرًا ٤
5. निश्चय सदाचारी (कृतज्ञ) पियेंगे ऐसे प्याले से जिस में कपूर मिश्रित होगा।	إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِن كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ٥
6. यह एक स्रोत होगा जिस से अल्लाह के भक्त पियेंगे। उसे बहा ले जायेंगे (जहाँ चाहेंगे)।[2]	عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ٦
7. जो (संसार में) पूरी करते रहे मनौतियाँ[3] और डरते रहे उस दिन से[4] जिस की आपदा चारों ओर फैली हुयी होगी।	يُوفُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ٧
8. और भोजन कराते रहे उस (भोजन) को प्रेम करने के बावजूद, निर्धन तथा अनाथ और बंदी को।	وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ٨
9. (अपने मन में यह सोच कर) हम तुम्हें भोजन कराते हैं केवल अल्लाह की प्रसन्नता के लिये। तुम से नहीं चाहते हैं कोई बदला और न कोई कृतज्ञता।	إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ٩
10. हम डरते हैं अपने पालनहार से, उस	إِنَّا نَخَافُ مِن رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ١٠

---

[1] अर्थात नबियों तथा आकाशीय पुस्तकों द्वारा, और दोनों का परिणाम बता दिया गया।

[2] अर्थात उस को जिधर चाहेंगे मोड़ ले जायेंगे। जैसेः घर, बैठक आदि।

[3] नज़र (मनौती) का अर्थ हैः अल्लाह के समिप्य के लिये कोई कर्म अपने ऊपर अनिवार्य कर लेना। और किसी देवी-देवता तथा पीर फ़क़ीर के लिये मनौती मानना शिर्क है। जिस को अल्लाह कभी भी क्षमा नहीं करेगा। अर्थात अल्लाह के लिये जो भी मनौतीयाँ मानते रहे उसे पूरी करते रहे।

[4] अर्थात प्रलय और हिसाब के दिन से।

दिन से जो अति भीषण तथा घोर होगा।

11. तो बचा लिया अल्लाह ने उन्हें उस दिन की आपदा से और प्रदान कर दिया प्रफुल्लता तथा प्रसन्नता।

فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰىهُمْ نَضْرَةً
وَّسُرُوْرًا ١١

12. और उन्हें प्रतिफल दिया उन के धैर्य के बदले स्वर्ग तथा रेशमी वस्त्र।

وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ١٢

13. वह तकिये लगाये उस में तख़्तों पर बैठे होंगे। न उस में धूप देखेंगे न कड़ा शीत।

مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا
شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ١٣

14. और झुके होंगे उन पर उस (स्वर्ग) के साये। और बस में किये होंगे उस के फलों के गुच्छे पूर्णतः।

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ١٤

15. तथा फिराये जायेंगे उन पर चाँदी के बर्तन तथा प्याले जो शीशों के होंगे।

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ
قَوَارِيْرَا۠ ١٥

16. चाँदी के शीशों के जो एक अनुमान से भरेंगे।[1]

قَوَارِيْرَا۠ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ١٦

17. और पिलाये जायेंगे उस में ऐसे भरे प्याले जिस में सोंठ मिली होगी।

وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ١٧

18. यह एक स्रोत है उस (स्वर्ग) में जिस का नाम सलसबील है।

عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ١٨

19. और (सेवा के लिये) फिर रहे होंगे उन पर सदावासी बालक, जब तुम उन्हें देखोगे तो उन्हें समझोगे कि विखरे हुये मोती हैं।

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ
حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ١٩

20. तथा जब तुम वहाँ देखोगे तो देखोगे बड़ा सुख तथा भारी राज्य।

وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ٢٠

---

[1] अर्थात सेवक उसे ऐसे अनुमान से भरेंगे कि न आवश्यकता से कम होंगे और न अधिक।

21. उन के ऊपर रेशमी हरे महीन तथा दबीज़ वस्त्र होंगे। और पहनाये जायेंगे उन्हें चाँदी के कंगन, और पिलायेगा उन्हें उन का पालनहार पवित्र पेय।

عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ ۖ
وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا
طَهُوْرًا ﴿٢١﴾

22. (तथा कहा जायेगा)ः यही है तुम्हारे लिये प्रतिफल और तुम्हारे प्रयास का आदर किया गया।

اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿٢٢﴾

23. वास्तव में हम ने ही उतारा है आप पर क़ुर्आन थोड़ा - थोड़ा कर[1] के।

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ﴿٢٣﴾

24. अतः आप धैर्य से काम लें अपने पालनहार के आदेशानुसार और बात न मानें उन में से किसी पापी तथा कृतघ्न की।

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ﴿٢٤﴾

25. तथा स्मरण करें अपने पालनहार के नाम का प्रातः तथा संध्या (के समय)।

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٢٥﴾

26. तथा रात्री में सज्दा करें उस के समक्ष और उस की पवित्रता का वर्णन करें रात्री के लम्बे समय तक।

وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ﴿٢٦﴾

27. वास्तव में यह लोग मोह रखते हैं संसार से, और छोड़ रहे हैं अपने पीछे एक भारी दिन[2] को।

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ
وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ﴿٢٧﴾

28. हम ने ही उन्हें पैदा किया है और सुदृढ़ किये हैं उन के जोड़-बंद। तथा जब हम चाहें बदला दें उन[3] के जैसे (दूसरों को)।

نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا
بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا ﴿٢٨﴾

---

[1] अर्थात नबूवत की तेईस वर्ष की अवधि में, और ऐसा क्यों किया गया इस के लिये देखियेः सूरह बनी इस्राईल, आयतः **106**।

[2] इस से अभिप्राय प्रलय का दिन है।

[3] अर्थात इन का विनाश कर के इन के स्थान पर दूसरों को पैदा कर दे।

29. निश्चय यह (सूरह) एक शिक्षा है। अतः जो चाहे अपने पालनहार की ओर (जाने की) राह बना ले।

30. और तुम अल्लाह की इच्छा के बिना कुछ भी नहीं चाह सकते।[1] वास्तव में अल्लाह सब चीज़ों और गुणों को जानने वाला है।

31. वह प्रवेश देता है जिसे चाहे अपनी दया में। और अत्याचारियों के लिये उस ने तय्यार की है दुःखदायी यातना।

إِنَّ هَٰذِهِۦ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَن شَآءَ ٱتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِۦ
سَبِيلًا ﴿٢٩﴾

وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ
عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٣٠﴾

يُدْخِلُ مَن يَشَآءُ فِى رَحْمَتِهِۦ ۚ وَٱلظَّٰلِمِينَ
أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًۢا ﴿٣١﴾

---

[1] अर्थात कोई इस बात पर समर्थ नहीं कि जो चाहे कर ले। जो भलाई चाहता हो तो अल्लाह उसे भलाई की राह दिखा देता है।

सूरह मुर्सलात - 77

سُورَةُ المُرْسَلَات

सूरह मुर्सलात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में **50** आयतें हैं।

- इस की आयत **1** में मुर्सलात (हवाओं) की शपथ ली गई है। इसलिये इस का नाम सूरह मुर्सलात है। इस में झक्कड़ को प्रलय के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है। फिर प्रलय का भ्यावः चित्र दिखाया गया है।
- आयत **16** से **28** तक प्रतिफल के दिन के होने के प्रमाण प्रस्तुत करते हुये उस पर सोच-विचार का आमंत्रण दिया गया है।
- इस में क़्यामत के झुठलाने वालों को उस दिन जिस दुर्दशा का सामना होगा उस का चित्रण किया गया है। और आयत **41** से **44** तक सदाचारियों के सुफल का चित्रण किया गया है।
- अन्त में झुठलाने वालों की अपराधिक नीति पर कड़ी चेतावनी दी गई है।
- अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि हम मिना की वादी में थे। और सूरह मुर्सलात उतरी। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसे पढ़ रहे थे और हम उसे आप से सीख रहे थे। (सहीह बुख़ारीः **4930, 4931**)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
1. शपथ है भेजी हुई निरन्तर धीमी वायुओं की!	وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ۝١
2. फिर झक्कड़ वाली हवाओं की!	فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ۝٢
3. और बादलों को फैलाने वालियों की![1]	وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ۝٣
4. फिर अन्तर करने[2] वालों की।	فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ۝٤

---

[1] अर्थात जो हवायें अल्लाह के आदेशानुसार बादलों को फैलाती हैं।

[2] अर्थात सत्योसत्य तथा वैध और अवैध के बीच अन्तर करने के लिये आदेश लाते हैं।

5. फिर पहुँचाने वालों की वह्यी (प्रकाशना[1]) को!

فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۙ ٥

6. क्षमा के लिये अथवा चेतावनी[2] के लिये!

عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۙ ٦

7. निश्चय जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है वह अवश्य आनी है।

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ۗ ٧

8. फिर जब तारे धुमिल हो जायेंगे।

فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ۙ ٨

9. तथा जब आकाश खोल दिया जायेगा।

وَاِذَا السَّمَاۤءُ فُرِجَتْ ۙ ٩

10. तथा जब पर्वत चूर-चूर कर के उड़ा दिये जायेंगे।

وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۙ ١٠

11. और जब रसूलों का एक समय निर्धारित किया जायेगा।[3]

وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ۗ ١١

12. किस दिन के लिये इस को निलम्बित रखा गया है?

لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ۗ ١٢

13. निर्णय के दिन के लिये।

لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۚ ١٣

14. आप क्या जानें कि क्या है वह निर्णय का दिन?

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۗ ١٤

15. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।

وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ١٥

16. क्या हम ने विनाश नहीं कर दिया (अवैज्ञा के कारण) अगली जातियों का?

اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ۗ ١٦

17. फिर पीछे लगा[4] देंगे उन के पिछलों को।

ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ١٧

---

[1] अर्थात जो वह्यी (प्रकाशना) ग्रहण कर के उसे रसूलों तक पहुँचाते हैं।

[2] अर्थात ईमान लाने वालों के लिये क्षमा का वचन तथा काफ़िरों के लिये यातना की सूचना लाते हैं।

[3] उन के तथा उन के समुदायों के बीच निर्णय करने के लिये। और रसूल गवाही देंगे।

[4] अर्थात उन्हीं के समान यातना-ग्रस्त कर देंगे।

18. इसी प्रकार हम करते हैं अपराधियों के साथ।	كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ١٨
19. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ١٩
20. क्या हम ने पैदा नहीं किया है तुम्हें तुच्छ जल (वीर्य) से?	أَلَمْ نَخْلُقكُّم مِّن مَّاءٍ مَّهِينٍ ٢٠
21. फिर हम ने रख दिया उसे एक सुदृढ़ स्थान (गर्भाशय) में।	فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ٢١
22. एक निश्चित अवधि तक।[1]	إِلَىٰ قَدَرٍ مَّعْلُومٍ ٢٢
23. तो हम ने सामर्थ्य[2]रखा, अतः हम अच्छा सामर्थ्य रखने वाले हैं।	فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ الْقَادِرُونَ ٢٣
24. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिय!	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ٢٤
25. क्या हम ने नहीं बनाया धरती को समेट[3] कर रखने वाली।	أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ٢٥
26. जीवित तथा मुर्दों को।	أَحْيَاءً وَأَمْوَاتًا ٢٦
27. तथा बना दिये हम ने उस में बहुत से ऊँचे पर्वत। और पिलाया हम ने तुम्हें मीठा जल।	وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شَامِخَاتٍ وَأَسْقَيْنَاكُم مَّاءً فُرَاتًا ٢٧
28. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ٢٨
29. (कहा जायेगा): चलो उस (नरक) की ओर जिसे तुम झुठलाते रहे।	انطَلِقُوا إِلَىٰ مَا كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ٢٩

---

[1] अर्थात गर्भ की अवधि तक।

[2] अर्थात उसे पैदा करने पर।

[3] अर्थात जब तक लोग जीवित रहते हैं तो उस के ऊपर रहते तथा बस्ते हैं। और मरण के पश्चात् उसी में चले जाते हैं।

30. चलो ऐसी छाया[1] की ओर जो तीन शाखाओं वाली है।	اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ ذِيْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ۙ﴿٣٠﴾
31. जो न छाया देगी और न ज्वाला से बचायेगी।	لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ مِنَ اللَّهَبِ ۭ﴿٣١﴾
32. वह (अग्नि) फेंकती होगी चिँगारियाँ भवन के समान।	اِنَّهَا تَرْمِيْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ۚ﴿٣٢﴾
33. जैसे वह पीले ऊँट हों।	كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ۭ﴿٣٣﴾
34. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!	وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٤﴾
35. यह वह दिन है कि वह बोल[2] नहीं सकेंगे।	هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ۙ﴿٣٥﴾
36. और न उन्हें अनुमति दी जायेगी कि वह बहाने बना सकें।	وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ﴿٣٦﴾
37. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!	وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٧﴾
38. यह निर्णय का दिन है, हम ने एकत्र कर लिया है तुम को तथा पूर्व के लोगों को।	هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۚ جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾
39. तो यदि तुम्हारे पास कोई चाल[3] हो तो चल लो?	فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيْدُوْنِ ﴿٣٩﴾
40. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!	وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۧ﴿٤٠﴾
41. निःसंदेह आज्ञाकारी उस दिन छाँव तथा जल स्रोतों में होंगे।	اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ ۙ﴿٤١﴾

---

[1] छाया से अभिप्रायः नरक के धुवें की छाया है। जो तीन दिशाओं में फैला होगा।

[2] अर्थात उन के विरुद्ध ऐसे तर्क प्रस्तुत कर दिये जायेंगे कि वह अवाक रह जायेंगे।

[3] अर्थात मेरी पकड़ से बचने की।

42. तथा मन चाहे फलों में।	وَفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٤٢﴾
43. खाओ तथा पिओ मनमानी उन कर्मों के बदले जो तुम करते रहे।	كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾
44. हम इसी प्रकार प्रतिफल देते हैं।	إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٤٤﴾
45. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٥﴾
46. (हे झुठलाने वालो!) तुम खा लो तथा आनन्द ले लो कुछ[1] दिन। वास्तव में तुम अपराधी हो।	كُلُوا وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُم مُّجْرِمُونَ ﴿٤٦﴾
47. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٧﴾
48. जब उन से कहा जाता है कि (अल्लाह के समक्ष) झुको तो झुकते नहीं।	وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ﴿٤٨﴾
49. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾
50. तो (अब) वह किस बात पर इस (कुर्आन) के पश्चात् ईमान[2] लायेंगे?	فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٠﴾

---

1 अर्थात संसारिक जीवन में।

2 अर्थात जब अल्लाह की अन्तिम पुस्तक पर ईमान नहीं लाते तो फिर कोई दूसरी पुस्तक नहीं हो सकती जिस पर वह ईमान लायें। इसलिये कि अब कोई और पुस्तक आसमान से आने वाली नहीं है।

सूरह नबा[1] - 78

سُورَةُ النَّبَإِ

सूरह नबा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 40 आयतें हैं।

- इस सूरह का नाम ((नबा)) है जिस का अर्थ हैः महत्व पूर्ण सूचना। जिस से अभिप्राय प्रलय तथा फिर से जीवित किये जाने की सूचना है।[1]
- इस की आयत 1 से 5 तक में उन को चेतावनी दी गई है जो क़्यामत का उपहास करते हैं कि वह समय दूर नहीं जब वह आ जायेगी और वह अल्लाह के सामने उपस्थित होंगे।
- आयत 6 से 16 तक में अल्लाह की शक्ति की निशानियाँ बताई गई हैं। जो मरण के पश्चात् जीवन के होने का प्रमाण हैं और गवाही देती हैं कि प्रतिफल का दिन अनिवार्य है।

---

1 इस सूरह में प्रलय (क़्यामत) तथा परलोक (आख़िरत) के विश्वास पर बल दिया गया है। तथा इन पर विश्वास करने और न करने का परिणाम बताया गया है। मक्का के वासी इस की हँसी उड़ाते थे। कोई कहता कि यह हो ही नहीं सकता। किसी को संदेह था। किसी का विचार था कि यदि ऐसा हुआ तो भी हमारे देवी देवता हमारी अभिस्तावना कर देंगे, जैसा कि आगामी आयतों से विद्वित होता है।

"भारी सूचना" का अर्थः क़ुर्आन द्वारा दी गई प्रलय और परलोक की सूचना है। प्रलय और परलोक पर विश्वास सत्य धर्म की मूल आस्था है। यदि प्रलय और परलोक पर विश्वास न हो तो धर्म का कोई महत्व नहीं रह जाता। क्योंकि जब कर्म का कोई फल ही न हो, और न कोई न्याय और प्रतिकार का दिन हो तो फिर सभी अपने स्वार्थ के लिये मनमानी करने के लिये आज़ाद होंगे, और अत्याचार तथा अन्याय के कारण पूरा मानव संसार नरक बन जायेगा।

इन प्रश्नात्मक वाक्यों में प्रकृति द्वारा मानव जाति के प्रतिपालन जीवन रक्षा और सुख सुविधा की जिस व्यवस्था की चर्चा की गई है उस पर विचार किया जाये तो इस का उत्तर यही होगा कि यह व्यवस्थापक के बिना नहीं हो सकती। और पूरी प्रकृति एक निर्धारित नियमानुसार काम कर रही है। तो जिस के लिये यह सब हो रहा है उस का भी कोई स्वाभाविक कर्तव्य अवश्य होगा जिस की पूछ होगी। जिस के लिये न्याय और प्रतिकार का दिन होना चाहिये जिस में सब को न्याय पूर्वक प्रतिकार दिया जाये। और जिस शक्ति ने यह सारी व्यवस्था की है उस दिन को निर्धारित करना भी उसी का काम है।

- आयत 17 से 20 तक में बताया गया है कि प्रतिफल का दिन निश्चित समय पर होगा। उस दिन आकाश तथा धरती की व्यवस्था में भारी परिवर्तन हो जायेगा और सब मनुष्य अल्लाह के न्यायालय की ओर चल पड़ेंगे।
- आयत 21 से 36 तक में दुराचारियों के दुष्परिणाम तथा सदाचारियों के शुभपरिणाम को बताया है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के न्यायालय में उपस्थिति का चित्र दिखाया गया है और यह बताया गया है कि सिफ़ारिश के बल पर कोई जवाबदेही से नहीं बच सकेगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
1. वे आपस में किस विषय में प्रश्न कर रहे हैं?	عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ①
2. बहुत बड़ी सूचना के विषय में।	عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ②
3. जिस में मतभेद कर रहे हैं।	الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ③
4. निश्चय वे जान लेंगे।	كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ④
5. फिर निश्चय वे जान लेंगे।[1]	ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ⑤
6. क्या हम ने धरती को पालना नहीं बनाया?	اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ⑥
7. और पर्वतों को मेख़?	وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ⑦
8. तथा तुम्हें जोड़े जोड़े पैदा किया।	وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ⑧
9. तथा तुम्हारी निद्रा को स्थिरता (आराम) बनाया।	وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ⑨

---

1 (1-5) इन आयतों में उन को धिक्कारा गया है, जो प्रलय की हँसी उड़ाते हैं। जैसे उन के लिये प्रलय की सूचना किसी गंभीर चिन्ता के योग्य नहीं। परन्तु वह दिन दूर नहीं जब प्रलय उन के आगे आ जायेगी और वे विश्व विधाता के सामने उत्तरदायित्व के लिये उपस्थित होंगे।

10. और रात को वस्त्र बनाया।	وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ۙ﴿١٠﴾
11. और दिन को कमाने के लिये बनाया।	وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۪﴿١١﴾
12. तथा हम ने तुम्हारे ऊपर सात दृढ़ आकाश बनाये।	وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۙ﴿١٢﴾
13. और एक दमकता दीप (सूर्य) बनाया।	وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ۪﴿١٣﴾
14. और बादलों से मूसलाधार वर्षा की।	وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ۙ﴿١٤﴾
15. ताकि उस से अन्न और वनस्पति उपजायें।	لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ۙ﴿١٥﴾
16. और घने घने बाग़।[1]	وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ۭ﴿١٦﴾
17. निश्चय निर्णय (फ़ैसले) का दिन निश्चित है।	اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ۙ﴿١٧﴾
18. जिस दिन सूर में फूँका जायेगा। फिर तुम दलों ही दलों में चले आओगे।	يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ۙ﴿١٨﴾
19. और आकाश खोल दिया जायेगा तो उसमें द्वार ही द्वार हो जायेंगे।	وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ۙ﴿١٩﴾
20. और पर्वत चला दिये जायेंगे तो वे मरीचिका बन जायेंगे।[2]	وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۭ﴿٢٠﴾

---

[1] (6-16) इन आयतों में अल्लाह की शक्ति प्रतिपालन (रुबूबिय्यत) और प्रज्ञा के लक्षण दर्शाये गये हैं जो यह साक्ष्य देते हैं कि प्रतिकार (बदले) का दिन आवश्यक है, क्योंकि जिस के लिये इतनी बड़ी व्यवस्था की गई हो और उसे कर्मों के अधिकार भी दिये गये हों तो उस के कर्मों का पुरस्कार या दण्ड तो मिलना ही चाहिये।

[2] (17-20) इन आयतों में बताया जा रहा है कि निर्णय का दिन अपने निश्चित समय पर आकर रहेगा, उस दिन आकाश तथा धरती में एक बड़ी उथल पुथल होगी। इस के लिये सूर में एक फूँक मारने की देर है। फिर जिस की सूचना दी जा रही है तुम्हारे सामने आ जायेगी। तुम्हारे मानने या न मानने का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। और सब अपना हिसाब देने के लिये अल्लाह के न्यायालय की ओर चल पड़ेंगे।

21. वास्तव में नरक घात में है।	إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ٢١
22. जो दुराचारियों का स्थान है।	لِّلطَّٰغِينَ مَـَٔابًا ٢٢
23. जिस में वे असंख्य वर्षों तक रहेंगे।	لَّٰبِثِينَ فِيهَآ أَحْقَابًا ٢٣
24. उस में ठंडी तथा पेय (पीने की चीज़) नहीं चखेंगे।	لَّا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ٢٤
25. केवल गर्म पानी और पीप रक्त के।	إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ٢٥
26. यह पूरा पूरा प्रतिफल है।	جَزَآءً وِفَاقًا ٢٦
27. निःसंदेह वे हिसाब की आशा नहीं रखते थे।	إِنَّهُمْ كَانُوا۟ لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ٢٧
28. तथा वे हमारी आयतों को झुठलाते थे।	وَكَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا كِذَّابًا ٢٨
29. और हम ने सब विषय लिख कर सुरक्षित कर लिये हैं।	وَكُلَّ شَىْءٍ أَحْصَيْنَٰهُ كِتَٰبًا ٢٩
30. तो चखो, हम तुम्हारी यातना अधिक ही करते रहेंगे।[1]	فَذُوقُوا۟ فَلَن نَّزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ٣٠
31. वास्तव में जो डरते हैं उन्हीं के लिये सफलता है।	إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ٣١
32. बाग़ तथा अँगूर हैं।	حَدَآئِقَ وَأَعْنَٰبًا ٣٢
33. और नवयुवति कुमारियाँ।	وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ٣٣
34. और छलकते प्याले।	وَكَأْسًا دِهَاقًا ٣٤
35. उस में बकवाद और मिथ्या बातें नहीं सुनेंगे।	لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَّٰبًا ٣٥

---

1 (21-30) इन आयतों में बताया गया है कि जो हिसाब की आशा नहीं रखते और हमारी आयतों को नहीं मानते हम ने उन के एक एक करतूत को गिन कर अपने यहाँ लिख रखा है। और उन की ख़बर लेने के लिये नरक घात लगाये तैयार है, जहाँ उन के कुकर्मों का भरपूर बदला दिया जायेगा।

36. यह तुम्हारे पालनहार की ओर से भरपूर पुरस्कार है।

جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ﴿٣٦﴾

37. जो आकाश, धरती तथा जो उन के बीच है का अति करुणामय पालनहार है। जिस से बात करने का वे साहस नहीं कर सकेंगे।

رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ
لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾

38. जिस दिन रूह (जिब्रील) तथा फ़रिश्ते पंक्तियों में खड़े होंगे, वही बात कर सकेगा जिसे रहमान (अल्लाह) आज्ञा देगा, और सहीह बात करेगा।

يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۙ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ
اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾

39. वह दिन निः संदेह होना ही है। अतः जो चाहे अपने पालनहार की ओर (जाने का) ठिकाना बना ले।[1]

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ
مَاٰبًا ﴿٣٩﴾

40. हम ने तुम को समीप यातना से सावधान कर दिया जिस दिन इन्सान अपना करतूत देखेगा, और काफ़िर (विश्वास हीन) कहेगा कि काश मैं मिट्टी हो जाता![2]

اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۖۚ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ
مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ
تُرٰبًا ﴿٤٠﴾

---

1 (37-39) इन आयतों में अल्लाह के न्यायालय में उपस्थिति (हाज़िरी) का चित्र दिखाया गया है। और जो इस भ्रम में पड़े हैं कि उन के देवी देवता आदि अभिस्तावना करेंगे उन को सावधान किया गया है कि उस दिन कोई बिना उस की आज्ञा के मुँह नहीं खोलेगा और अल्लाह की आज्ञा से अभिस्तावना भी करेगा तो उसी के लिये जो संसार में सत्य वचन "ला इलाहा इल्लल्लाह" को मानता हो। अल्लाह के द्रोही और सत्य के विरोधी किसी अभिस्तावना के योग्य नहीं होंगे।

2 (40) बात को इस चेतावनी पर समाप्त किया गया है कि जिस दिन के आने की सूचना दी जा रही है, उस का आना सत्य है, उसे दूर न समझो। अब जिस का दिल चाहे इसे मान कर अपने पालनहार की ओर मार्ग बना ले। परन्तु इस चेतावनी के होते जो इन्कार करेगा उस का किया धरा सामने आयेगा तो पछता पछता कर यह कामना करेगा कि मैं संसार में पैदा ही न होता। उस समय इस संसार के बारे में उस का यह विचार होगा जिस के प्रेम में आज वह परलोक से अंधा बना हुआ है।

सूरह नाज़िआत[1] - 79

سُورَةُ النَّازِعَاتِ

सूरह नाज़िआत के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में **46** आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((अन्नाज़िआत)) शब्द से हुआ है। जिस का अर्थ हैः प्राण खींचने वाले फ़रिश्ते, इसी से इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- इस की आयत **1** से **14** तक में प्रतिफल के दिन पर गवाही प्रस्तुत की गई है। फिर क़्यामत का चित्र दिखाते हुये उस का इन्कार करने वालों की आपत्ति की चर्चा की गई है।
- आयत **15** से **26** तक में फ़िरऔन के मूसा (अलैहिस्सलाम) की बात न मानने के शिक्षाप्रद परिणाम को बताया गया है जो प्रतिफल के होने का ऐतिहासिक प्रमाण है।

---

[1] इस सूरह का विषय प्रलय तथा दोबारा उठाये जाने का वर्णन है। और इस में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबी न मानने के दुष्परिणाम से सावधान किया गया है। और फ़रिश्तों के कार्यों की चर्चा कर के यह विश्वास दिलाया गया है कि प्रलय अवश्य आयेगी, और दूसरा जीवन हो कर रहेगा। यही फरिश्ते अल्लाह के आदेश से इस विश्व की व्यवस्था को ध्वस्त कर देंगे। यह कार्य जिसे असंभव समझा जा रहा है अल्लाह के लिये अति सरल है। एक क्षण में वह संसार को विलय कर देगा और दूसरे क्षण में, सहसा दूसरे संसार में स्वंय को जीवित पाओगे।

फिर फ़िरऔन की कथा का वर्णन कर के नबियों (ईश दूतों) को न मानने का दुष्परिणाम बताया गया है जिस से शिक्षा लेनी चाहिये।

27 से **33** तक परलोक तथा दोबारा उठाये जाने का वर्णन है।

34 से **41** तक बताया गया है कि परलोक के स्थायी जीवन का निर्णय इस आधार पर होगा कि किस ने आज्ञा का उल्लंघन किया है। और माया मोह को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया, तथा किस ने अपने पालनहार के सामने खड़े होने का भय किया। और मनमानी करने से बचा। यह समय अवश्य आना है। अब जिस के जो मन में आये करे। जो इसी संसार को सब कुछ समझते थे यह अनुभव करेंगे कि वह संसार में मात्र पल भर ही रहे, उस समय समझ में आयेगा कि इस पल भर के सुख के लिये उस ने सदा के लिये अपने भविष्य का विनाश कर लिया।

- आयत 34 से 41 तक में क़्यामत के दिन अवैज्ञाकारियों की दुर्दशा और आज्ञाकारियों के उत्तम परिणाम को दिखाया गया है।
- अन्त में क़्यामत के नकारने वालों का जवाब दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
1. शपथ है उन फ़रिश्तों की जो डूब कर (प्राण) निकालते हैं!	وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۙ﴿١﴾
2. और जो सरलता से (प्राण) निकालते हैं।	وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۙ﴿٢﴾
3. और जो तैरते रहते हैं।	وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۙ﴿٣﴾
4. फिर जो आगे निकल जाते हैं।	فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۙ﴿٤﴾
5. फिर जो कार्य की व्यवस्था करते हैं।[1]	فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۘ﴿٥﴾
6. जिस दिन धरती काँपेगी।	يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۙ﴿٦﴾
7. जिस के पीछे ही दूसरी कम्प आ जायेगी।	تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ۗ﴿٧﴾
8. उस दिन बहुत से दिल धड़क रहे होंगे।	قُلُوْبٌ يَّوْمَىِٕذٍ وَّاجِفَةٌ ۙ﴿٨﴾
9. उन की आंखें झुकी होंगी।	اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۘ﴿٩﴾
10. वे कहते हैं कि क्या हम फिर पहली स्थिति में लाये जायेंगे?	يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِى الْحَافِرَةِ ۗ﴿١٠﴾
11. जब हम (भुरभुरी) (खोखली) स्थियाँ (हड्डियाँ) हो जायेंगे।	ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ۗ﴿١١﴾
12. उन्हों ने कहाः तब तो इस वापसी में क्षति है।	قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۘ﴿١٢﴾

---

1 (1-5) यहाँ से बताया गया है कि प्रलय का आरंभ भारी भूकम्प से होगा और दूसरे ही क्षण सब जीवित हो कर धरती के ऊपर होंगे।

13. बस वह एक झिड़की होगी।	فَاِنَّمَا هِيَ زَجۡرَةٌ وَّاحِدَةٌ ١٣
14. तब वे अकस्मात धरती के ऊपर होंगे।	فَاِذَا هُمۡ بِالسَّاهِرَةِ ١٤
15. (हे नबी) क्या तुम को मूसा का समाचार पहुँचा?[1]	هَلۡ اَتٰىكَ حَدِيۡثُ مُوۡسٰى ١٥
16. जब पवित्र वादी "तुवा" में उसे उसके पालनहार ने पुकारा।	اِذۡ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالۡوَادِ الۡمُقَدَّسِ طُوًى ١٦
17. फ़िरऔन के पास जाओ वह विद्रोही हो गया है।	اِذۡهَبۡ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ اِنَّهٗ طَغٰى ١٧
18. तथा उस से कहो कि क्या तुम पवित्र होना चाहोगे?	فَقُلۡ هَلۡ لَّكَ اِلٰٓى اَنۡ تَزَكّٰى ١٨
19. और मैं तुम्हें तुम्हारे पालनहार की सीधी राह दिखाऊँ तो तुम डरोगे?	وَاَهۡدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخۡشٰى ١٩
20. फिर उस को सब से बड़ा चिन्ह (चमत्कार) दिखाया।	فَاَرٰىهُ الۡاٰيَةَ الۡكُبۡرٰى ٢٠
21. तो उस ने उसे झुठला दिया और बात न मानी।	فَكَذَّبَ وَعَصٰى ٢١
22. फिर प्रयास करने लगा।	ثُمَّ اَدۡبَرَ يَسۡعٰى ٢٢
23. फिर लोगों को एकत्र किया फिर पुकारा।	فَحَشَرَ فَنَادٰى ٢٣
24. और कहाः मैं तुम्हारा परम पालनहार हूँ।	فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الۡاَعۡلٰى ٢٤
25. तो अल्लाह ने उसे संसार तथा परलोक की यातना में घेर लिया।	فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الۡاٰخِرَةِ وَالۡاُوۡلٰى ٢٥
26. वास्तव में इस में उस के लिये शिक्षा है जो डरता है।	اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَعِبۡرَةً لِّمَنۡ يَّخۡشٰى ٢٦

---

[1] (6-15) इन आयतों में प्रलय दिवस का चित्र पेश किया गया है। और काफ़िरों की अवस्था बतायी गई है कि वे उस दिन किस प्रकार अपने आप को एक खुले मैदान में पायेंगे।

27. क्या तुम को पैदा करना कठिन है अथवा आकाश को, जिसे उस ने बनाया।[1]

ءَأَنتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ ٱلسَّمَآءُ ۚ بَنَىٰهَا ﴿٢٧﴾

28. उस की छत ऊँची की और चौरस किया।

رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوَّىٰهَا ﴿٢٨﴾

29. और उस की रात को अंधेरी, तथा दिन को उजाला किया।

وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَىٰهَا ﴿٢٩﴾

30. और इस के बाद धरती को फैलाया।

وَٱلْأَرْضَ بَعْدَ ذَٰلِكَ دَحَىٰهَآ ﴿٣٠﴾

31. और उस से पानी और चारा निकाला।

أَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعَىٰهَا ﴿٣١﴾

32. और पर्वतों को गाड़ दिया।

وَٱلْجِبَالَ أَرْسَىٰهَا ﴿٣٢﴾

33. तुम्हारे तथा तुम्हारे पशुओं के लाभ के लिये।

مَتَٰعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَٰمِكُمْ ﴿٣٣﴾

34. तो जब प्रलय आयेगी।[2]

فَإِذَا جَآءَتِ ٱلطَّآمَّةُ ٱلْكُبْرَىٰ ﴿٣٤﴾

35. उस दिन इन्सान अपना करतूत याद करेगा।[3]

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ ٱلْإِنسَٰنُ مَا سَعَىٰ ﴿٣٥﴾

36. और देखने वाले के लिये नरक सामने कर दी जायेगी।

وَبُرِّزَتِ ٱلْجَحِيمُ لِمَن يَرَىٰ ﴿٣٦﴾

---

1 (16 -27) यहाँ से प्रलय के होने और पुनः जीवित करने के तर्क आकाश तथा धरती की रचना से दिये जा रहे हैं कि: जिस शक्ति ने यह सब बनाया और तुम्हारे जीवन रक्षा की व्यवस्था की है, प्रलय करना और फिर सब को जीवित करना उस के लिये असंभव कैसे हो सकता है? तुम स्वंय विचार कर के निर्णय करो।

2 (28-34) "बड़ी आपदा" प्रलय को कहा गया है जो उस की घोर स्थिति का चित्रण है।

3 (35) यह प्रलय का तीसरा चरण होगा जब कि वह सामने होगी। उस दिन प्रत्येक व्यक्ति को अपने संसारिक कर्म याद आयेंगे और कर्मानुसार जिस ने सत्य धर्म की शिक्षा का पालन किया होगा उसे स्वर्ग का सुख मिलेगा और जिस ने सत्य धर्म और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नकारा और मनमानी धर्म और कर्म किया होगा वह नरक का स्थायी दुःख भोगेगा।

37. तो जिस ने विद्रोह किया।	فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ﴿٣٧﴾
38. और सांसारिक जीवन को प्राथमिक्ता दी।	وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾
39. तो नरक ही उस का आवास होगी।	فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٣٩﴾
40. परन्तु जो अपने पालनहार की महानता से डरा तथा अपने आप को मनमानी करने से रोका।	وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿٤٠﴾
41. तो निश्चय ही उस का आवास स्वर्ग है।	فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٤١﴾
42. वे आप से प्रश्न करते हैं कि वह समय कब आयेगा?[1]	يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ﴿٤٢﴾
43. तुम उस की चर्चा में क्यों पड़े हो?	فِيْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَا ﴿٤٣﴾
44. उस के होने के समय का ज्ञान तुम्हारे पालनहार के पास है।	اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ﴿٤٤﴾
45. तुम तो उसे सावधान करने के लिये हो जो उस से डरता है।[2]	اِنَّمَا اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰىهَا ﴿٤٥﴾
46. वह जिस दिन उस का दर्शन करेंगे उन्हें ऐसा लगेगा कि वह संसार में एक संध्या या उस के सवेरे से अधिक नहीं ठहरे।	كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْۤا اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰىهَا ﴿٤٦﴾

---

[1] (42) काफ़िरों का यह प्रश्न समय जानने के लिये नहीं, बल्कि हंसी उड़ाने के लिये था।

[2] (45) इस आयत में कहा गया है कि (हे नबी) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप का दायित्व मात्र उस दिन से सावधान करना है। धर्म बल पूर्वक मनवाने के लिये नहीं। जो नहीं मानेगा उसे स्वंय उस दिन समझ में आ जायेगा कि उस ने क्षण भर के संसारिक जीवन के स्वर्थ के लिये अपना स्थायी सुख खो दिया। और उस समय पछतावे का कुछ लाभ नहीं होगा।

सूरह अबस[1] - 80

سُورَةُ عَبَسَ

सूरह अबस के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 42 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((अबस)) शब्द से हुआ है जिस का अर्थ ((मुंह बसोरना)) है। इसी से इस सूरह का नाम रखा गया है। [1]
- इस की आयत 1 से 10 तक में एक विशेष घटना की ओर संकेत कर के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ध्यान दिलाया गया है कि आप अभिमानियों तथा दुराग्रहियों के पीछे न पड़ें। उस पर ध्यान दें जो सत्य की खोज करता और अपना सुधार चाहता है।
- आयत 11 से 16 तक में क़ुर्आन की महिमा का वर्णन किया गया तथा बताया गया है कि जिस की ओर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बुला रहे हैं वह कितनी बड़ी चीज़ है। इस लिये जो इस का अपमान करेंगे वह स्वंय अपना ही बुरा करेंगे।
- आयत 17 से 23 तक में प्रलय के इन्कारियों को चेतावनी दी गई है। तथा फिर से जीवित किये जाने के प्रमाण अल्लाह के पालनहार होने से प्रस्तुत किये गये हैं।

---

[1] यह सूरह मक्की है। भाष्य कारों ने इस के उतरने का कारण यह लिखा है कि एक बार ईशदूत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्का के प्रमुखों को इस्लाम के विषय में समझा रहे थे कि एक अनुयायी अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने आ कर धार्मिक विषय में प्रश्न किया। आप उसे बुरा मान गये और मुँह फेर लिया। इस पर आप को सावधान किया गया कि धर्म में संसारिक मान मर्यादा का कोई महत्व नहीं, आप उसी पर प्रथम ध्यान दें जो सत्य को मानता तथा उस का पालन करता है। आप का दायित्व यह भी नहीं है कि किसी को सत्य मनवा दें। फिर कुरआन ऐसी चीज़ नहीं है जिसे विनय और खुशामद से प्रस्तुत किया जाये। बल्कि जो उस पर विचार करेगा तो स्वंय ही इस सत्य को पा लेगा। और जान लेगा कि जिस अल्लाह ने सब कुछ किया है तो पूजा भी मात्र उसी की करें और उसी के कृतज्ञ हों। फिर यदि वह अपनी कृतध्नता पर अड़े रह गये तो एक दिन आयेगा जब यह मान मर्यादा और उन का कोई सहायक नहीं रह जायेगा और प्रत्येक के कर्मों का फल उस के सामने आ जायेगा।

- अन्त में आयत 42 तक क़्यामत का भ्यावह चित्र तथा सदाचारियों और दुराचारियों के अलग-अलग परिणाम बताये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
1. (नबी ने) त्योरी चढ़ाई तथा मुँह फेर लिया।	عَبَسَ وَتَوَلّٰٓى ①
2. इस कारण कि उस के पास एक अँधा आया।	اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ②
3. और तुम क्या जानो शायद वह पवित्रता प्राप्त करे।	وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰٓى ③
4. या नसीहत ग्रहण करे जो उस को लाभ देती।	اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ④
5. परन्तु जो विमुख (निश्चन्त) है।	اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ⑤
6. तुम उन की ओर ध्यान दे रहे हो।	فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ⑥
7. जब कि तुम पर कोई दोष नहीं यदि वह पवित्रता ग्रहण न करे।	وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ⑦
8. तथा जो तुम्हारे पास दौड़ता आया।	وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى ⑧
9. और वह डर भी रहा है।	وَهُوَ يَخْشٰى ⑨
10. तुम उस की ओर ध्यान नहीं देते।[1]	فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ⑩
11. कदापि यह न करो, यह (अर्थात कुर्आन) एक स्मृति (याद दहानी) है।	كَلَّآ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ⑪

---

[1] (1-10) भावार्थ यह है कि सत्य के प्रचारक का यह कर्तव्य है कि जो सत्य की खोज में हो भले ही वह दरिद्र हो उसी के सुधार पर ध्यान दे। और जो अभीमान के कारण सत्य की परवाह नहीं करते उन के पीछे समय न गवायें। आप का यह दायित्व भी नही है कि उन्हें अपनी बात मनवा दें।

12. अतः जो चाहे स्मरण (याद) करे।	فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ﴿١٢﴾
13. मान्नीय शास्त्रों में है।	فِىْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ﴿١٣﴾
14. जो ऊँचे तथा पवित्र हैं।	مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ﴿١٤﴾
15. ऐसे लेखकों (फ़रिश्तों) के हाथों में है।	بِاَيْدِىْ سَفَرَةٍ ﴿١٥﴾
16. जो सम्मानित और आदरणीय हैं।[1]	كِرَامٍ بَرَرَةٍ ﴿١٦﴾
17. इन्सान मारा जाये वह कितना कृतघ्न (नाशुक्रा) है।	قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَآ اَكْفَرَهٗ ﴿١٧﴾
18. उसे किस वस्तु से (अल्लाह) ने पैदा किया?	مِنْ اَىِّ شَىْءٍ خَلَقَهٗ ﴿١٨﴾
19. उसे वीर्य से पैदा किया, फिर उस का भाग्य बनाया।	مِنْ نُّطْفَةٍ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ﴿١٩﴾
20. फिर उस के लिये मार्ग सरल किया।	ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ﴿٢٠﴾
21. फिर मौत दी फिर समाधि में डाल दिया।	ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ﴿٢١﴾
22. फिर जब चाहेगा उसे जीवित कर लेगा।	ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ﴿٢٢﴾
23. वस्तुतः उस ने उस की आज्ञा का पालन नहीं किया।[2]	كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ اَمَرَهٗ ﴿٢٣﴾
24. इन्सान अपने भोजन की ओर ध्यान दे।	فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖٓ ﴿٢٤﴾

---

[1] (11-16) इन में कुर्आन की महानता को बताया गया है कि यह एक स्मृति (याद दहानी) है। किसी पर थोपने के लिये नहीं आया है। बल्कि वह तो फ़रिश्तों के हाथों में स्वर्ग में एक पवित्र शास्त्र के अन्दर सुरक्षित है। और वहीं से वह (कुर्आन) इस संसार में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतारा जा रहा है।

[2] (17-23) तक विश्वास हीनों पर धिक्कार है कि यदि वह अपने अस्तित्व पर विचार करें कि हम ने कितनी तुच्छ वीर्य की बूँद से उस की रचना की तथा अपनी दया से उसे चेतना और समझ दी परन्तु इन सब उपकारों को भूल कर कृतध्न बना हुआ है, और पूजा उपासना अन्य की करता है।

25. हम ने मूसलाधार वर्षा की।	أَنَّا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا ٢٥
26. फिर धरती को चीरा फाड़ा।	ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ٢٦
27. फिर उस से अन्न उगाया।	فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ٢٧
28. तथा अंगूर और तरकारियाँ।	وَعِنَبًا وَقَضْبًا ٢٨
29. तथा जैतून एवं खजूर।	وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ٢٩
30. तथा घने बाग़।	وَحَدَائِقَ غُلْبًا ٣٠
31. एवं फल तथा वनस्पतियाँ।	وَفَاكِهَةً وَأَبًّا ٣١
32. तुम्हारे तथा तुम्हारे पशुओं के लिये।[1]	مَتَاعًا لَكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ٣٢
33. तो जब कान फाड़ देने वाली (प्रलय) आ जायेगी।	فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَّةُ ٣٣
34. उस दिन इन्सान अपने भाई से भागेगा।	يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ٣٤
35. तथा अपने माता और पिता से।	وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ٣٥
36. एवं अपनी पत्नी तथा अपने पुत्रों से।	وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ٣٦
37. प्रत्येक व्यक्ति को उस दिन अपनी पड़ी होगी।	لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ٣٧
38. उस दिन बहुत से चेहरे उज्जवल होंगे।	وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُسْفِرَةٌ ٣٨
39. हंसते एवं प्रसन्न होंगे।	ضَاحِكَةٌ مُسْتَبْشِرَةٌ ٣٩
40. तथा बहुत से चेहरों पर धूल पड़ी होगी।	وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ٤٠

---

1 (24-32) इन आयतों में इन्सान के जीवन साधनों को साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो अल्लाह की अपार दया के परिचायक हैं। अतः जब सारी व्यवस्था वही करता है तो फिर उस के इन उपकारों पर इन्सान के लिये उचित था कि उसी की बात माने और उसी के आदेशों का पालन करे जो क़ुरआन के माध्यम से अन्तिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है। (दावतुल क़ुर्आन)

41. उन पर कालिमा छाई होगी।

تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾

42. वही काफ़िर और कुकर्मी लोग हैं।[1]

أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾

---

[1] (33-42) इन आयतों का भावार्थ यह है कि संसार में किसी पर कोई आपदा आती है तो उस के अपने लोग उस की सहायता और रक्षा करते हैं। परन्तु प्रलय के दिन सब को अपनी अपनी पड़ी होगी और उस के कर्म ही उस की रक्षा करेंगे।

सूरह तक्वीर[1] - 81

سُورَةُ التَّكوِير

सूरह तक्वीर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 29 आयतें हैं।

- इस में प्रलय के दिन सूर्य के लपेट दिये जाने के लिये ((कुव्विरत)) शब्द आया है। इस लिये इस का नाम सूरह तक्वीर है। जिस का अर्थ लपेटना है।[1]
- इस की आयत 1 से 6 तक प्रलय की प्रथम घटना और आयत 7 से 14 तक में दूसरी घटना का चित्रण किया गया है।
- आयत 15 से 25 तक में यह बताया गया है कि कुर्आन और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो सूचना दे रहे हैं वह सत्य पर आधारित है।
- आयत 26 से 29 तक में इन्कार करने वालों को चेतावनी दी गई है कि कुर्आन को न मानना सत्य का इन्कार है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
1. जब सूर्य लपेट दिया जायेगा।	إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝١
2. और जब तारे धुमिल हो जायेंगे।	وَإِذَا النُّجُومُ انكَدَرَتْ ۝٢
3. जब पर्वत चलाये जायेंगे।	وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝٣
4. और जब दस महीने की गाभिन ऊँटनियाँ छोड़ दी जायेंगी।	وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝٤
5. और जब वन् पशु एकत्र कर दिये जायेंगे	وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۝٥
6. और जब सागर भड़काये जायेंगे।[2]	وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝٦

---

[1] यह सूरह आरंभिक सूरतों में से है। इस में प्रलय तथा दूतत्व (रिसालत) का वर्णन है।

[2] (1-6) इन में प्रलय के प्रथम चरण में विश्व में जो उथल पुथल होगी उस को

7. और जब प्राण जोड़ दिये जायेंगे।	وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ﴿٧﴾
8. और जब जीवित गाड़ी गई कन्या से प्रश्न किया जायेगाः	وَإِذَا الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ﴿٨﴾
9. कि वह किस अपराध के कारण बध की गई।	بِأَيِّ ذَنبٍ قُتِلَتْ ﴿٩﴾
10. तथा जब कर्म पत्र फैला दिये जायेंगे।	وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ﴿١٠﴾
11. और जब आकाश की खाल उतार दी जायेगी।	وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ﴿١١﴾
12. और जब नरक धहकाई जायेगी।	وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ﴿١٢﴾
13. और जब स्वर्ग समीप लाई जायेगी।	وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾
14. तो प्रत्येक प्राणी जान लेगा कि वह क्या लेकर आया है।[1]	عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾
15. मैं शपथ लेता हूँ उन तारों की जो पीछे हट जाते हैं।	فَلَا أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ﴿١٥﴾
16. जो चलते चलते छुप जाते हैं।	الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٦﴾
17. और रात की (शपथ), जब समाप्त होने लगती है।	وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ﴿١٧﴾

दिखाया गया है कि आकाश, धरती और पर्वत, सागर तथा जीव जन्तुओं की क्या दशा होगी। और माया मोह में पड़ा इन्सान इसी संसार में अपने प्रियवर धन से कैसा बे परवाह हो जायेगा। वन् पशु भी भय के मारे एकत्र हो जायेंगे। सागरों के जल प्लावन से धरती जल थल हो जायेगी।

[1] (7-14) इन आयतों में प्रलय के दूसरे चरण की दशा को दर्शाया गया है कि इन्सानों की आस्था और कर्मों के अनुसार श्रेणियाँ बनेंगी। नृशंसितों (मज़्लूमों) के साथ न्याय किया जायेगा। कर्म पत्र खोल दिये जायेंगे। नरक भड़काई जायेगी। स्वर्ग सामने कर दी जायेगी। और उस समय सभी को वास्तविकता का ज्ञान हो जायेगा। इस्लाम के उदय के समय अरब में कुछ लोग पुत्रियों को जन्म लेते ही जीवित गाड़ दिया करते थे। इस्लाम ने नारियों को जीवन प्रदान किया। और उन्हें जीवित गाड़ देने को घोर अपराध घोषित किया। आयत नं॰ 8 में उन्हीं नृशंस अपराधियों को धिक्कारा गया है।

18. तथा भोर की जब उजाला होने लगता है।	وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ۝١٨
19. यह (क़ुर्आन) एक मान्यवर स्वर्ग दूत का लाया हुआ कथन है।	إِنَّهُۥ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝١٩
20. जो शक्ति शाली है। अर्श (सिंहासन) के मालिक के पास उच्च पद वाला है।	ذِى قُوَّةٍ عِندَ ذِى ٱلْعَرْشِ مَكِينٍ ۝٢٠
21. जिस की बात मानी जाती है और बड़ा अमानतदार है।[1]	مُّطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ۝٢١
22. और तुम्हारा साथी उन्मत्त नहीं है।	وَمَا صَاحِبُكُم بِمَجْنُونٍ ۝٢٢
23. उस ने उस को आकाश में खुले रूप से देखा है।	وَلَقَدْ رَءَاهُ بِٱلْأُفُقِ ٱلْمُبِينِ ۝٢٣
24. वह परोक्ष (ग़ैब) की बात बताने में प्रलोभी नहीं है।[2]	وَمَا هُوَ عَلَى ٱلْغَيْبِ بِضَنِينٍ ۝٢٤
25. यह धिक्कारी शैतान का कथन नहीं है।	وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَٰنٍ رَّجِيمٍ ۝٢٥
26. फिर तुम कहाँ जा रहे हो?	فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ۝٢٦
27. यह संसार वासियों के लिये एक स्मृति (शास्त्र) है।	إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَٰلَمِينَ ۝٢٧
28. तुम में से उस के लिये जो सुधरना चाहता हो।	لِمَن شَآءَ مِنكُمْ أَن يَسْتَقِيمَ ۝٢٨

---

[1] (15-21) तारों की व्यवस्था गति तथा अंधेरे के पश्चात नियमित रूप से उजाला की शपथ इस बात की गवाही है कि क़ुर्आन ज्योतिष की बकवास नहीं। बल्कि यह ईश वाणी है। जिस को एक शक्तिशाली तथा सम्मान वाला फ़रिश्ता ले कर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। और अमानतदारी से इसे पहुँचाया।

[2] (22-24) इन में यह चेतावनी दी गई है कि महा ईशदूत (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो सुना रहे हैं, और जो फ़रिश्ता वह़्यी (प्रकाशना) लाता है उन्होंने उसे देखा है। वह परोक्ष की बातें प्रस्तुत कर रहे हैं कोई ज्योतिष की बात नहीं, जो धिक्कारे शैतान ज्योतिषियों को दिया करते हैं।

29. तथा तुम विश्व के पालनहार के चाहे बिना कुछ नहीं कर सकते।[1]

وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ رَبُّ ٱلْعَٰلَمِينَ ٢٩

---

[1] (27-29) इन साक्ष्यों के पश्चात सावधान किया गया है कि क़ुर्आन मात्र याद दहानी है। इस विश्व में इस के सत्य होने के सभी लक्षण सब के सामने हैं। इन का अध्ययन कर के स्वंय सत्य की राह अपना लो अन्यथा अपना ही बिगाड़ोगे।

सूरह इन्फ़ितार[1] - 82

سُوْرَةُ الْاِنْفِطَارِ

सूरह इन्फ़ितार के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 19 आयतें हैं।

- "इन्फ़ितार" का अर्थ ((फटना)) है। इस में प्रलय के दिन आकाश के फट जाने की सूचना दी गई है। इसी कारण इस का यह नाम है।
- इस की आयत 1 से 5 तक में प्रलय का दृश्य प्रस्तुत किया गया है कि जब प्रलय आयेगी तो मनुष्य का सब किया धरा सामने आ जायेगा।
- फिर आयत 6 से 8 तक में मनुष्य को यह बताया गया है कि जिस अल्लाह ने उसे पैदा किया है क्या उसे मनमानी करने के लिये छोड़ देगा?
- आयत 9 से 12 तक में बताया गया है कि मनुष्य का प्रत्येक कर्म लिखा जा रहा है।
- आयत 13 से 19 तक में सदाचारियों और दुराचारियों के परिणाम बताते हुये सावधान किया गया है कि प्रलय के दिन किसी के बस में कुछ न होगा, उस दिन सभी अधिकार अल्लाह के हाथ में होगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
1. जब आकाश फट जायेगा।	اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ۝١
2. तथा जब तारे झड़ जायेंगे।	وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۝٢
3. और जब सागर उबल पड़ेंगे।	وَاِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۝٣
4. और जब समाधियाँ (क़बरें) खोल दी जायेंगी।	وَاِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ۝٤
5. तब प्रत्येक प्राणी को ज्ञान हो जायेगा जो उस ने किया है और नहीं किया है।[1]	عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَاَخَّرَتْ ۝٥

---

[1] (1-5) इन में प्रलय के दिन आकाश ग्रहों तथा धरती और समाधियों पर जो

6. हे इन्सान! तुझे किस वस्तु ने तेरे उदार पालनहार से बहका दिया।	يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِۙ ٦
7. जिस ने तेरी रचना की फिर तुझे संतुलित बनाया।	الَّذِيْ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَۙ ٧
8. जिस रूप में चाहा बना दिया।[1]	فِيْۤ اَيِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَؕ ٨
9. वास्तव में तुम प्रतिफल (प्रलय) के दिन को नहीं मानते।	كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِۙ ٩
10. जब कि तुम पर निरीक्षक (पासबान) हैं।	وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَۙ ١٠
11. जो माननीय लेखक हैं।	كِرَامًا كٰتِبِيْنَۙ ١١
12. वे जो कुछ तुम करते हो जानते हैं।[2]	يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ١٢
13. निःसंदेह सदाचारी सुखों में होंगे।	اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍۚ ١٣
14. और दुराचारी नरक में।	وَّاِنَّ الْفُجَّارَ لَفِيْ جَحِيْمٍۚ ١٤
15. प्रतिकार (बदले) के दिन उस में झोंक दिये जायेंगे।	يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ ١٥
16. और वे उस से बच रहने वाले नहीं।[3]	وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَآئِبِيْنَؕ ١٦

दशा गुज़रेगी उस का चित्रण किया गया है। तथा चेतावनी दी गई है कि सब के कर्तूत उस के सामने आ जायेंगे।

[1] (6-8) भावार्थ यह है कि इन्सान की पैदाइश में अल्लाह की शक्ति, दक्षाता तथा दया के जो लक्षण हैं, उन के दर्पण में यह बताया गया है कि प्रलय को असंभव न समझो। यह सब व्यवस्था इस बात का प्रमाण है कि तुम्हारा अस्तित्व व्यर्थ नहीं है कि मनमानी करो। (देखियेः तर्जुमानुल कुरआन, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद) इस का अर्थ यह भी हो सकता है कि जब तुम्हारा अस्तित्व और रूप रेखा कुछ भी तुम्हारे बस नहीं, तो फिर जिस शक्ति ने सब किया उसी की शक्ति में प्रलय तथा प्रतिकार के होने को क्यों नहीं मानते?

[2] (9-12) इन आयतों में इस भ्रम का खण्डन किया गया है कि सभी कर्मों और कथनों का ज्ञान कैसे हो सकता है।

[3] (13-16) इन आयतों में सदाचारियों तथा दुराचारियों का परिणाम बताया गया है कि एक स्वर्ग के सुखों में रहेगा। और दूसरा नरक के दण्ड का भागी बनेगा।

17. और तुम क्या जानो कि बदले का दिन क्या है?

18. फिर तुम क्या जानो कि बदले का दिन क्या है?

19. जिस दिन किसी का किसी के लिये कोई अधिकार नहीं होगा, और उस दिन सब अधिकार अल्लाह का होगा।[1]

وَمَآ أَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۝١٧

ثُمَّ مَآ أَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۝١٨

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْـًٔا ۗ وَالْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ۝١٩

---

[1] (17-19) इन आयतों में दो वाक्यों में प्रलय की चर्चा दोहरा कर उस की भ्यानकता को दर्शाते हुये बताया गया है कि निर्णय बे लाग होगा। कोई किसी की सहायता नहीं कर सकेगा। सत्य आस्था और सत्कर्म ही सहायक होंगे जिस का मार्ग क़ुर्आन दिखा रहा है। क़ुर्आन की सभी आयतों में प्रतिकार का दिन प्रलय के दिन को ही बताया गया है जिस दिन प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्मानुसार प्रतिकार मिलेगा।

सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन[1] - 83

سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ

सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 36 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में ((मुतफ़्फ़िफ़ीन)) शब्द आया है। जिस का अर्थ हैः नापने-तौलने में कमी करने वाले, इसी से इस का नाम रखा गया है। [1]
- आयत 1 से 6 तक में व्यवसायिक विषय में विश्वासघात को विनाशकारी कर्म बताया गया है।
- आयत 7 से 28 तक में बताया गया है कि कुकर्मियों के कर्म एक विशेष पंजी जिस का नाम ((सिज्जीन)) है, में लिखे हुये हैं और सदाचारियों के ((इल्लिय्यीन)) में, जिन के अनुसार उन का निर्णय किया जायेगा और दोनों का परिणाम बताया गया है।
- आयत 29 से अन्त तक ईमान वालों को दिलासा दी गई है कि विरोधियों के व्यंग से दुःखी न हों आज वह तुम पर हँस रहे हैं कल तुम उन पर हँसोगे।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
1. विनाश है डंडी मारने वालों का।	وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ①
2. जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लेते हैं।	الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ②
3. और जब उन को नाप या तोल कर देते हैं तो कम देते हैं।	وَإِذَا كَالُوهُمْ أَو وَّزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ③
4. क्या वे नहीं सोचते कि फिर जीवित किये जायेंगे?	أَلَا يَظُنُّ أُولَٰئِكَ أَنَّهُم مَّبْعُوثُونَ ④

---

1 नाप तौल में कमी बहुत बड़ी समाजिक ख़राबी है। और यह रोग विगत समुदायों में भी विशेष रूप से पाया जाता था। सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन में इस बुराई की कड़ी निंदा की गई है। और प्रलय दिवस में उन को कठोर यातना की सूचना दी गई है।

5. एक भीषण दिन के लिये।	لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۝٥
6. जिस दिन सभी विश्व के पालनहार के सामने खड़े होंगे।[1]	يَوْمَ يَقُومُ ٱلنَّاسُ لِرَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ۝٦
7. कदापि ऐसा न करो, निश्चय बुरों का कर्म पत्र "सिज्जीन" में है।	كَلَّآ إِنَّ كِتَٰبَ ٱلْفُجَّارِ لَفِى سِجِّينٍ ۝٧
8. और तुम क्या जानो कि "सिज्जीन" क्या है?	وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا سِجِّينٌ ۝٨
9. वह लिखित महान् पुस्तक है।	كِتَٰبٌ مَّرْقُومٌ ۝٩
10. उस दिन झुठलाने वालों के लिये विनाश है	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝١٠
11. जो प्रतिकार (बदले) के दिन को झुठलाते है।	ٱلَّذِينَ يُكَذِّبُونَ بِيَوْمِ ٱلدِّينِ ۝١١
12. तथा उसे वही झुठलाता है जो महा अत्याचारी और पापी है।	وَمَا يُكَذِّبُ بِهِۦٓ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ۝١٢
13. जब उन के सामने हमारी आयतों का अध्ययन किया जाता है तो कहते हैः पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।	إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ءَايَٰتُنَا قَالَ أَسَٰطِيرُ ٱلْأَوَّلِينَ ۝١٣
14. सुनो! उन के दिलों पर कुकर्मों के कारण लोहमल लग गया है।	كَلَّا ۖ بَلْ ۜ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا۟ يَكْسِبُونَ ۝١٤
15. निश्चय वे उस दिन अपने पालनहार (के दर्शन) से रोक दिये जायेंगे।	كَلَّآ إِنَّهُمْ عَن رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوبُونَ ۝١٥
16. फिर वे नरक में जायेंगे।	ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا۟ ٱلْجَحِيمِ ۝١٦

---

[1] (1-6) इस सुरह की प्रथम छः आयतों में इसी व्यवसायिक विश्वास घात पर पकड़ की गई है कि न्याय तो यह है कि अपने लिये अन्याय नहीं चाहते तो दूसरों के साथ न्याय करो। और इस रोग का निवारण अल्लाह के भय तथा परलोक पर विश्वास ही से हो सकता है। क्योंकि इस स्थिति में निक्षेप (अमानतदारी) एक नीति ही नहीं बल्कि धार्मिक कर्तव्य होगा और इस पर स्थित रहना लाभ तथा हानि पर निर्भर नहीं रहेगा।

17. फिर कहा जायेगा कि यही है जिसे तुम मिथ्या मानते थे।[1]	ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۟ؕ ١٧
18. सच्च यह है कि सदाचारियों के कर्म पत्र "इल्लिय्यीन" में है।	كَلَّاۤ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ۟ؕ ١٨
19. और तुम क्या जानो कि "इल्लिय्यीन" क्या है?	وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ۟ؕ ١٩
20. एक अंकित पुस्तक है।	كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ۟ۙ ٢٠
21. जिस के पास समीपवर्ती (फ़रिश्ते) उपस्थित रहते हैं।	يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ۟ؕ ٢١
22. निश्चय सदाचारी आनंद में होंगे।	اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ۟ۙ ٢٢
23. सिंहासनों के ऊपर बैठ कर सब कुछ देख रहे होंगे।	عَلَى الْاَرَآىِٕكِ يَنْظُرُوْنَ ۟ۙ ٢٣
24. तुम उन के मुखों से आनंद के चिह्न अनुभव करोगे।	تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ۟ۚ ٢٤
25. उन्हें मुहर लगी शुद्ध मदिरा पिलायी जायेगी।	يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ۟ۙ ٢٥
26. यह मुहर कस्तूरी की होगी। तो इस की अभिलाषा करने वालों को इस की अभिलाषा करनी चाहिये।	خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ؕ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنٰفِسُوْنَ ۟ؕ ٢٦
27. उस में तसनीम मिली होगी।	وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ۟ۙ ٢٧

---

1 (7-17) इन आयतों में कुकर्मियों के दुष्परिणाम का विवरण दिया गया है। तथा यह बताया गया है कि उन के कुकर्म पहले ही से अपराध पत्रों में अंकित किये जा रहे हैं। तथा वे परलोक में कड़ी यातना का सामना करेंगे। और नरक में झोंक दिये जायेंगे।
"सिज्जीन" से अभिप्रायः एक जगह है जहाँ पर काफ़िरों, अत्याचारियों और मुश्रिकों के कुकर्म पत्र तथा प्राण एकत्र किये जाते हैं। दिलों का लोहमलः पापों की कालिमा को कहा गया है। पाप अंतरात्मा को अन्धकार बना देते हैं तो सत्य को स्वीकार करने की स्वभाविक योग्यता खो देते हैं।

28. वह एक स्रोत है जिस से (अल्लाह के) समीप वर्ती पियेंगे।[1]	عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ۝٢٨
29. पापी (संसार में) ईमान लाने वालों पर हंसते थे।	اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ۝٢٩
30. और जब उन के पास से गुज़रते तो आँखें मिचकाते थे।	وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ۝٣٠
31. और जब अपने परिवार में वापिस जाते तो आनंद लेते हुये वापिस होते थे।	وَاِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ۝٣١
32. और जब उन्हें (मुमिनों को) देखते तो कहते थेः यही भटके हुये लोग हैं।	وَاِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْٓا اِنَّ هٰٓؤُلَاۤءِ لَضَاۤلُّوْنَ ۝٣٢
33. जब कि वे उन के निरीक्षक बनाकर नहीं भेजे गये थे।	وَمَآ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ۝٣٣
34. तो जो ईमान लाये आज काफ़िरों पर हंस रहे हैं।	فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ۝٣٤
35. सिंहासनों के ऊपर से उन्हें देख रहे हैं।	عَلَى الْاَرَاۤىِٕكِ يَنْظُرُوْنَ ۝٣٥
36. क्या काफ़िरों (विश्वास हीनों) को उन का बदला दे दिया गया?[2]	هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝٣٦

---

[1] (18-28) इन आयतों में बताया गया है कि सदाचारियों के कर्म ऊँचे पत्रों में अंकित किये जा रहे हैं जो फ़रिश्तों के पास सुरक्षित हैं। और वे स्वर्ग में सुख के साथ रहेंगे। "इल्लिय्यीन" से अभिप्रायः जन्नत में एक जगह है। जहाँ पर नेक लोगों के कर्म पत्र तथा प्राण एकत्र किये जाते हैं। वहाँ पर समीपवर्ति फ़रिश्ते उपस्थित रहते हैं।

[2] (29-36) इन आयतों में बताया गया है कि परलोक में कर्मों का फल दिया जायेगा तो संसारिक परिस्थितियाँ बदल जायेंगी। संसार में तो सब के लिये अल्लाह की दया है, परन्तु न्याय के दिन जो अपने सुख सुविधा पर गर्व करते थे और जिन निर्धन मुसलमानों को देख कर आँखें मारते थे, वहाँ पर वही उन के दुष्परिणाम को देख कर प्रसन्न होंगे। अंतिम आयत में विश्वास हीनों के दुष्परिणाम को उन का कर्म कहा गया है। जिस में यह संकेत है कि सुफल और कुफल स्वंय इन्सान के अपने कर्मों का स्वभाविक प्रभाव होगा।

सूरह इन्शिक़ाक़[1] - 84

سُورَةُ الانشقاق

सूरह इन्शिक़ाक़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 25 आयतें हैं।

- इन्शिक़ाक़ का अर्थः फटना है। इस में आकाश के फटने की सूचना दी गई है, इस कारण इस का यह नाम है। [1]
- आयत 1 से 5 तक में उस उथल पुथल का संक्षेप में वर्णन है जो प्रलय आते ही इस धरती और आकाश में होगी।
- आयत 6 से 15 तक में मनुष्य के अल्लाह के न्यायालय में पहुँचने, कर्मपत्र दिये जाने और अपने परिणाम को पहुँचने का वर्णन है।
- आयत 16 से 20 तक विश्व की निशानियों से प्रमाणित किया गया है कि मनुष्य को मौत के पश्चात् विभिन्न स्थितियों से गुज़रना होगा।
- अन्तिम आयतों में उन्हें धमकी दी गई है जो कुर्आन सुनकर अल्लाह के आगे नहीं झुकते बल्कि उसे झुठलाते हैं। और उन्हें अनन्त प्रतिफल की शुभसूचना दी गई है जो ईमान ला कर सदाचार करते हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○
1. जब आकाश फट जायेगा।	اِذَا السَّمَآءُ انۡشَقَّتۡ ۙ ١
2. और अपने पालनहार की सुनेगा और यही उसे करना भी चाहिये।	وَاَذِنَتۡ لِرَبِّهَا وَحُقَّتۡ ۙ ٢
3. तथा जब धरती फैला दी जायेगी।	وَاِذَا الۡاَرۡضُ مُدَّتۡ ؕ ٣
4. और जो उसके भीतर है फैंक देगी तथा ख़ाली हो जायेगी।	وَاَلۡقَتۡ مَا فِيۡهَا وَتَخَلَّتۡ ۙ ٤

---

1 इस सूरह का शीर्षक भी प्रलय (क़्यामत) तथा परलोक (आख़िरत) है।

5. और अपने पालनहार की सुनेगी और यही उसे करना भी चाहिये।[1]

وَاَذِنَتۡ لِرَبِّهَا وَحُقَّتۡ ۝٥

6. हे इन्सान! वस्तुतः तू अपने पालनहार से मिलने के लिये परिश्रम कर रहा है, और तू उस से अवश्य मिलेगा।

يٰۤاَيُّهَا الۡاِنۡسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدۡحًا فَمُلٰقِيۡهِ ۝٦

7. फिर जिस किसी को उस का कर्म पत्र दाहिने हाथ में दिया जायेगा।

فَاَمَّا مَنۡ اُوۡتِىَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيۡنِهٖ ۝٧

8. तो उस का सरल हिसाब लिया जायेगा।

فَسَوۡفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيۡرًا ۝٨

9. तथा वह अपनों में प्रसन्न होकर वापस जायेगा।

وَّيَنۡقَلِبُ اِلٰۤى اَهۡلِهٖ مَسۡرُوۡرًا ۝٩

10. और जिन को उन का कर्म पत्र बायें हाथ में दिया जायेगा

وَاَمَّا مَنۡ اُوۡتِىَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهۡرِهٖ ۝١٠

11. तो वह विनाश (मृत्यु) को पुकारेगा।

فَسَوۡفَ يَدۡعُوۡا ثُبُوۡرًا ۝١١

12. तथा नरक में जायेगा।

وَّيَصۡلٰى سَعِيۡرًا ۝١٢

13. वह अपनों में प्रसन्न रहता था।

اِنَّهٗ كَانَ فِىۡۤ اَهۡلِهٖ مَسۡرُوۡرًا ۝١٣

14. उस ने सोचा था कि कभी पलट कर नहीं आयेगा।

اِنَّهٗ ظَنَّ اَنۡ لَّنۡ يَّحُوۡرَ ۝١٤

15. क्यों नहीं? निश्चय उस का पालनहार उसे देख रहा था।[2]

بَلٰٓى ۛۚ اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ بِهٖ بَصِيۡرًا ۝١٥

---

[1] (1-5) इन आयतों में प्रलय के समय आकाश एवं धरती में जो हलचल होगी उस का चित्रण करते हुये यह बताया गया है कि इस विश्व के विधाता के आज्ञानुसार यह आकाश और धरती कार्यरत हैं और प्रलय के समय भी उसी की आज्ञा का पालन करेंगे।

धरती को फैलाने का अर्थ यह है कि पर्वत आदि खण्ड खण्ड हो कर समस्त भूमि चौरस कर दी जायेगी।

[2] (6-15) इन आयतों में इन्सान को सावधान किया गया है कि तुझे भी अपने पालनहार से मिलना है। और धीरे धीरे उसी की ओर जा रहा है। वहाँ अपने

16. मैं सांध्य लालिमा की शपथ लेता हूँ!	فَلَآ اُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ١٦
17. तथा रात की, और जिसे वह ऐकत्र करे!	وَالَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ١٧
18. तथा चाँद की जब पूरा हो जाये।	وَالْقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ١٨
19. फिर तुम अवश्य एक दशा से दूसरी दशा पर सवार होगे।	لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ١٩
20. फिर क्यों वे विश्वास नहीं करते।	فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ٢٠
21. और जब उन के पास क़ुर्आन पढ़ा जाता है तो सज्दा नहीं करते।[1]	وَاِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُوْنَ ٢١
22. बल्कि काफ़िर तो उसे झुठलाते हैं।	بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُكَذِّبُوْنَ ٢٢
23. और अल्लाह उन के विचारों को भलि भाँति जानता है।	وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُوْعُوْنَ ٢٣
24. अतः उन्हें दुख दायी यातना की शुभ सूचना सुना दो।	فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ٢٤
25. परन्तु जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन के लिये समाप्त न होने वाला बदला है।[2]	اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ٢٥

कर्मानुसार जिसे दायें हाथ में कर्म पत्र मिलेगा वह अपनों से प्रसन्न होकर मिलेगा। और जिस को बायें हाथ में कर्म पत्र दिया जायेगा तो वह विनाश को पुकारेगा। यह वही होगा जिस ने माया मोह में क़ुर्आन को नकार दिया था। और सोचा कि इस संसारिक जीवन के पश्चात् कोई जीवन नहीं आयेगा।

[1] (16-21) इन आयतों में विश्व के कुछ लक्षणों को साक्ष्य स्वरूप प्रस्तुत कर के सावधान किया गया है कि जिस प्रकार यह विश्व तीन स्थितियों से गुज़रता है इसी प्रकार तुम्हें भी तीन स्थितियों से गुज़रना हैः संसारिक जीवन, फिर मरण, फिर परलोक का स्थायी जीवन जिस का सुख दुःख संसारिक कर्मों के आधार पर होगा।

[2] (22-25) इन आयतों में उन के लिये चेतावनी है जो इन स्वभाविक साक्ष्यों के होते हुये क़ुर्आन को न मानने पर अड़े हुये हैं। और उन के लिये शुभ सूचना है जो इसे मान कर विश्वास (ईमान) तथा सुकर्म की राह पर अग्रसर हैं।

सूरह बुरूज[1] - 85

سُورَةُ الْبُرُوجِ

सूरह बुरूज के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 22 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयतों में बुर्जों (राशि चक्र) वाले आकाश की शपथ ली गई है। जिस से इस का यह नाम रखा गया है। [1]
- आयत 1 से 3 तक प्रतिफल के दिन के होने का दावा किया गया है।
- आयत 4 से 11 तक उन को धमकी दी गई है जो मुसलमानों पर केवल इस लिये अत्याचार करते हैं कि वह एक अल्लाह पर ईमान लाये हैं। और जो इस अत्याचार के होते ईमान पर स्थित रहें उन्हें स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है। फिर आयत 16 तक अत्याचारियों को सूचित किया गया है कि अल्लाह की पकड़ कड़ी है। साथ ही अल्लाह के उन गुणों का वर्णन किया गया है जिन से भय पैदा होता है और क्षमा माँगने की प्रेरणा मिलती है।
- आयत 17 से 20 तक अत्याचारियों की शिक्षाप्रद यातना की ओर संकेत है और यह चेतावनी है कि विरोधी अल्लाह के घेरे में हैं।
- अन्त में कुर्आन को एक ऊँची पुस्तक बताया है जिस का स्रोत पवित्र तथा सुरक्षित है और जिस की कोई बात असत्य नहीं हो सकती।

---

1 यह सूरह मक्का के उस युग में उतरी जब मुसलमानों को घोर यातनायें दे कर इस्लाम से फेरने का प्रयास ज़ोरों पर था। ऐसी परिस्थितियों में एक ओर तो मुसलमानों को दिलासा दिया जा रहा है, और दूसरी ओर काफ़िरों को सावधान किया जा रहा है। और इस के लिये "अस्हाबे उख़्दूद" (खाईयों वालों) की कथा का वर्णन किया जा रहा है।

दक्षिणी अरब में नजरान, जहाँ ईसाई रहते थे, को बड़ा महत्व प्राप्त था। यह एक व्यवसायिक केन्द्र था। तथा सामाजिक कारणों से "ज़ू-नवास" यमन के यहूदी सम्राट ने उस पर आक्रमण कर दिया। और आग से भरे गढ़ों में नर नारियों तथा बच्चों को फिकवा दिया जिस के बदले 525 ई॰ में हब्शा के ईसाईयों ने यमन पर अक्रमण कर के "ज़ू-नवास" तथा उस के हिम्यरी राज्य का अन्त कर दिया। इस की पुष्टि "गुराब" के शिला लेख से होती है जो वर्तमान में अवशेषज्ञों को मिला है। (तर्जुमानुल कुर्आन)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
1. शपथ है बुर्जों वाले आकाश की!	وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ۙ﴿١﴾
2. शपथ है उस दिन की जिस का वचन दिया गया!	وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ۙ﴿٢﴾
3. शपथ है साक्षी की और जिस पर साक्ष्य देगा!	وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ؕ﴿٣﴾
4. खाईयों वालों का नाश हो गया![1]	قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ۙ﴿٤﴾
5. जिन में भड़कते हुये ईंधन की अग्नि थी।	النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ۙ﴿٥﴾
6. जब कि वे उन पर बैठे हुये थे।	اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ۙ﴿٦﴾
7. और वे ईमान वालों के साथ जो कर रहे थे उसे देख रहे थे।	وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ؕ﴿٧﴾
8. और उन का दोष केवल यही था कि वे प्रभावी प्रशंसा किये अल्लाह के प्रति विश्वास किये हुये थे।	وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّاۤ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۙ﴿٨﴾
9. जो आकाशों तथा धरती के राज्य का	الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى

---

1 (1-4) इन में तीन चीज़ों की शपथ ली गई हैः
(1) बुर्जों वाले आकाश की,
(2) प्रलय की, जिस का वचन दिया गया है,
(3) प्रलय के भ्यावह दृश्य की और उस पूरी उत्पत्ति की जो उसे देखेगी।
प्रथम शपथ इस बात की गवाही दे रही है कि जो शक्ति इस आकाश के ग्रहों पर राज कर रही है उस की पकड़ से यह तुच्छ इन्सान बच कर कहाँ जा सकता है?
दूसरी शपथ इस बात पर है कि संसार में इन्सान जो अत्याचार करना चाहे कर ले, परन्तु वह दिन अवश्य आना है जिस से उसे सावधान किया जा रहा है, जिस में सब के साथ न्याय किया जायेगा, और अत्याचारियों की पकड़ की जायेगी। तीसरी शपथ इस पर है कि जैसे इन अत्यचारियों ने विवश आस्तिकों के जलने का दृश्य देखा, इसी प्रकार प्रलय के दिन पूरी मानवजाति देखेगी कि उन की क्या दुर्गत है।

स्वामी है। और अल्लाह सब कुछ देख रहा है।	كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝٩
10. जिन्हों ने ईमान लाने वाले नर नारियों को परिक्षा में डाला, फिर क्षमा याचना न की उन के लिये नरक का दण्ड तथा भड़कती आग की यातना है।	إِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ ۝١٠
11. वास्तव में जो ईमान लाये और सदाचारी बने, उन के लिये ऐसे स्वर्ग हैं जिन के तले नहरें बह रही हैं और यही बड़ी सफलता है।[1]	إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۬ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ۝١١
12. निश्चय तेरे पालनहार की पकड़ बहुत कड़ी है।	إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ۝١٢
13. वही पहले पैदा करता है और फिर दूसरी बार पैदा करेगा।	إِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ۝١٣
14. और वह अति क्षमा तथा प्रेम करने वाला है।	وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ۝١٤
15. वह सिंहासन का महान स्वामी है।	ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ۝١٥
16. वह जो चाहे करता है।[2]	فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ۝١٦

---

[1] (5-11) इन आयतों में जो आस्तिक सताये गये उन के लिये सहायता का वचन तथा यदि वे अपने विश्वास (ईमान) पर स्थित रहे तो उन के लिये स्वर्ग की शुभ सूचना और अत्यचारियों के लिये नरक की धमकी है जिन्हों ने उन को सताया और फिर अल्लाह से क्षमा याचना आदि कर के सत्य को नहीं माना।

[2] (12-16) इन आयतों में बताया गया है कि अल्लाह की पकड़ के साथ ही जो क्षमा याचना कर के उस पर ईमान लाये, उस के लिये क्षमा और दया का द्वार खुला हुआ है।
कुर्आन ने इस कुविचार का खण्डन किया है कि अल्लाह, पापों को क्षमा नहीं कर सकता। क्योंकि इस से संसार पापों से भर जायेगा और कोई स्वार्थी पाप कर के क्षमा याचना कर लेगा फिर पाप करेगा। यह कुविचार उस समय सहीह हो सकता है जब अल्लाह को एक इन्सान मान लिया जाये, जो यह न जानता हो कि जो व्यक्ति क्षमा माँग रहा है उस के मन में क्या है? अल्लाह तो मर्मज्ञ

17. हे नबी! क्या तुम को सेनाओ की सूचना मिली?

18. फ़िरऔन तथा समूद की।[1]

19. बल्कि काफ़िर (विश्वासहीन) झुठलाने में लगे हुये हैं।

20. और अल्लाह उन को हर ओर से घेरे हुये है।[2]

21. बल्कि वह गौरव वाला क़ुर्आन है।

22. जो लेख पत्र (लौहे महफ़ूज़) में सुरक्षित है।[3]

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ١٧

فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ١٨

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ ١٩

وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ ٢٠

بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ٢١

فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ٢٢

है, वह जानता है कि किस के मन में क्या है? फिर "तौबा" इस का नाम नहीं कि मुख से इस शब्द को बोल दिया जाये। तौबा (पश्चानुताप) मन से पाप न करने के प्रयत्न का नाम है और इसे अल्लाह तआला जानता है कि किस के मन में क्या है।?

[1] (17-18) इन में अतीत की कुछ अत्यचारी जातियों की ओर संकेत है, जिन का सविस्तार वर्णन क़ुर्आन की अनेक सूरतों में आया है। जिन्हों ने आस्तिकों पर अत्यचार किये जैसे मक्का के क़ुरैश मुसलमानों पर कर रहे थे। जब कि उन को पता था कि पिछली जातियों के साथ क्या हुआ। परन्तु वे अपने परिणाम से निश्चेत थे।

[2] (19-20) इन दो आयतों में उन के दुर्भाग्य को बताया जा रहा है जो अपने प्रभुत्व के गर्व में क़ुर्आन को नहीं मानते। जब कि उसे माने बिना कोई उपाय नहीं, और वह अल्लाह के अधिकार के भीतर ही हैं।

[3] (21-22) इन आयतों में बताया गया है कि यह क़ुर्आन कविता और ज्योतिष नहीं है जैसा कि वह सोचते हैं, यह श्रेष्ठ और उच्चतम् अल्लाह का कथन है जिस का उद्गम "लौहे महफ़ूज़" में सुरक्षित है।

सूरह तारिक़[1] - 86

سُورَةُ الطَّارِقِ

सूरह तारिक़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 17 आयतें हैं।

- इस के आरंभ में ((तारिक़)) शब्द आया है जिस का अर्थ ((तारा)) है। इसी लिये इस का यह नाम रखा गया है। [1]
- इस की आयत 1 से 4 तक में आकाश तथा तारों की इस बात पर गवाही प्रस्तुत की गई है कि प्रत्येक व्यक्ति की निगरानी हो रही है और एक दिन उस को हिसाब के लिये लाया जायेगा।
- आयत 5 से 8 तक मनुष्य की उत्पत्ति को उस के दोबारा पैदा किये जाने का प्रमाण बनाया गया है। और आयत 9 से 10 तक में यह वर्णन है कि उस दिन सब भेद परखे जायेंगे और मनुष्य विवश और असहाय होगा।
- आयत 11 से 14 तक में इस बात पर आकाश तथा धरती की गवाही प्रस्तुत की गई है कि क़ुर्आन जो प्रतिफल के दिन की सूचना दे रहा है वह अकाट्य है।
- अन्त में काफ़िरों को चेतावनी देते हुये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिलासा दी गई है कि उन की चालें एक दिन उन्हीं के लिये उलटी पड़ेंगी। उन्हें कुछ अवसर दे दो। उन का परिणाम सामने आने में देर नहीं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ۝١

1. शपथ है आकाश तथा रात के "प्रकाश प्रदान करने वाले" की!

---

1 इस सूरह में दो विषयों का वर्णन किया गया हैः
एक यह कि इन्सान को मौत के पश्चात अल्लाह के सामने उपस्थित होना है। दूसरा यह कि क़ुर्आन एक निर्णायक वचन है। जिसे विश्वास हीनों (काफ़िरों) की कोई चाल और उपाय विफल नहीं कर सकती।

2. और तुम क्या जानो कि वह "रात में प्रकाश प्रदान करने वाला" क्या है?	وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ۙ ۝٢
3. वह ज्योतिमय सितारा है।	النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۙ ۝٣
4. प्रत्येक प्राणी पर एक रक्षक है।[1]	اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۗ ۝٤
5. इन्सान यह तो विचार करे कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया?	فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝٥
6. उछलते पानी (वीर्य) से पैदा किया गया है।	خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ۙ ۝٦
7. जो पीठ तथा सीने के पंजरों के मध्य से निकलता है।	يَّخْرُجُ مِنْۢ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ۗ ۝٧
8. निश्चय वह उसे लौटाने की शक्ति रखता है।[2]	اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ۗ ۝٨
9. जिस दिन मन के भेद परखे जायेंगे।	يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ۙ ۝٩
10. तो उसे न कोई बल होगा और न उस का कोई सहायक।[3]	فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ۗ ۝١٠
11. शपथ है आकाश की जो बरसता है!	وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۙ ۝١١
12. तथा फटने वाली धरती की।	وَالْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۙ ۝١٢
13. वास्तव में यह (क़ुर्आन) दो टूक निर्णय (फ़ैसला) करने वाला है।	اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۙ ۝١٣

---

[1] (1-4) इन में आकाश के तारों को इस बात की गवाही में लाया गया है कि विश्व की कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो एक रक्षा के बिना अपने स्थान पर स्थित रह सकती है, और वह रक्षक स्वंय अल्लाह है।

[2] (5-8) इन आयतों में इन्सान का ध्यान उस के अस्तित्व की ओर आकर्षित किया गया है कि वह विचार तो करे कि कैसे पैदा किया गया है वीर्य से? फिर उस की निरन्तर रक्षा कर रहा है। फिर वही उसे मृत्यु के पश्चात् पुनः पैदा करने की शक्ति भी रखता है।

[3] (9-10) इन आयतों में यह बताया गया है कि फिर से पैदाइश इस लिये होगी ताकि इन्सान के सभी भेदों की जांच की जाये जिन पर संसार में पर्दा पड़ा रह गया था और सब का बदला न्याय के साथ दिया जाये।

14. हँसी की बात नहीं।[1]	وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ۝١٤
15. वह चाल बाज़ी करते हैं।	اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ۝١٥
16. मैं भी चाल बाज़ी कर रहा हूँ।	وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ۝١٦
17. अतः काफ़िरों को कुछ थोड़ा अवसर दे दो।[2]	فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ۝١٧

---

1 (11-14) इन आयतों में बताया गया है कि आकाश से वर्षा का होना तथा धरती से पेड़ पौधों का उपजना कोई खेल नहीं एक गंभीर कर्म है। इसी प्रकार कुर्आन में जो तथ्य बताये गये हैं वह भी हँसी उपहास नहीं हैं पक्की और अडिग बातें हैं। काफ़िर (विश्वास हीन) इस भ्रम में न रहें कि उन की चालें इस कुर्आन की आमंत्रण को विफल कर देंगी। अल्लाह भी एक उपाय में लगा है जिस के आगे इन की चालें धरी रह जायेंगी।

2 (15-17) इन आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सांत्वना तथा अधर्मियों को यह धमकी दे कर बात पूरी कर दी गई है कि, आप तनिक सहन करें और विश्वासहीन को मनमानी कर लेने दें, कुछ ही देर होगी कि इन्हें अपने दुष्परिणाम का ज्ञान हो जायेगा।
और इक्कीस वर्ष ही बीते थे कि पूरे मक्का और अरब द्वीप में इस्लाम का ध्वजा लहराने लगा।

सूरह ऑला[1] - 87

سُورَةُ الأَعْلَىٰ

सूरह ऑला के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 19 आयतें हैं।

- इस में अल्लाह के गुण ((आला)) अर्थात सर्वोच्च होने का वर्णन हुआ है इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- इस में आयत 1 से 5 तक अल्लाह के पवित्रता के गान का आदेश देते हुये उस के गुणों का वर्णन किया गया है ताकि मनुष्य अल्लाह को पहचाने।
- आयत 6 से 8 तक वह्यी को नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की स्मरण-शक्ति में सुरक्षित किये जाने का विश्वास दिलाया गया है।
- आयत 9 से 15 तक में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को शिक्षा देने का आदेश देकर बताया गया है कि किस प्रकार के लोग शिक्षा ग्रहण करेंगे और कौन नहीं करेंगे और दोनों का परिणाम क्या होगा।
- अन्त में बताया गया है कि परलोक की अपेक्षा संसार को प्रधानता देना ग़लत है जिस के कारण मनुष्य मार्गदर्शन से वंचित हो जाता है। फिर कहा गया है कि यही बात जो इस सूरह में बताई गई है पहले के ग्रन्थों में भी बताई गई है।

---

1 इस सूरह में तीन महत्वपूर्ण विषयों की ओर संकेत किया गया हैः
1- तौहीद (ऐकेश्वरवाद)
2- नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये कुछ निर्देश।
3- परलोक (आख़िरत)।

1- प्रथम आयत में तौहीद की शिक्षा को एक ही आयत में सीमित कर दिया गया है कि अल्लाह के नाम की पवित्रता का सुमरिण करो, जिस का अर्थ यह है कि उसे किसी ऐसे नाम से याद न किया जाये जिस में किसी प्रकार का दोष अथवा किसी रचना से उसकी समानता का संशय हो। इसलिये कि संसार में जितनी भी ग़लत आस्थायें हैं सब की जड़ अल्लाह से संबन्धित कोई न कोई अशुद्ध और ग़लत विचार है जिस ने उस के लिये अवैध नाम का रूप धारण कर लिया है। आस्था का सुधार सर्व प्रथम है और अल्लाह को मात्र उन्हीं शुभनामों से याद किया जाये जो उस के लिये उचित हैं। (तर्जुमानुल कुर्आन, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद)

- सहीह हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) दोनों ईद और जुमुआ में यह सूरह और सूरह ग़ाशिया पढ़ते थे। (सहीह मुस्लिमः 878)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
1. अपने सर्वोचय प्रभु के नाम की पवित्रता का सुमरिण करो।	سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۙ﴿۱﴾
2. जिस ने पैदा किया और ठीक ठीक बनाया।	الَّذِىْ خَلَقَ فَسَوّٰى ۙ﴿۲﴾
3. और जिस ने अनुमान लगाकर निर्धारित किया, फिर सीधी राह दिखाई।	وَالَّذِىْ قَدَّرَ فَهَدٰى ۙ﴿۳﴾
4. और जिस ने चारा उपजाया।[1]	وَالَّذِىْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۙ﴿۴﴾
5. फिर उसे (सुखा कर) कूड़ा बना दिया।[2]	فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ؕ﴿۵﴾
6. (हे नबी!) हम तुहें ऐसा पढ़ायेंगे कि भूलोगे नहीं।	سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ۙ﴿۶﴾
7. परन्तु जिसे अल्लाह चाहे। निश्चय ही वह सभी खुली तथा छिपी बातों को जानता है।	اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ؕ﴿۷﴾
8. और हम तुम्हें सरल मार्ग का	وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۚ﴿۸﴾

---

[1] (2-4) इन आयतों में जिस पालनहार ने अपने नाम की पवित्रता का वर्णन करने का आदेश दिया है उस का परिचय दिया गया है कि वह पालनहार है जिस ने सभी को पैदा किया, फिर उन को संतुलित किया, और उन के लिये एक विशेष प्रकार का अनुमान बनाया जिस की सीमा से नहीं निकल सकते, और उन के लिये उस कार्य को पूरा करने की राह दिखाई जिस के लिये उन्हें पैदा किया है।

[2] (4-5) इन आयतों में बताया गया है कि प्रत्येक कार्य अनुक्रम से धीरे धीरे होते हैं। धरती के पौधे धीरे धीरे गुंजान और हरे भरे होते हैं। ऐसे ही मानवी योग्यतायें भी धीरे धीरे पूरी होती हैं।

साहस देंगे।[1]

فَذَكِّرۡ اِنۡ نَّفَعَتِ الذِّكۡرٰى ٩

9. तो आप धर्म की शिक्षा देते रहें। अगर शिक्षा लाभदायक हो।

سَيَذَّكَّرُ مَنۡ يَّخۡشٰى ١٠

10. डरने वाला ही शिक्षा ग्रहण करेगा।

وَيَتَجَنَّبُهَا الۡاَشۡقَى ١١

11. और दुर्भाग्य उस से दूर रहेगा।

الَّذِىۡ يَصۡلَى النَّارَ الۡكُبۡرٰى ١٢

12. जो भीषण अग्नि में जायेगा।

ثُمَّ لَا يَمُوۡتُ فِيۡهَا وَلَا يَحۡيٰى ١٣

13. फिर उस में न मरेगा न जीवित रहेगा।[2]

قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ تَزَكّٰى ١٤

14. वह सफल हो गया जिस ने अपना शुद्धिकरण किया।

وَذَكَرَ اسۡمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ١٥

15. तथा अपने पालनहार के नाम का स्मरण किया, और नमाज़ पढ़ी।[3]

بَلۡ تُؤۡثِرُوۡنَ الۡحَيٰوةَ الدُّنۡيَا ١٦

16. बल्कि तुम लोग तो सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते हो।

وَالۡاٰخِرَةُ خَيۡرٌ وَّاَبۡقٰى ١٧

17. जबकि आख़िरत (परलोक) का जीवन ही उत्तम और स्थाई है।

اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الۡاُوۡلٰى ١٨

18. यही बात प्रथम ग्रन्थों में है।

---

[1] (6-8) इन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह निर्देश दिया गया है कि इस की चिन्ता न करें की क़ुर्आन मुझे कैसे याद होगा, इसे याद कराना हमारा काम है, और इसका सुरक्षित रहना हमारी दया से होगा। और यह उसकी दया और रक्षा है कि इस मानव संसार में किसी धार्मिक ग्रन्थ के संबंध में यह दावा नहीं किया जा सकता कि वह सुरक्षित है, यह गर्व केवल क़ुर्आन को ही प्राप्त है।

[2] (9-13) इन में बताया गया है कि आप को मात्र इसका प्रचार प्रसार करना है। और इस की सरल राह यह है कि जो सुने और मानने को तैयार हो उसे शिक्षा दी जाये। किसी के पीछे पड़ने की आवश्यकता नहीं है। जो हत् भागे हैं वही नहीं सुनेंगे और नरक की यातना के रूप में अपना दुष्परिणाम देखेंगें।

[3] (14-15) इन आयतों में कहा गया है कि, सफलता मात्र उन के लिये है जो आस्था, स्वभाव तथा कर्म की पवित्रता को अपनायें, और नमाज़ अदा करते रहें।

صُحُفِ إِبۡرَٰهِيمَ وَمُوسَىٰ ۝١٩

19. (अर्थात) इब्राहीम तथा मूसा के ग्रन्थों में।[1]

---

[1] (16-19) इन आयतों का भावार्थ यह है कि वास्तव में रोग यह है कि काफ़िरों को सांसारिक स्वार्थ के कारण नबी की बातें अच्छी नहीं लगतीं। जब कि परलोक ही स्थायी है। और यही सभी आदि ग्रन्थों की शिक्षा है।

सूरह ग़ाशियह[1] - 88

سُورَةُ الغَاشِيَة

सूरह ग़ाशियह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 26 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((अल ग़ाशियह)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। जिस का अर्थ ऐसी आपदा है जो सब पर छा जाये।[1]
- इस की आयत 2 से 7 तक में उन का परिणाम बताया गया है जो प्रलय को नहीं मानते और 8 से 16 तक उन का परिणाम बताया गया है जो प्रलय के प्रति विश्वास रखते हैं।
- आयत 17 से 20 तक विश्व की उन निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो अल्लाह के सामर्थ्य का प्रमाण हैं। और जिन पर विचार करने से क़ुर्आन की बातों को समर्थन मिलता है कि अल्लाह प्रलय लाने तथा स्वर्ग और नरक का संसार बनाने की शक्ति रखता है और प्रतिफल का होना अनिवार्य है।
- आयत 21 से 26 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सम्बोधित किया गया है कि आप का काम मात्र शिक्षा देना है किसी को बलपूर्वक सत्य मनवाना नहीं है। अतः जो आप की शिक्षा सुनने को तय्यार नहीं है उन्हें अल्लाह के हवाले करो। क्यों कि आख़िर उन्हें अल्लाह ही की ओर जाना है, उस दिन वह उन से हिसाब ले लेगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. क्या तेरे पास पूरी सृष्टि पर छा जाने वाली (क़्यामत) का समाचार आया?

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ①

2. उस दिन कितने मुँह सहमे होंगे।

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ②

---

1 यह सूरह मक्की है तथा आरंभिक युग की है। इस में ऐकेश्वरवाद (तौहीद) तथा परलोक (आख़िरत) के विषय को दोहराया गया है, परन्तु इस की वर्णन शैली कुछ भिन्न है।

3. परिश्रम करते थके जा रहे होंगे।	عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ٣
4. पर वे धहकती आग में जायेंगे।	تَصْلَىٰ نَارًا حَامِيَةً ٤
5. उन्हें खोलते सोते का जल पिलाया जायेगा।	تُسْقَىٰ مِنْ عَيْنٍ ءَانِيَةٍ ٥
6. उनके लिये कटीली झाड़ के सिवा कोई भोजन सामग्री नहीं होगी।	لَّيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِن ضَرِيعٍ ٦
7. जो न मोटा करेगी, और न भूख दूर करेगी।[1]	لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِى مِن جُوعٍ ٧
8. कितने मुख उस दिन निर्मल होंगे।	وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ٨
9. अपने प्रयास से प्रसन्न होंगे।	لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ٩
10. ऊँचे स्वर्ग में होंगे।	فِى جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ١٠
11. उस मे कोई बकवास नहीं सुनेंगे।	لَّا تَسْمَعُ فِيهَا لَٰغِيَةً ١١
12. उस में बहता जल स्रोत होगा।	فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ١٢
13. और उस में ऊँचे ऊँचे सिंहासन होंगे।	فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ١٣
14. उस में बहुत सारे प्याले रखे होंगे।	وَأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ١٤
15. पंक्तियों में गलीचे लगे होंगे।	وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ١٥

---

1 (1-7) इन आयतों में प्रथम संसारिक स्वार्थ में मग्न इन्सानों को एक प्रश्न द्वारा सावधान किया गया है कि उसे उस समय की सूचना है जब एक आपदा समस्त विश्व पर छा जायेगा? फिर इसी के साथ यह विवरण भी दिया गया है कि उस समय इन्सानों के दो भेद हो जायेंगे, और दोनों के प्रतिफल भी भिन्न होंगेः एक नरक में तथा दूसरा स्वर्ग में जायेगा।
तीसरी आयत में (नासिबह) का शब्द आया है जिस का अर्थ हैः थक कर चूर हो जाना, अर्थात काफ़िरों को क़्यामत के दिन इतनी कड़ी यातना दी जायेगी कि उन की दशा बहुत ख़राब हो जायेगी। और वे थके थके से दिखाई देंगे।
इस का दूसरा अर्थ यह भी है किः उन्होंने संसार में बहुत से कर्म किये होंगे परन्तु वह सत्य धर्म के अनुसार नहीं होंगे, इस लिये वे पूजा अर्चना और कड़ी तपस्या करके भी नरक में जायेंगे, इसलिये कि सत्य आस्था के बिना कोई कर्म मान्य नहीं होगा।

16. और मख़्मली क़ालीनें बिछी होंगी।[1]	وَّزَرَابِيُّ مَبۡثُوۡثَةٌ ؕ ١٦
17. क्या वह ऊँटों को नहीं देखते कि कैसे पैदा किये गये हैं?	اَفَلَا يَنۡظُرُوۡنَ اِلَى الۡاِبِلِ كَيۡفَ خُلِقَتۡ ١٧
18. और आकाश को, कि किस प्रकार ऊँचा किया गया?	وَاِلَى السَّمَآءِ كَيۡفَ رُفِعَتۡ ١٨
19. और पर्वतों को कि कैसे गाड़े गये?	وَاِلَى الۡجِبَالِ كَيۡفَ نُصِبَتۡ ١٩
20. तथा धरती को, कि कैसे पसारी गई?[2]	وَاِلَى الۡاَرۡضِ كَيۡفَ سُطِحَتۡ ٢٠
21. अतः आप शिक्षा (नसीहत) दें, कि आप शिक्षा देने वाले हैं।	فَذَكِّرۡ ۟ اِنَّمَاۤ اَنۡتَ مُذَكِّرٌ ؕ ٢١
22. आप उन पर अधिकारी नहीं हैं।	لَسۡتَ عَلَيۡهِمۡ بِمُصَيۡطِرٍ ۙ ٢٢
23. परन्तु जो मुँह फेरेगा और नहीं मानेगा,	اِلَّا مَنۡ تَوَلّٰى وَكَفَرَ ۙ ٢٣
24. तो अल्लाह उसे भारी यातना देगा।	فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الۡعَذَابَ الۡاَكۡبَرَ ؕ ٢٤
25. उन्हें हमारी ओर ही वापस आना है।	اِنَّ اِلَيۡنَاۤ اِيَابَهُمۡ ۙ ٢٥
26. फिर हमें ही उन का हिसाब लेना है।[3]	ثُمَّ اِنَّ عَلَيۡنَا حِسَابَهُمۡ ٢٦

---

1 (8-16) इन आयतों में जो इस संसार में सत्य आस्था के साथ क़ुर्आन आदेशानुसार जीवन व्यतीत कर रहे हैं परलोक में उन के सदा के सुख का दृश्य दिखाया गया है।

2 (17-20) इन आयतों में फिर विषय बदल कर एक और प्रश्न किया जा रहा है किः जो क़ुर्आन की शिक्षा तथा प्रलोक की सूचना को नहीं मानते अपने सामने उन चीज़ों को नहीं देखते जो रात दिन उन के सामने आती रहती हैं, ऊँटों तथा प्रवतों और आकाश एवं धरती पर विचार क्यों नहीं करते कि क्या यह सब अपने आप पैदा हो गये हैं या इन का कोई रचयिता है? यह तो असंभव है कि रचना हो और रचयिता न हो। यदि मानते हैं कि किसी शक्ति ने इन को बनाया है जिस का कोई साझी नहीं तो उस के अकेले पूज्य होने और उस के फिर से पैदा करने की शक्ति और सामर्थ्य का क्यों इन्कार करते हैं? (तर्जुमानुल क़ुर्आन)

3 (21-26) इन आयतों का भावार्थ यह है कि क़ुर्आन किसी को बलपूर्वक मनवाने के लिये नहीं है, और न नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह कर्तव्य है कि किसी को बलपूर्वक मनवायें। आप जिस से डरा रहे हैं यह मानें या न मानें वह खुली बात है। फिर भी जो नहीं सुनते उनको अल्लाह ही समझेगा। यह और इस जैसी क़ुर्आन की अनेक आयतें इस आरोप का खण्डन करती हैं कि इस्लाम ने अपने मनवाने के लिये अस्त्र शस्त्र का प्रयोग किया।

सूरह फ़ज्र[1] - 89

سُوْرَةُ الْفَجْرِ

सूरह फ़ज्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 30 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((वल फ़ज्र)) से होने के कारण इस को यह नाम दिया गया है।
- आयत 1 से 5 तक दिन-रात की प्राकृतिक स्थियों को प्रतिफल के दिन के प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। और आयत 6 से 14 तक कुछ बड़ी जातियों के शिक्षाप्रद परिणाम को इस के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है कि इस विश्व का शासक सब के कर्मों को देख रहा है और एक दिन वह हिसाब अवश्य लेगा।
- आयत 15 से 20 तक में मनुष्य के साथ दुर्व्यवहारों तथा निर्बलों के अधिकार हनन पर कड़ी चेतावनी दी गई और बताया गया है कि ऐसा करने का कारण परलोक का अविश्वास है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के न्यायालय का चित्र प्रस्तुत करते हुये विरोधियों तथा ईमान वालों का परिणाम बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
1. शपथ है भोर की!	وَالْفَجْرِ ۝١
2. तथा दस रात्रियों की!	وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۝٢
3. और जोड़े तथा अकेले की!	وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۝٣
4. और रात्री की जब जाने लगे!	وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ ۝٤
5. क्या उस में किसी मतिमान (समझदार) के लिये कोई शपथ है?[1]	هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ۝٥

---

1 (1-5) इन आयतों में प्रथम परलोक के सुफल विषयक चार संसारिक लक्षणों को साक्ष्य (गवाह) के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जिस का अर्थ यह है कि कर्मों

6. क्या तुम ने नहीं देखा कि तुम्हारे पालनहार ने "आद" के साथ क्या किया?	أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۝٦
7. स्तम्भों वाले "इरम" के साथ?	إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۝٧
8. जिन के समान देशों में लोग नहीं पैदा किये गये।	الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ۝٨
9. तथा "समूद" के साथ जिन्होंने घाटियों में चट्टानों को काट रखा था।	وَثَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۝٩
10. और मेखों वाले फ़िरऔन के साथ।	وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ۝١٠
11. जिन्होंने नगरों में उपद्रव कर रखा था।	الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ۝١١
12. और नगरों में बड़ा उपद्रव फैला रखा था।	فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ۝١٢
13. फिर तेरे पालनहार ने उन पर दण्ड का कोड़ा बरसा दिया।	فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۝١٣
14. वास्तव में तेरा पालनहार घात में है।[1]	إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۝١٤
15. परन्तु जब इन्सान की उस का पालनहार परीक्षा लेता है और उसे	فَأَمَّا الْإِنسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ

का फल मिलना सत्य है। रात तथा दिन का यह अनुकम जिस व्यवस्था के साथ चल रहा है उस से सिद्ध होता है कि अल्लाह ही इसे चला रहा है। "दस रात्रियों" से अभिप्राय "ज़ुल हिज्जा" मास की प्रारम्भिक दस रातें हैं। सहीह हदीसों में इन की बड़ी प्रधानता बताई गई है।

1 (6-14) इन आयतों में उन जातियों की चर्चा की गई है जिन्होंने माया मोह में पड़ कर परलोक और प्रतिफल का इन्कार किया, और अपने नैतिक पतन के कारण धरती में उग्रवाद किया। "आद, इरम" से अभिप्रेत वह पुरानी जाति है जिसे क़ुर्आन तथा अरब में "आदे ऊला" (प्रथम आद) कहा गया है। यह वह प्राचीन जाति है जिस के पास आद (अलैहिस्सलाम) को भेजा गया। और इन को "आदे इरम" इसलिये कहा गया कि यह सामी वंशकम की उस शाखा से संबंधित थे जो इरम बिन साम बिन नूह से चली आती थी। आयत नं॰ 11 में इस का संकेत है कि उग्रवाद का उद्गम भौतिकवाद एंव सत्य विश्वास का इन्कार है जिसे वर्तमान युग में भी प्रत्यक्ष रूप में देखा जा सकता है।

सम्मान और धन देता है तो कहता है कि मेरे पालनहार ने मेरा सम्मान किया।	وَنَعَّمَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَكْرَمَنِ ۭ(١٥)
16. परन्तु जब उस की परीक्षा लेने के लिये उस की जीविका संकीर्ण (कम) कर देता है तो कहता है कि मेरे पालनहार ने मेरा अपमान किया।	وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَهَانَنِ ۚ(١٦)
17. ऐसा नहीं, बल्कि तुम अनाथ का आदर नहीं करते।	كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۙ(١٧)
18. तथा ग़रीब को खाना खिलाने के लिये एक दूसरे को नहीं उभारते।	وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰي طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۙ(١٨)
19. और मीरास (मृतक सम्पत्ति) के धन को समेट समेट कर खा जाते हो।	وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ۙ(١٩)
20. और धन से बड़ा मोह रखते हो।[1]	وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۭ(٢٠)
21. सावधान! जब धरती खण्ड खण्ड कर दी जायेगी।	كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۙ(٢١)
22. और तेरा पालनहार स्वंय पदार्पण करेगा, और फ़रिश्ते पंक्तियों में होंगे।	وَّجَاۗءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۚ(٢٢)
23. और उस दिन नरक लाई जायेगी, उस दिन इन्सान सावधान हो जायेगा, किन्तु सावधानी लाभ- दायक न होगी।	وَجِايْۗءَ يَوْمَىِٕذٍۢ بِجَهَنَّمَ ڏ يَوْمَىِٕذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ۭ(٢٣)
24. वह कामना करेगा कि काश! अपने	يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ۚ(٢٤)

---

[1] (15-20) इन आयतों में समाज की साधारण नैतिक स्थिति की परीक्षा (जायज़ा) ली गई, और भौतिकवादी विचार की आलोचना की गई है जो मात्र सांसारिक धन और मान मर्यादा को सम्मान तथा अपमान का पैमाना समझता है और यह भूल गया है कि न धनी होना कोई पुरस्कार है और न निर्धन होना कोई दण्ड है। अल्लाह दोनों स्थितियों में मानव जाति (इन्सान) की परीक्षा ले रहा है। फिर यह बात किसी के बस में हो तो दूसरे का धन भी हड़प कर जाये, क्या ऐसा करना कुकर्म नहीं जिस का हिसाब लिया जाये?

सदा के जीवन के लिये कर्म किये होते।	
25. उस दिन (अल्लाह) के दण्ड के समान कोई दण्ड नहीं देगा।	فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهٗۤ اَحَدٌ ۙ ٢٥
26. और न उसके जैसी जकड़ कोई जकड़ेगा।[1]	وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗۤ اَحَدٌ ۭ ٢٦
27. हे शान्त आत्मा!	يٰۤاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَىِٕنَّةُ ۤ ۖ ٢٧
28. अपने पालनहार की ओर चल, तू उस से प्रसन्न, और वह तुझ से प्रसन्न।	ارْجِعِيْۤ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۚ ٢٨
29. तू मेरे भक्तों में प्रवेश कर जा।	فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ۙ ٢٩
30. और मेरे स्वर्ग में प्रवेश कर जा।[2]	وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ۧ ٣٠

---

1 (21-26) इन आयतों में बताया गया है कि धन पूजने और उस से परलोक न बनाने का दुष्परिणाम नरक की घोर यातना के रूप में सामने आयेगा तब भौतिक वादी कुकर्मियों की समझ में आयेगा कि क़ुर्आन को न मान कर बड़ी भूल हुई और हाथ मलेंगे।

2 (27-30) इन आयतों में उन के सुख और सफलता का वर्णन किया गया है जो क़ुर्आन की शिक्षा का अनुपालन करते हुये आत्मा की शाँती के साथ जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

सूरह बलद[1] - 90

سُورَةُ البَلَدِ

सूरह बलद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 20 आयतें हैं।[1]

- इस की प्रथम आयत में ((अल-बलद)) (अर्थातः नगर) की शपथ ली गई है। जिस से अभिप्राय मक्का है। और इसी से इस सूरह का यह नाम लिया गया है।
- इस की आयत 1 से 4 तक में जो गवाहियाँ प्रस्तुत की गई हैं उन से अभिप्राय यह है कि यह संसार सुख विलास के लिये नहीं बनाया गया है। बल्कि इस के बनाने का एक विशेष उद्देश्य है। इसी लिये मनुष्य को दुःख की स्थिति में पैदा किया गया है।
- आयत 5 से 7 तक में यह चेतावनी दी गई है कि मनुष्य यह न समझे कि उस के ऊपर उस के कर्मों की निगरानी के लिये कोई शक्ति नहीं है।
- आयत 8 से 17 तक में बताया गया है कि मनुष्य के आचरण और कर्म की ऊँचाई तथा नीचाई की राह भी खोल दी गई है। और इस ऊँचाई पर चढ़ कर जो दुर्गम है, वह आचरण और कर्म की ऊँचाई को प्राप्त कर लेता है।
- आयत 18 से 20 तक में बताया गया है कि मनुष्य ईमान के साथ आचरण की ऊँचाई द्वारा भाग्यशाली बन जाता है और कुफ़्र के कारण नरक की खाई में जा गिरता है जिस से निकलने का फिर कोई उपाय नहीं होगा।

---

1 इस सूरह का विषय मानव जाति (इन्सान) को यह समझाना है कि अल्लाह ने सौभाग्य तथा दुर्भाग्य की दोनों राहें खोल दी हैं। और उन्हें देखने और उन पर चलने के साधन भी सुलभ कर दिये हैं। अब इन्सान के अपने प्रयास पर निर्भर है कि वह कौन सा मार्ग अपनाता है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ
1. मैं इस नगर (मक्का) की शपथ लेता हूँ!	لَاۤ اُقۡسِمُ بِہٰذَا الۡبَلَدِ ۙ﴿۱﴾
2. तथा तुम इस नगर में प्रवेश करने वाले हो।	وَ اَنۡتَ حِلٌّۢ بِہٰذَا الۡبَلَدِ ۙ﴿۲﴾
3. तथा सौगन्ध है पिता एंव उस की संतान की।	وَ وَالِدٍ وَّ مَا وَلَدَ ۙ﴿۳﴾
4. हम ने इन्सान को कष्ट में घिरा हुआ पैदा किया है।	لَقَدۡ خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ فِیۡ کَبَدٍ ؕ﴿۴﴾
5. क्या वह समझता है कि उस पर किसी का वश नहीं चलेगा?[1]	اَیَحۡسَبُ اَنۡ لَّنۡ یَّقۡدِرَ عَلَیۡہِ اَحَدٌ ۘ﴿۵﴾
6. वह कहता है कि मैं ने बहुत धन ख़र्च कर दिया।	یَقُوۡلُ اَہۡلَکۡتُ مَالًا لُّبَدًا ؕ﴿۶﴾
7. क्या वह समझता है कि उसे किसी ने देखा नहीं?[2]	اَیَحۡسَبُ اَنۡ لَّمۡ یَرَہٗۤ اَحَدٌ ؕ﴿۷﴾

---

[1] (1-5) इन आयतों में सर्व प्रथम मक्का नगर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो घटनायें घट रही थीं, और आप तथा आप के अनुयाईयों को सताया जा रहा था, उस को साक्षी के रूप में प्रस्तुत किया गया है किः इन्सान की पेदाइश (रचना) संसार का स्वाद लेने के लिये नहीं हुई है। संसार परिश्रम तथा पीड़ायें झेलने का स्थान है। कोई इन्सान इस स्थिति से गुज़रे बिना नहीं रह सकता। "पिता" से अभिप्रायः आदम अलैहिस्सलाम, और "संतान" से अभिप्रायः समस्त मानव जाति (इन्सान) हैं।
फिर इन्सान के इस भ्रम को दूर किया है कि उस के ऊपर कोई शक्ति नहीं है जो उस के कर्मों को देख रही है, और समय आने पर उस की पकड़ करेगी।

[2] (6-7) इन में यह बताया गया है कि संसार में बड़ाई तथा प्रधानता के ग़लत पैमाने बना लिये गये हैं, और जो दिखावे के लिये धन व्यय (ख़र्च) करता है उस की प्रशंसा की जाती है जब कि उस के ऊपर एक शक्ति है जो यह देख रही है कि उस ने किन राहों में और किस लिये धन ख़र्च किया है।

8. क्या हम ने उसे दो आँखें नहीं दीं?।	اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ عَيْنَيْنِ ۙ ٨
9. और एक ज़बान तथा दो होंट नहीं दिये?	وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ ۙ ٩
10. और उसे दोनों मार्ग दिखा दिये?	وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ۚ ١٠
11. तो वह घाटी में घुसा ही नहीं।	فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۖ ١١
12. और तुम क्या जानो कि घाटी क्या है?	وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ۗ ١٢
13. किसी दास को मुक्त करना।	فَكُّ رَقَبَةٍ ۙ ١٣
14. अथवा भूक के दिन (अकाल) में खाना खिलाना।	اَوْ اِطْعٰمٌ فِيْ يَوْمٍ ذِيْ مَسْغَبَةٍ ۙ ١٤
15. किसी अनाथ संबंधी को।	يَّتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۙ ١٥
16. अथवा मिट्टी में पड़े निर्धन को।[1]	اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۗ ١٦
17. फिर वह उन लोगों में होता है जो ईमान लाये, और जिन्होंने धैर्य (सहन शीलता) एवं उपकार के उपदेश दिये।	ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۗ ١٧
18. यही लोग सौभाग्यशाली (दायें हाथ वाले) हैं।	اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۗ ١٨
19. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को	وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۗ ١٩

---

[1] (8-16) इन आयतों में फ़रमाया गया है कि: इन्सान को ज्ञान और चिन्तन के साधन और योग्यतायें दे कर हम ने उस के सामने भलाई तथा बुराई के दोनों मार्ग खोल दिये हैं, एक नैतिक पतन की ओर ले जाता है और उस में मन को अति स्वाद मिलता है। दूसरा नैतिक ऊँचाइयों की राह जिस में कठिनाईयाँ हैं। और उसी को घाटी कहा गया है। जिस में प्रवेश करने वालों के कर्त्तव्य में है कि दासों को मुक्त करें, निर्धनों को भोजन करायें इत्यादी वही लोग स्वर्ग वासी हैं। और वे जिन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया वे नर्क वासी हैं। आयत नं॰ 17 का अर्थ यह है कि सत्य विश्वास (ईमान) के बिना कोई शुभकर्म मान्य नहीं है। इस में सुखी समाज की विशेषता भी बताई गई है कि: दूसरे को सहन शीलता तथा दया का उपदेश दिया जाये और अल्लाह पर सत्य विश्वास रखा जाये।

नहीं माना यही लोग दुर्भाग्य (बायें हाथ वाले) हैं।

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ﴿٢٠﴾ ع

20. ऐसे लोग हर ओर से आग में घिरे होंगे।

सूरह शम्स[1] - 91

سُورَةُ الشَّمْسِ

सूरह शम्स के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 15 आयतें हैं।

- इस सूरह की प्रथम आयत में "शम्स" (सूर्य) की शपथ ली गई है, इसी लिये इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- इस की आयत 1 से 10 तक सूर्य-चाँद और रात-दिन तथा धरती और आकाश की उन बड़ी निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो इस विश्व के पैदा करने वाले की पूर्ण शक्ति तथा गुणों का ज्ञान कराती हैं। और फिर मनुष्य की आत्मा की गवाही को अच्छे तथा बुरे कर्मफल के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है।
- आयत 11 से 13 तक में इस की एतिहासिक गवाही प्रस्तुत की गई है और आद तथा समूद जाति की कथा संक्षेप में बता कर उन के कुकर्मों के शिक्षाप्रद परिणाम लोगों की शिक्षा के लिये प्रस्तुत किये गये हैं ताकि वह कुर्आन तथा इस्लाम के नबी का विरोध न करें।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. सूर्य तथा उस की धूप की शपथ है!

وَالشَّمْسِ وَضُحٰىهَا ۝١

2. और चाँद की शपथ जब उस के पीछे निकले!

وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰىهَا ۝٢

3. और दिन की शपथ जब उसे (अर्थात् सूर्य को) प्रकट कर दे!

وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰىهَا ۝٣

4. और रात्री की सौगन्ध जब उसे (सूर्य

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰىهَا ۝٤

---

1 इस सूरह का विषयः पुन और पाप का अन्तर समझाना है, तथा उन्हें बुरे परिणाम की चेतावनी देना जो इस अंतर को समझने से इन्कार करते हैं, तथा बुराई की राह पर चलने का दुराग्रह करते हैं।

को) छुपा ले!	
5. और आकाश की सौगन्ध, तथा उस की जिस ने उसे बनाया!	وَالسَّمَاۗءِ وَمَا بَنٰىهَا ۙ﴿٥﴾
6. तथा धरती की सौगन्ध और जिस ने उसे फैलाया![1]	وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰىهَا ۙ﴿٦﴾
7. और जीव की सौगन्ध, तथा उस की जिस ने उसे ठीक ठीक सुधारा।	وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ۙ﴿٧﴾
8. फिर उसे दुराचार तथा सदाचार का विवेक दिया है।[2]	فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا ۙ﴿٨﴾
9. वह सफल हो गया जिस ने अपने जीव का सुद्धिकरण किया।	قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۙ﴿٩﴾
10. तथा वह क्षति में पड़ गया जिस ने उसे (पाप में) धंसा दिया।[3]	وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ۭ﴿١٠﴾
11. "समूद" जाति ने अपने दुराचार के कारण (ईश दूत) को झुठलाया।	كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ ۙ﴿١١﴾
12. जब उन में से एक हत्भागा तैयार हुआ।	اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰىهَا ۙ﴿١٢﴾

---

1 (1-6) इन आयतों का भावार्थ यह है कि जिस प्रकार सूर्य के विपरीत चाँद, तथा दिन के विपरीत रात है, इसी प्रकार पुन और पाप तथा इस संसार का प्रति एक दूसरा संसार परलोक भी है। और इन्हीं स्वभाविक लक्ष्यों से परलोक का विश्वास होता है।

2 (7-8) इन आयतों में कहा गया है कि अल्लाह ने इन्सान को शारीरिक और मांसिक शक्तियाँ दे कर बस नहीं किया, बल्कि उस ने पाप और पुन का स्वभाविक ज्ञान दे कर नबियों को भी भेजा। और वह़्यी (प्रकाशना) द्वारा पाप और पुन के सभी रूप समझा दिये। जिस की अन्तिम कड़ीः क़ुर्आन, और अन्तिम नबीः मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।

3 (9-10) इन दोनों आयतों में यह बताया जा रहा है कि अब भविष्य की सफलता और विसफलता इस बात पर निर्भर है कि कौन अपनी स्वभाविक योग्यता का प्रयोग किस के लिये कितना करता है। और इस प्रकाशनाः क़ुर्आन के आदेशों को कितना मानता और पालन करता है।

13. (ईश दूतः सालेह ने) उन से कहा कि अल्लाह की ऊँटनी और उस के पीने की बारी की रक्षा करो।

فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ﴿١٣﴾

14. किन्तु उन्होंने नहीं माना, और उसे बध कर दिया जिस के कारण उन के पालनहार ने यातना भेज दी और उन को चौरस कर दिया।

فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۙ۬ فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ۪ۙ ﴿١٤﴾

15. और वह इस के परिणाम से नहीं डरता।[1]

وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ﴿١٥﴾ ع

---

[1] (11-15) इन आयतों में समूद जाति का ऐतिहासिक उदाहरण दे कर दूतत्व (रिसालत) का महत्व समझाया गया है कि नबी इसलिये भेजा जाता है ताकि भलाई और बुराई का जो स्वभाविक ज्ञान अल्लाह ने इन्सान के स्वभाव में रख दिया है उसे उभारने में उस की सहायता करे। ऐसे ही एक नबी जिन का नाम सालेह था समूद जाति की ओर भेजे गये। परन्तु उन्होंने उन को नहीं माना, तो वे ध्वस्त कर दिये गये।

उस समय मक्का के मूर्ति पूजकों की स्थिति समूद जाति से मिलती जुलती थी। इसलिये उन को "सालेह" नबी की कथा सुना कर सचेत किया जा रहा है कि सावधानः कहीं तुम लोग भी समूद की तरह यातना में न घिर जाओ। वह तो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस प्राथना के कारण बच गये कि हे अल्लाह! इन्हें नष्ट न कर। क्योंकि इन्हीं में से ऐसे लोग उठेंगे जो तेरे धर्म का प्रचार करेंगे। इस लिये कि अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सारे संसारों के लिये दयालु बना कर भेजा था।

सूरह लैल[1]- 92

سُوْرَةُ الَّيْلِ

सूरह लैल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 21 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में "लैल" अर्थात रात की शपथ ली गई है, जिस के कारण इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- आयत 1 से 4 तक में कुछ गवाहियाँ प्रस्तुत कर के इस बात का तर्क दिया गया है कि जब मनुष्य के प्रयासों तथा कर्मों में अन्तर है तो उन के प्रतिफल में भी अन्तर का होना आवश्यक है।
- आयत 5 से 11 तक में सत्कर्मों और दुष्कर्मों की कुछ विशेषताओं का वर्णन कर के बताया है कि सत्कर्म पुन् की राह पर ले जाते हैं और दुष्कर्म पाप की राह पर ले जाते हैं।
- आयत 12 से 14 तक में बताया गया है कि अल्लाह का काम सीधी राह दिखा देना है और उस ने तुम्हें उसे दिखा दिया। संसार तथा परलोक का वही मालिक है। उस ने बता दिया है कि परलोक में क्या होना है।
- अन्त में दुराचारियों के बुरे अन्त तथा सदाचारियों के अच्छे अन्त को बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

1. रात्री की शपथ जब छा जाये!

2. तथा दिन की शपथ जब उजाला हो जाये!

وَالَّيۡلِ اِذَا يَغۡشٰىۙ ۝١

وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰىۙ ۝٢

---

1 इस सूरह का मूल विषय यह है कि सब कुछ अल्लाह के हाथ में है। वह किसी पर अन्याय नहीं करता। इसलिये सचेत कर दिया गया है कि बुरे काम का परिणाम बुरा होता है। और अच्छे काम का परिणाम अच्छा। अब यह बात तुम पर छोड़ी जा रही है कि तुम कोनसा मार्ग ग्रहण करते हो।

3. और उस की शपथ जिस ने नर और मादा पैदा किये!	وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰٓى ۙ٣
4. वास्तव में तुम्हारे प्रयास अलग अलग हैं।[1]	اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ۗ٤
5. फिर जिस ने दान दिया, और भक्ति का मार्ग अपनाया,	فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ۙ٥
6. और भली बात की पुष्टि करता रहा,	وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۙ٦
7. तो हम उस के लिये सरलता पैदा कर देंगे।	فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ۗ٧
8. परन्तु जिस ने कंजूसी की, और ध्यान नहीं दिया,	وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۙ٨
9. और भली बात को झुठला दिया।	وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۙ٩
10. तो हम उस के लिये कठिनाई को प्राप्त करना सरल कर देंगे।[2]	فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ۗ١٠

---

[1] (1-4) इन आयतों का भावार्थ यह है किः जिस प्रकार रात दिन तथा नर मादा (स्त्री-पुरुष) भिन्न हैं, और उन के लक्षण और प्रभाव भी भिन्न हैं, इसी प्रकार मानव जाति (इन्सान) के विश्वास, कर्म भी दो भिन्न प्रकार के हैं। और दोनों के प्रभाव और परिणाम भी विभिन्न हैं।

[2] (5-10) इन आयतों में दोनों भिन्न कर्मों के प्रभाव का वर्णन है कि कोई अपना धन भलाई में लगाता है तथा अल्लाह से डरता है और भलाई को मानता है। सत्य आस्था, स्वभाव और सत्कर्म का पालन करता है। जिस का प्रभाव यह होता है कि अल्लाह उस के लिये सत्कर्मों का मार्ग सरल कर देता है। और उस में पाप करने तथा स्वार्थ के लिये अवैध धन अर्जन की भावना नहीं रह जाती। ऐसे व्यक्ति के लिये दोनो लोक में सुख है। दूसरा वह होता है जो धन का लोभी, तथा अल्लाह से निश्चिन्त होता है और भलाई को नहीं मानता। जिस का प्रभाव यह होता है कि उस का स्वभाव ऐसा बन जाता है कि उसे बुराई का मार्ग सरल लगने लगता है। तथा अपने स्वार्थ और मनोकामना की पूर्ति के लिये प्रयास करता है। फिर इस बात को इस वाक्य पर समाप्त कर दिया गया है कि धन के लिये वह जान देता है परन्तु वह उसे अपने साथ लेकर नहीं जायेगा। फिर वह उस के किस काम आयेगा?

11. और जब वह गढ़े में गिरेगा तो उसका धन उसके काम नहीं आयेगा।	وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدّٰى (١١)
12. हमारा कर्त्तव्य इतना ही है कि हम सीधा मार्ग दिखा दें।	إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى (١٢)
13. जब कि आलोक परलोक हमारे ही हाथ में है।	وَإِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْأُوْلٰى (١٣)
14. मैं ने तुम को भड़कती आग से सावधान कर दिया है।[1]	فَأَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى (١٤)
15. जिस में केवल बड़ा हत्भागा ही जायेगा।	لَا يَصْلٰهَآ إِلَّا الْأَشْقَى (١٥)
16. जिस ने झुठला दिया, तथा (सत्य से) मुँह फेर लिया।	الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلّٰى (١٦)
17. परन्तु संयमी (सदाचारी) उस से बचा लिया जायेगा।	وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى (١٧)
18. जो अपना धन दान करता है ताकि पवित्र हो जाये।	الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكّٰى (١٨)
19. उस पर किसी का कोई उपकार नहीं जिसे उतारा जा रहा है।	وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰى (١٩)
20. वह तो केवल अपने परम पालनहार की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये है।	إِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلٰى (٢٠)

---

[1] (11-14) इन आयतों में मावन जाति (इन्सान) को सावधान किया गया है कि अल्लाह का, दया और न्याय के कारण मात्र यह दायित्व था कि सत्य मार्ग दिखा दे। और क़ुर्आन द्वारा उस ने अपना यह दायित्व पूरा कर दिया। किसी को सत्य मार्ग पर लगा देना उस का दायित्व नहीं है। अब इस सीधी राह को अपनाओगे तो तुम्हारा ही भला होगा। अन्यथा याद रखो कि संसार और परलोक दोनों ही अल्लाह के अधिकार में हैं। न यहाँ कोई तुम्हें बचा सकता है, और न वहाँ कोई तुम्हारा सहायक होगा।

21. निःसंदेह वह प्रसन्न हो जायेगा।[1]

وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ﴿٢١﴾

---

[1] (15-21) इन आयतों में यह वर्णन किया गया है कि कौन से कुकर्मी नरक में पड़ेंगे और कौन सुकर्मी उस से सुरक्षित रखे जायेंगे। और उन्हें क्या फल मिलेगा।
आयत नं॰10 के बारे में यह बात याद रखने की है कि अल्लाह ने सभी वस्तुओं और कर्मों का अपने नियामानुसार स्वभाविक प्रभाव रखा है। और कुर्आन इसी लिये सभी कर्मों के स्वभाविक प्रभाव और फल को अल्लाह से जोड़ता है। और यूँ कहता है कि अल्लाह ने उस के लिये बुराई की राह सरल कर दी। कभी कहता है कि उन के दिलों पर मुहर लगा दी, जिस का अर्थ यह होता है कि यह अल्लाह के बनाये हुये नियमों के विरोध का स्वभाविक फल है। (देखियेः उम्मुल किताब, मौलाना आज़ाद)

सूरह जुहा[1] - 93

سُورَةُ الضُّحَىٰ

सूरह जुहा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस के आरंभ में “जुहा” (दिन के उजाले) की शपथ ग्रहण करने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। [1]
- आयत 1 से 2 तक में दिन और रात की गवाही प्रस्तुत कर के इस की ओर संकेत किया गया है कि इस संसार में अल्लाह ने जैसे उजाला और अंधेरा दोनों बनाये हैं इसी प्रकार परीक्षा के लिये दुःख और सुख भी बनाये हैं।
- आयत 3 में बताया गया है कि सत्य की राह में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिस दुःख का सामना कर रहे हैं उस से यह नहीं समझना चाहिये कि अल्लाह ने आप से खिन्न हो कर आप को छोड़ दिया है।
- आयत 4,5 में आप को सफलताओं की शुभसूचना दी गई है।
- आयत 6 से 8 तक में उन दुःखों की चर्चा की गई है जिन से आप नबी होने से पहले जूझ रहे थे तो अल्लाह के उपकारों से आप की राहें खुलीं।

---

1 यह सूरह आरंभिक युग की है। भाष्य कारों ने लिखा है कि कुछ दिन के लिये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर प्रकाशना (वह्यी) का उतरना रुक गया। जिस पर आप अति दुःखित और चिन्तित हो गये कि कहीं मुझ से कोई दोष तो नहीं हो गया? इस पर आप को सांत्वना देने के लिये यह सूरह अवतीर्ण हुई। इस में सर्व प्रथम प्रकाशित दिन तथा रात्री की शपथ ले कर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को विश्वास दिलाया गया है कि आप के पालनहार ने न तो आप को छोड़ा है और न ही आप से अप्रसन्न हुआ है। इसी के साथ आप को यह शुभ सूचना भी दी गई है कि आगामी समय आप के लिये प्रथम समय से उत्तम होगा। यह भविष्य वाणी उस समय की गई जब इस के दूर दूर तक कोई लक्षण नहीं दिखाई पड़ रहे थे। सम्पूर्ण मक्का आप का विरोधी हो गया था। और अल्लाह के सिवा आप का कोई सहायक नहीं था। परन्तु मात्र इक्कीस वर्षों में पूरा मक्का इस्लाम का अनुयायी बन गया। और फिर पूरे अरब द्वीप में इस्लाम का ध्वजा लहराने लगा। और कुर्आन की यह भविष्यवाणी शत प्रतिशत पूरी हुई जो कुर्आन के अल्लाह का वचन होने का पमाण बन गई।

- आयत 9 से 11 तक में यह बताया गया है कि इन उपकारों के कारण आप का व्यवहार निर्बलों तथा अनाथों की सहायता एवं अल्लाह के उपकारों का स्वीकार तथा प्रदर्शन होना चाहिये।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
1. शपथ है दिन चढ़े की!	وَالضُّحٰى ۙ١
2. और शपथ है रात्री की जब उस का सन्नाटा छा जाये!	وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۙ٢
3. (हे नबी) तेरे पालनहार ने तुझे न तो छोड़ा और न ही विमुख हुआ।	مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ؕ٣
4. और निश्चय ही आगामी युग तेरे लिये प्रथम युग से उत्तम है।	وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ؕ٤
5. और तेरा पालनहार तुम्हें इतना देगा कि तू प्रसन्न हो जायेगा।	وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ؕ٥
6. क्या उस ने तुम्हे अनाथ पा कर शरण नहीं दी?	اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ۪٦
7. और तुझे पथ भूला हुआ पाया तो सीधा मार्ग नहीं दिखाया?	وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ۪٧
8. और निर्धन पाया तो धनी नहीं कर दिया?	وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ؕ٨
9. तो तुम अनाथ पर क्रोध न करना।[1]	فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ؕ٩

---

[1] (1-9) इन आयतों में अल्लाह ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़रमाया है किः तुम्हें यह चिन्ता कैसे हो गई कि हम अप्रसन्न हो गये? हम ने तो तुम्हारे जन्म के दिन से निरंतर तुम पर उपकार किये हैं। तुम अनाथ थे तो तुम्हारे पालन और रक्षा की व्यवस्था की। राह से अंजान थे तो राह दिखाई। निर्धन थे तो धनी बना दिया। यह बातें बता रही हैं कि तुम आरम्भ ही से हमारे प्रियवर हो और तुम पर हमारा उपकार निरंतर है।

10. और माँगने वाले को न झिड़कना।

11. और अपने पालनहार के उपकार का वर्णन करना।[1]

وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنۡهَرۡ ؕ ١٠

وَاَمَّا بِنِعۡمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثۡ ١١ ع

---

[1] (10-11) इन अन्तिम आयतों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बताया गया है किः हम ने तुम पर जो उपकार किये हैं उन के बदले में तुम अल्लाह की उत्पत्ति के साथ दया और उपकार करो यही हमारे उपकारों की कृतज्ञता होगी।

सूरह शर्ह[1] - 94

سُوْرَةُ الشَّرْحِ

सूरह शर्ह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 8 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में इन शब्दों के आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। जिस का अर्थ हैः साहस, संतोष तथा सत्य को अपनाना है।
- इस की प्रथम आयत 1 से 3 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर अल्लाह के इसी उपकार तथा आप से बोझ उतार देने का वर्णन है।[1]
- आयत 4 में आप की शखन और चर्चा ऊँची करने की शुभसूचना दी गई है।
- आयत 5 से 6 तक में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को संतोष दिलाया गया है कि वर्तमान कठिन स्थितियों के पश्चात् अच्छी स्थितियाँ आने ही को हैं।
- आयत 7 से 8 तक में यह निर्देश दिया गया है कि जब आप अपने संसारिक कार्य पूरे कर लें तो अपने पालनहार की वंदना (उपासना) में प्रयास करें और उसी की ओर ध्यानमग्न हो जायें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝١

1. (हे नबी) क्या हम ने तुम्हारे लिये तुम्हारा वक्ष (सीना) नहीं खोल दिया?

وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۝٢

2. और तुम्हारा बोझ नहीं उतार दिया?

---

1 इस सूरह का विषय सूरह जुहा ही के समान है। परन्तु इस में सत्य का उपदेश देने के समय नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को जिन स्थितियों का सामना करना पड़ा कि जिस समाज में आप का बड़ा आदर मान था, वही समाज अब आप का विरोधी बन गया। कोई आप की बात सुनने को तैयार न था। यह आप के लिये बड़ी घोर स्थिति थी। अतः आप को सांत्वना दी गई कि आप हताश न हों बहुत शीघ्र ही यह अवस्था बदल जायेगी।

3. जिस ने तुम्हारी पीठ तोड़ दी थी।	الَّذِيْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۙ﴿٣﴾
4. और तुम्हारी चर्चा को ऊँचा कर दिया।[1]	وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۗ﴿٤﴾
5. निश्चय कठिनाई के साथ आसानी भी है।	فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۙ﴿٥﴾
6. निश्चय कठिनाई के साथ आसानी भी है।[2]	اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۗ﴿٦﴾

---

[1] (1-4) इन का भावार्थ यह है कि हम ने आप पर तीन ऐसे उपकार किये हैं जिन के होते आप को निराश होने की आवश्यक्ता नहीं। एक यह कि आप के वक्ष को खोल दिया, अर्थात आप में स्थितियों का सामना करने का साहस पैदा कर दिया। दूसरा यह कि नबी होने से पहले जो आप के दिल में अपनी जाति की मूर्ति पूजा और सामाजिक अन्याय को देख कर चिन्ता और शोक का बोझ था जिस के कारण आप दुःखित रहा करते थे। इस्लाम का सत्य मार्ग दिखा कर उस बोझ को उतार दिया। क्योंकि यही चिन्ता आप की कमर तोड़ रही थी। और तीसरा विशेष उपकार यह कि आप का नाम ऊँचा कर दिया। जिस से अधिक तो क्या आप के बराबर भी किसी का नाम इस संसार में नहीं लिया जा रहा है। यह भविष्यवाणी कुर्आन शरीफ़ ने उस समय की जब एक व्यक्ति का विरोध उस की पूरी जाति और समाज तथा उस का परिवार तक कर रहा था। और यह सोचा भी नहीं जा सकता था कि वह इतना बड़ा विश्व विख्यात व्यक्ति हो सकता है। परन्तु समस्त मानव संसार कुर्आन की इस भविष्यवाणी के सत्य होने का साक्षी है। और इस संसार का कोई क्षण ऐसा नहीं गुज़रता जब इस संसार के किसी देश और क्षेत्र में अजानों में "अशहदु अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह" की आवाज़ न गूँज रही हो। इस के सिवा भी पूरे विश्व में जितना आप का नाम लिया जा रहा है और जितना कुर्आन का अध्ययन किया जा रहा है वह किसी व्यक्ति और किसी धर्म पुस्तक को प्राप्त नहीं, और यही अन्तिम नबी और कुर्आन के सत्य होने का साक्ष्य है, जिस पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिये।

[2] (5-6) इन आयतों में विश्व का पालनहार अपने भक्त (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को विश्वास दिला रहा है कि उलझनों का यह समय देर तक नहीं रहेगा इसी के साथ सरलता तथा सुविधा का समय भी लगा आ रहा है। अर्थात आप का आगामी युग व्यतीत युग से उत्तम होगा जैसा कि "सूरह जुहा" में कहा गया है।

فَإِذَا فَرَغْتَ فَٱنصَبْ ٧

7. अतः जब अवसर मिले तो आराधना में प्रयास करो।

وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَٱرْغَب ٨

8. और अपने पालनहार की ओर ध्यान मग्न हो जाओ।[1]

---

[1] (7-8) इन अन्तिम आयतों में आप को निर्देश दिया गया है कि जब अवसर मिले तो अल्लाह की उपासना में लग जाओ, और उसी में ध्यान मग्न हो जाओ, यही सफलता का मार्ग है।

सूरह तीन[1] - 95

سُورَةُ التِّين

सूरह तीन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 8 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में “तीन” शब्द, जिस का अर्थः इंजीर है, के आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक उन स्थानों को गवाही में प्रस्तुत किया गया है जिन से बड़े बड़े नबी उठे और मार्गदर्शन का प्रकाश फैला।

---

[1] "तीन" का अर्थ हैः इन्जीर। इसी शब्द से इस सूरह का नाम लिया गया है। फ़लस्तीन तथा शाम जो प्राचीन युग से नबियों के केंद्र चले आ रहे थे, जैतून तथा इंजीर की उपज का क्षेत्र था। और मक्के के लोग इन देशों में व्यापार के लिये जाया करते थे, इसलिये वे उनकी मुहब्बत से भली भाँती परिचित थे।
"तूर" पर्वत सीना के मरुस्थल में है। यहीं पर मूसा (अलैहिस्सलाम) को धर्म विधान प्रदान किया गया था।
"शान्ति नगर" से अभिप्रायः मक्का नगर है। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की दुआ के कारण इस का नाम शान्ति का नगर रखा गया है। जिस में अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूरे मानव विश्व के पथ प्रदर्शक बना कर भेजे गये।
इस की भूमिका यह है कि सर्व प्रथम उत्साह शील नबियों के केन्द्रों को शपथ अर्थात साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत कर के यह बताया गया है कि अल्लाह ने इन्सान को अति उत्तम रूप रेखा में सर्वोच्च स्वभाव एवं योग्यताओं के साथ पैदा किया है। परन्तु इस उच्चता को स्थित रखने तथा इन उत्तम योग्यताओं को उभारने के लिये उस का यह नियम बनाया है किः जो ईमान (विश्वास) तथा सत्कर्म की राह अपनायेंगे, जो कुर्आन की राह है और इस राह की कठिनाईयों से संघर्ष करने का साहस करेंगे तो उन्हें परलोक में अपने प्रयासों का भरपूर पुरस्कार मिलेगा। और जो संसारिक स्वार्थ और सुख के लिये इस राह की कठिनाईयों का सामना करने का साहस नहीं करेंगे, अल्लाह उन्हें उसी राह पर छोड़ देगा। और अन्ततः उस गढ़े में जा गिरेंगे जो इस के राहियों का भाग्य है।
भावार्थ यह है कि जब इन्सानों के दो भेद हैं तो न्यायोचित यही है कि उन के कर्मों के फल भी दो हों। फिर अल्लाह जो न्यायधीशों का न्यायधीश है वह न्याय क्यो नहीं करेगा?। (तर्जुमानुल कुर्आन)

- आयत 4 से 6 तक में बताया गया है कि अल्लाह ने इन्सान को उत्तम रूप पर पैदा किया है ताकि वह ऊँचा स्थान प्राप्त करे। किन्तु वह नीचा बन गया और बहुत नीची खाई में जा पड़ा। फिर जिस ने ईमान और सदाचार कर के ऊँचा स्थान प्राप्त कर लिया, तो वह सफल हो गया। और उस के लिये अनन्त प्रतिफल है।
- आयत 7 से 8 तक में कहा गया है कि अल्लाह सब से बड़ा न्यायधीश है। तो उस के यहाँ यह कैसे हो सकता है कि अच्छे-बुरे सब परिणाम में बराबर हो जायें? या दोनों का कोई परिणाम और प्रतिफल ही न हो? यह बात न्यायोचित नहीं है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
1. इंजीर तथा जैतून की शपथ!	وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ١
2. एंव "तूरे सीनीन" की शपथ!	وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ٢
3. और इस शान्ति के नगर की शपथ!	وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ٣
4. हम ने इन्सान को मनोहर रूप में पैदा किया है।	لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ٤
5. फिर उसे सब से नीचे गिरा दिया।	ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ٥
6. परन्तु जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये उन के लिये ऐसा बदला है जो कभी समाप्त नहीं होगा।	اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ٦
7. फिर तुम (मानव जाति) प्रतिफल (बदले) के दिन को क्यों झुठलाते हो?	فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ٧
8. क्या अल्लाह सब अधिकारियों से बढ़ कर अधिकारी नहीं?	اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ٨

सूरह अलक़[1]- 96

سُورَةُ العَلَق

सूरह अलक़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 19 आयतें हैं।

- इस की आयत 2 में इन्सान के अलक़ अर्थात बंधे हुये रक्त से पैदा किये जाने की चर्चा की गई है। इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- इस की आयत 1 से 5 तक में क़ुर्आन पढ़ने का निर्देश दिया गया है। तथा बताया गया है कि अल्लाह ने मनुष्य को कैसे पैदा किया और ज्ञान प्रदान किया है?
- इस की आयत 6 से 8 तक इन्सान को चेतावनी दी गयी है कि वह अल्लाह के इन उपकारों का आदर न कर के कैसे उल्लंघन करता है? जब कि उसे फिर अल्लाह ही के पास पहुंचना है?
- आयत 9 से 14 तक उस की निन्दा की गई है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का विरोध करता था और आप की राह में बाधायें उत्पन्न करता था।
- आयत 15 से 18 तक विरोधियों को बुरे परिणाम की चेतावनी दी गई है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और ईमान वालों को निर्देश दिया गया है कि उस की बात न मानो और अल्लाह की वंदना में लगे रहो।

हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पहले सच्चा सपना देखते थे फिर जिब्रील आये और आप को यह (पाँच) आयतें पढ़ाईं। (सहीह बुख़ारीः 4955)

अबू जहल ने कहा कि यदि मुहम्मद को काबा के पास नमाज़ पढ़ते देखा तो उस की गर्दन रौंद दूँगा। जब आप को इस की सूचना मिली तो कहाः यदि

---

[1] यह सूरह मक्की है। और इस की प्रथम पाँच आयतें पहली वह्यी (प्रकाशना) हैं जैसा कि बुख़ारी (हदीस नं॰ 4953) और मुस्लिम (हदीस नं॰ 160) में आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से उल्लिखित है। इस का दूसरा भाग उस समय उतरा जब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आप के मूर्ति पूजक चचा अबू जहल ने "काबा" के पास नमाज़ से रोक दिया। सूरह के अन्त में आप को निर्भय हो कर नमाज़ अदा करने और धमकियों पर ध्यान न देने के लिये कहा गया है।

वह ऐसा करता तो फ़रिश्ते उसे पकड़ लेते। (सहीह बुख़ारीः 4958)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
1. अपने उस पालनहार के नाम से पढ़ जिस ने पैदा किया	اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ۚ ①
2. जिस ने मनुष्य को रक्त के लोथड़े से पैदा किया।	خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ ②
3. पढ़, और तेरा पालनहार बड़ा दया वाला है।	اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۙ ③
4. जिस ने लेखनी के द्वारा ज्ञान सिखाया।	الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ ④
5. इन्सान को उस का ज्ञान दिया जिस को वह नहीं जानता था।[1]	عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ؕ ⑤

---

1 (1-5) इन आयतों में प्रथम वह्यी (प्रकाशना) का वर्णन है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्का से कुछ दूर "जबले नूर" (ज्योति पर्वत) की एक गुफा में जिस का नाम "हिरा" है जाकर एकान्त में अल्लाह को याद किया करते थे। और वहीं कई दिन तक रह जाते थे। एक दिन आप इसी गुफा में थे किः अकस्मात आप पर प्रथम वह्यी (प्रकाशना) लेकर फ़रिश्ता उतरा। और आप से कहा "पढ़ो"। आप ने कहा, मैं पढ़ना नहीं जानता। इस पर फ़रिश्ते ने आप को अपने सीने से लगाकर दबाया। इसी प्रकार तीन बार किया और आप को पाँच आयतें सुनाईं। यह प्रथम प्रकाशना थी। अब आप मुहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह से मुहम्मद रसूलुल्लाह हो कर डरते काँपते घर आये। इस समय आप की आयु 40 वर्ष थी। घर आकर कहा कि मुझे चादर उढ़ा दो। जब कुछ शांत हुये तो अपनी पत्नी ख़दीजा (रज़ियल्लाहु अन्हा) को पूरी बात सुनाई। उन्हों ने आप को सांत्वना दी और अपने चचा के पुत्र "वरक़ा बिन नौफल" के पास ले गईं जो ईसाई विद्वान थे। उन्हों ने आप की बात सुन कर कहाः यह वही फ़रिश्ता है जो मूसा (अलैहिस्सलाम) पर उतारा गया था। काश मैं तुम्हारी नुबुव्वत (दूतत्व) के समय शक्ति शाली युवक होता और उस समय तक जीवित रहता जब तुम्हारी जाति तुम्हें मक्के से निकाल देगी। आप ने कहा क्या लोग मुझे निकाल देंगे? वरक़ा ने कहा, कभी ऐसा नहीं हुआ कि जो आप

6. वास्तव में इन्सान सरकशी करता है।

كَلَّآ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَيَطْغٰىٓ ٦

7. इसलिये कि वह स्वंय को निश्चन्त (धनवान) समझता है।

أَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ٧

8. निः संदेह फिर तेरे पालनहार की ओर पलट कर जाना है।[1]

إِنَّ إِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ٨

9. क्या तुम ने उस को देखा जो रोकता है।

أَرَءَيْتَ الَّذِيْ يَنْهٰى ٩

10. एक भक्त को जब वह नमाज़ अदा करे।

عَبْدًا إِذَا صَلّٰى ١٠

11. भला देखो तो, यदि वह सीधे मार्ग पर हो।

أَرَءَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰىٓ ١١

12. या अल्लाह से डरने का आदेश देता हो?

أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوٰى ١٢

13. और देखो तो, यदि उस ने झुठलाया तथा मुँह फेरा हो?[2]

أَرَءَيْتَ إِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ١٣

14. क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह उसे

أَلَمْ يَعْلَمْ بِأَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ١٤

लाये हैं उस से शत्रुता न की गई हो। यदि मैं ने आप का वह समय पाया तो आप की भरपूर सहायता करूँगा।
परन्तु कुछ ही समय गुज़रा था कि वरक़ा का देहान्त हो गया। और वह समय आया जब आप को 13 वर्ष बाद मक्का से निकाल दिया गया। और आप मदीना की ओर हिज्रत (प्रस्थान) कर गये। (देखियेः इब्ने कसीर)
आयत नं॰ 1 से 5 तक निर्देश दिया गया है कि अपने पालनहार के नाम से उस के आदेशः कुर्आन का अध्ययन करो जिस ने इन्सान को रक्त के लोथड़े से बनाया। तो जिस ने अपनी शक्ति और दक्षाता से जीता जागता इन्सान बना दिया वह उसे पुनः जीवित कर देने की भी शक्ति रखता है। फिर ज्ञान अर्थात कुर्आन प्रदान किये जाने की शुभ सूचना दी गई है।

[1] (6-8) इन आयतों में उन को धिक्कारा है जो धन के अभिमान में अल्लाह की अवज्ञा करते हैं और इस बात से निश्चिन्त हैं किः एक दिन उन्हें अपने कर्मों का जवाब देने के लिये अल्लाह के पास जाना भी है।

[2] (9-13) इन आयतों में उन पर धिक्कार है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरोध पर तुल गये। और इस्लाम और मुसलमानों की राह में रुकावट न डालते और नमाज़ से रोकते हैं।

देख रहा है?

15. निश्चय यदि वह नहीं रुकता तो हम उसे माथे के बल घसीटेंगे।

16. झूठे और पापी माथे के बल।

17. तो वह अपनी सभा को बुला ले।

18. हम भी नरक के फ़रिश्तों को बुलायेंगे।[1]

19. (हे भक्त) कदापि उस की बात न सुनो तथा सज्दा करो और मेरे समीप हो जाओ।[2]

كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ۙ۝١٥

نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۚ۝١٦

فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ۙ۝١٧

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۙ۝١٨

كَلَّا ؕ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۩۝١٩

---

1 (14-18) इन आयतों में सत्य के विरोधी को दुष्परिणाम की चेतावनी है।

2 (19) इस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के माध्यम से साधारण मुसलमानों को निर्देश दिया गया है कि सहन शीलता के साथ किसी धमकी पर ध्यान देते हुये नमाज़ अदा करते रहो ताकि इस के द्वारा तुम अल्लाह के समीप हो जाओ।

सूरह क़द्र[1] - 97

سُورَةُ القَدْرِ

सूरह क़द्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं।[1]

- इस में क़ुर्आन के क़द्र की रात में उतारे जाने की चर्चा की गई है। इस लिये इस का यह नाम रखा गया है। क़द्र का अर्थ हैः आदर और सम्मान।
- इस में सब से पहले बताया गया है कि क़ुर्आन कितनी महान् रात्रि में अवतरित किया गया है। फिर इस शुभ रात की प्रधानता का वर्णन किया गया है और उसे भोर तक सर्वथा शान्ति की रात कहा गया है।

इस से अभिप्राय यह बताना है कि जो ग्रन्थ इतनी शुभ रात में उतरा उस का पालन तथा आदर न करना बड़े दुर्भाग्य की बात है।

हदीस में है कि इस रात की खोज रमज़ान के महीने की दस अन्तिम रातों की विषम (ताक़) रात में करो। (सहीह बुख़ारीः 2017, तथा सहीह मुस्लिमः 1169)

दूसरी हदीस में है कि जो क़द्र की रात में ईमान के साथ पुन् प्राप्त करने के लिये नमाज़ पढ़ेगा उस के पहले के पाप क्षमा कर दिये जायेंगे। (सहीह बुख़ारीः 37, तथा सहीह मुस्लिमः 759)

---

[1] इस सूरह को अधिकांश भाष्य कारों ने मक्की लिखा है। और कुछ ने मद्नी बताया है। परन्तु इस का प्रसंग मक्की होने के समर्थन में है।
इसी "लैलतुल क़द्र" (सम्मानित रात्री) को सूरह दुख़ान में "लैलतुन मुबारकह" (शुभ रात्री) कहा गया है। यह शुभ रात्रि रमज़ान मुबारक ही की एक रात है। इसी कारण सूरह "बक़रः" में कहा गया है कि रमज़ान मुबारक के महीने में क़ुर्आन शरीफ़ उतारा गया। अर्थात इसी रात्रि में सम्पूर्ण क़ुर्आन उन फ़रिश्तों को दे दिया गया जो वह्यी (प्रकाशना) लाने के लिये नियुक्त थे। फिर 23 वर्ष में आवश्यकता के अनुसार क़ुर्आन उतारा जाता रहा। यदि इस का अर्थ यह लिया जाये कि इस के उतारने का आरम्भ रमजान मुबारक से हुआ तो यह भी सहीह है। दोनों में अर्थ यही निकलता है कि क़ुर्आन रमज़ान मुबारक में उतरा। और इसी शुभ रात्री में सूरह अलक़ की प्रथम पाँच आयतें उतारी गईं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

1. निःसंदेह हम ने उस (क़ुर्आन) को "लैलतुल क़द्र" (सम्मानित रात्रि) में उतारा।

إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ فِى لَيْلَةِ ٱلْقَدْرِ ①

2. और तुम क्या जानो कि वह "लैलतुल क़द्र" (सम्मानित रात्रि) क्या है?

وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا لَيْلَةُ ٱلْقَدْرِ ②

3. लैलतुल क़द्र (सम्मानित रात्रि) हज़ार मास से उत्तम है।[1]

لَيْلَةُ ٱلْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ③

4. उस में (हर काम को पूर्ण करने के लिये) फ़रिश्ते तथा रूह (जिबरील) अपने पालनहार की आज्ञा से उतरते हैं।[2]

تَنَزَّلُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ④

5. वह शान्ति की रात्री है, जो भोर होने तक रहती है।[3]

سَلَٰمٌ هِىَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ ٱلْفَجْرِ ⑤

---

1 हज़ार मास से उत्तम होने का अर्थ यह है किः इस शुभ रात्रि में इबादत की बहुत बड़ी प्रधानता है। अबु हुरैरह (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत (उदघृत) है कि जो व्यक्ति इस रात में ईमान (सत्य विश्वास) के साथ तथा पुण्य की नीति से इबादत करे तो उस के सभी पहले के पाप क्षमा कर दिये जाते हैं। (देखियेः सहीह बुख़ारी, हदीस नं॰ 35, तथा सहीह मुस्लिम, हदीस नं॰ 760)

2 "रूह" से अभिप्रायः जिब्रील अलैहिस्सलाम हैं। उन की प्रधानता के कारण सभी फ़रिश्तों से उन की अलग चर्चा की गई है। और यह भी बताया गया है कि वे स्वंय नहीं बल्कि अपने पालनहार की आज्ञा से ही उतरते हैं।

3 इस का अर्थ यह है कि संध्या से भोर तक यह रात्रि सर्वथा शुभ तथा शान्तिमय होती है। सहीह हदीसों से स्पष्ट होता है कि यह शुभ रात्रि रमजान की अन्तिम दस रातों में से कोई एक रात है। इसलिये हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन दस रातों को अल्लाह की उपासना में बिताते थे।

सूरह बय्यिनह[1] - 98

سُورَةُ البَيِّنَةِ

सूरह बय्यिनह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 8 आयतें हैं।[1]

- इस की प्रथम आयत में बैयिनह अर्थातः प्रकाशित प्रमाण की चर्चा हुई है जिस से इस का यह नाम रखा गया है।
- इस की आयत 1 से 3 तक में यह बताया गया है कि लोगों को कुफ़्र से निकालने के लिये यह आवश्यक था कि एक ग्रन्थ के साथ एक रसूल भेजा जाये ताकि वह धर्म को सहीह रूप में प्रस्तुत करे।
- आयत 4,5 में बताया गया है कि अहले किताब (अर्थात यहूदी और ईसाई) के पास प्रकाशित शिक्षा आ चुकी थी किन्तु वे विभेद में पड़ गये। और उन्होंने धर्म की वास्तविक शिक्षा भुला दी।
- आयत 6 से 8 तक रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इन्कार की दुःखद यातना को और रसूल पर ईमान ला कर अल्लाह से डरते हुये जीवन बिताने की सफलता को बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

1. अहले किताब के काफ़िर, और मुश्रिक लोग ईमान लाने वाले नहीं थे जब तक कि उन के पास खुला प्रमाण न आ जाये।

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۙ①

2. अर्थातः अल्लाह का एक रसूल, जो पवित्र ग्रन्थ पढ़ कर सुनाये।

رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۙ②

---

1 इस सूरह को साधारण भाष्यकारों ने मदनी लिखा है। परन्तु कुछ सहाबा (रजियल्लाहु अन्हुम) ने इसे मक्की कहा है। इस को इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह सूरह मक्के के अन्तिम काल तथा मदीने के प्रथम काल के बीच अवतीर्ण हुई।

3. जिस में उचित आदेश हैं।[1]

4. और जिन लोगों को ग्रन्थ दिये गये उन्होंने इस खुले प्रमाण के आ जाने के पश्चात ही मतभेद किया।[2]

5. और उन्हें केवल यही आदेश दिया गया था कि वे धर्म को शुद्ध कर रखें, और सब को तज कर केवल अल्लाह की उपासना करें, नमाज़ अदा करें, और ज़कात दें। और यही शाश्वत धर्म है।[3]

6. निः संदेह जो लोग अहले किताब में से काफ़िर हो गये, तथा मुश्रिक (मिश्रणवादी) तो वे सदा नरक की आग में रहेंगे। और वही सब से दुष्टतम् जन हैं।

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۝٣

وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ
بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝٤

وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ
الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ
وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ۝٥

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ
فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝٦

---

[1] (1-3) इस सूरह में सर्वप्रथम यह बताया गया है कि इस पुस्तक के साथ एक रसूल (ईश दूत) भेजना क्यों आवश्यक था। इस का कारण यह है कि मानव संसार के आदि शास्त्र धारी (यहूद तथा ईसाई) हों या मिश्रणवादी अधर्म की ऐसी स्थिता में फंसे हुये थे कि एक नबी के बिना उन का इस स्थिति से निकलना संभव न था। इसलिये इस चीज़ की आवश्यक्ता आई कि एक रसूल भेजा जाये जो स्वंय अपनी रिसालत (दूतत्व) का ज्वलंत प्रमाण हो। और सब के सामने अल्लाह की किताब को उस के सहीह रूप में प्रस्तुत करे जो असत्य के मिश्रण से पवित्र हो जिस से आदि धर्म शास्त्रों को लिप्त कर दिया गया है।

[2] इस के बाद आदि धर्म शास्त्रों के अनुयाईयों के कुटमार्ग का विवरण दिया गया है कि इस का कारण यह नहीं था कि अल्लाह ने उन को मार्गदर्शन नहीं दिया। बल्कि वे अपने धर्म ग्रन्थों में मन माना परिवर्तन कर के स्वंय कुटमार्ग का कारण बन गये।

[3] इन में यह बताया गया है कि अल्लाह की ओर से जो भी नबी आये सब की शिक्षा यही थी कि सब रीतियों को त्याग कर मात्र एक अल्लाह की उपासना की जाये। इस में किसी देवी देवता की पूजा अर्चना का मिश्रण न किया जाये। नमाज़ की स्थापना की जाये, ज़कात दी जाये। यही सदा से सारे नबियों की शिक्षा थी।

7. जो लोग ईमान लाये, तथा सदाचार करते रहे तो वही सब से सर्वश्रेष्ठ जन हैं।

8. उन का प्रतिफल उन के पालनहार की ओर से सदा रहने वाले बाग़ हैं। जिन के नीचे नहरें बहती होंगी। वे उन में सदा निवास करेंगे। अल्लाह उन से प्रसन्न हुआ, और वे अल्लाह से प्रसन्न हुये। यह उस के लिये है जो अपने पालनहार से डरे।[1]

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ أُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ
الْبَرِيَّةِ ۗ ۝٧

جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۗ
ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ۝٨

---

[1] (6-8) इन आयतों में साफ़ साफ़ कह दिया गया है कि जो अहले किताब और मूर्तियों के पुजारी इस रसूल को मानने से इन्कार करेंगे तो वे बहुत बुरे हैं। और उन का स्थान नरक है। उसी में वे सदा रहेंगे। और जो संसार में अल्लाह से डरते हुये जीवन निर्वाह करेंगे तथा विश्वास के साथ सदाचार करेंगे तो वे सदा के स्वर्ग में रहेंगे। अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया, और वे अल्लाह से प्रसन्न हो गये।

सूरह ज़िलज़ाल[1]- 99

سُوْرَةُ الزِّلْزَالِ

सूरह ज़िलज़ाल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 8 आयतें हैं।

- इस में प्रलय के दिन के भूकम्प की चर्चा हुई है जो ((ज़िलज़ाल)) का अर्थ है। इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक में धरती की उस दशा की चर्चा है जो प्रलय के दिन होगी और जिसे देख कर मनुष्य चकित रह जायेगा।
- आयत 4 से 5 तक में यह बताया गया है कि उस दिन धरती बोलेगी और अपनी कथा सुनायेगी कि मनुष्य उस के ऊपर रह कर क्या करता रहा है। जो उस की ओर से मनुष्य के कर्मों पर गवाही होगी।
- आयत 6 से 8 तक में बताया गया है कि उस दिन लोग विभिन्न गिरोहों में हो कर अपने कर्मों को देखने के लिये निकल पड़ेंगे और प्रत्येक की छोटी बड़ी अच्छाई और बुराई उस के सामने आ जायेगी।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
1. जब धरती को पूरी तरह झंझोड़ दिया जायेगा।	إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝١
2. तथा भूमी अपने बोझ बाहर निकाल देगी।	وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ۝٢
3. और इन्सान कहेगा कि इसे क्या हो गया?	وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ۝٣

---

1 यह सूरह मक्की है। क्योंकि इस में वर्णित विषय इसी का समर्थन करता है। परन्तु कुछ विद्वानों का विचार है कि यह मदीने में अवतीर्ण हुई। इस सूरह के अन्दर संसार के पश्चात दूसरे जीवन तथा उस में कर्मों का पूरा हिसाब लिये जाने का वर्णन है।

4. उस दिन वह अपनी सभी सुचनायें वर्णन कर देगी।	يَوۡمَئِذٖ تُحَدِّثُ أَخۡبَارَهَا ٤
5. क्योंकि तेरे पालनहार ने उसे यही आदेश दिया है।	بِأَنَّ رَبَّكَ أَوۡحَىٰ لَهَا ٥
6. उस दिन लोग तितर बितर होकर आयेंगे ताकि वह अपने कर्मों को देख लें।[1]	يَوۡمَئِذٖ يَصۡدُرُ ٱلنَّاسُ أَشۡتَاتٗا لِّيُرَوۡاْ أَعۡمَٰلَهُمۡ ٦
7. तो जिस ने एक कण के बराबर भी पुण्य किया होगा उसे देख लेगा।	فَمَن يَعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ خَيۡرٗا يَرَهُۥ ٧
8. और जिस ने एक कण के बराबर भी बुरा किया होगा उसे देख लेगा।[2]	وَمَن يَعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٖ شَرّٗا يَرَهُۥ ٨

---

[1] (1-6) इन आयतों में बताया गया है कि जब प्रलय (क़्यामत) का भूकम्प आयेगा तो धरती के भीतर जो कुछ भी है, सब उगल कर बाहर फेंक देगी। यह सब कुछ ऐसे होगा कि जीवित होने के पश्चात् सभी को आश्चर्य होगा कि यह क्या हो रहा है? उस दिन यह निर्जीव धरती प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों की गवाही देगी कि किस ने क्या क्या कर्म किये हैं। यद्यपि अल्लाह सब के कर्मों को जानता है फिर भी उस का निर्णय गवाहियों से प्रमाणित कर के होगा।

[2] (7-8) इन आयतों का अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अकेला आयेगा, परिवार और साथी सब बिखर जायेंगे। दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि इस संसार में जो किसी भी युग में मरे थे सभी दलों में चले आ रहे होंगे, और सब को अपने किये हुये कर्म दिखाये जायेंगे। और कर्मानुसार पुण्य और पाप का बदला दिया जायेगा। और किसी का पुण्य और पाप छिपा नहीं रहेगा।

सूरह आदियात[1] - 100

سُورَةُ العَادِيَات

सूरह आदियात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस सूरह में ((आदियात)) अर्थात दौड़ने वाले घोड़ों की शपथ ली गई है। इस लिये इस का नाम “सूरह आदियात” रखा गया है।[1]
- इस की आयत 1 से 5 तक में घोड़ों को इस बात की गवाही के लिये प्रस्तुत किया गया है कि मनुष्य अपने पालनहार की प्रदान की हुई शक्तियों का कितना ग़लत प्रयोग करता है।
- आयत 6 से 8 तक में मनुष्य की धन के मोह में अल्लाह का उपकार न मानने पर निन्दा की गई है।
- अन्तिम दो आयतों में उसे सावधान किया गया है कि प्रलय के दिन उसे क़ब्रों से निकल कर अल्लाह के पास उपस्थित होना है। उस दिन उस के दिल की दशा खुल कर सामने आ जायेगी कि उस नें संसार में जो भी कर्म किये हैं वह किस भावना और विचार से किये हैं जिसे उस ने अपने दिल में छुपा रखा था।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।
وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۝١	1. उन घोड़ों की शपथ जो दोड़ कर हाँफ जाते हैं!
فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۝٢	2. फिर पत्थरों पर टाप मार कर चिंगारियाँ निकालने वालों की शपथ!
فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۝٣	3. फिर प्रातः काल में धावा बोलने वालों की शपथ!
فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۝٤	4. जो धूल उड़ाते हैं।

---

[1] इस सूरह में वर्णित विषय बता रहे हैं कि यह आरंभिक मक्की सूरतों में से है।

5. फिर सेना के बीच घुस जाते हैं।	فَوَسَطْنَ بِهِۦ جَمْعًا ٥
6. वास्तव में इन्सान अपने पालनहार का बड़ा कृतघ्न (नाशुकरा) है।	إِنَّ ٱلْإِنسَٰنَ لِرَبِّهِۦ لَكَنُودٌ ٦
7. निश्चय रूप से वह इस पर स्वंय साक्षी (गवाह) है।[1]	وَإِنَّهُۥ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ ٧
8. वह धन का बड़ा प्रेमी है।[2]	وَإِنَّهُۥ لِحُبِّ ٱلْخَيْرِ لَشَدِيدٌ ٨
9. क्या वह उस समय को नहीं जानता जब क़ब्रों में जो कुछ है निकाल लिया जायेगा?	أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِى ٱلْقُبُورِ ٩
10. और सीनों के भेद प्रकाश में लाये जायेंगे?[3]	وَحُصِّلَ مَا فِى ٱلصُّدُورِ ١٠
11. निश्चय उनका पालनहार उस दिन उन से पूर्ण रूप सूचित होगा।[4]	إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌۢ ١١

---

[1] (1-7) इन आरंभिक आयतों में मानव जाति (इन्सान) की कृतघ्नता का वर्णन किया गया है। जिस की भूमिका के रूप में एक पशु की कृतज्ञता को शपथ स्वरूप उदाहरण के लिये प्रस्तुत किया गया है। जिसे इन्सान पोसता है, और वह अपने स्वामी का इतना भक्त होता है कि उसे अपने ऊपर सवार कर के नीचे ऊँचे मार्गों पर रात दिन की परवाह किये बिना दोड़ता और अपनी जान जोखिम में डाल देता है। परन्तु इन्सान जिसे अल्लाह ने पैदा किया, समझ बूझ दी और उस के जीवन यापन के सभी साधन बनाये, वह उस का उपकार नहीं मानता और जान बूझ कर उस की अवज्ञा करता है, उसे इस पशु से शिक्षा लेनी चाहिये।

[2] इस आयत में उस की कृतघ्नता का कारण बताया गया है कि जिस इन्सान को सर्वाधिक प्रेम अल्लाह से होना चाहिये वही अत्याधिक प्रेम धन से करता है।

[3] (9-10) इन आयतों में सावधान किया गया है कि संसारिक जीवन के पश्चात एक दूसरा जीवन भी है तथा उस में अल्लाह के सामने अपने कर्मों का उत्तर देना है जो प्रत्येक के कर्मों का ही नहीं उन के सीनों के भेदों को भी प्रकाश ला कर दिखा देगा कि किस ने अपने धन तथा बल का कुप्रयोग कर कृतध्नता की है, और किस ने कृतज्ञता की है। और प्रत्येक को उस का प्रतिकार भी देगा। अतः इन्सान को धन के मोह में अन्धा तथा अल्लाह का कृतघ्न नहीं होना चाहिये, और उस के सत्धर्म का पालन करना चाहिये।

[4] (11) अर्थात वह सूचित होगा कि कौन क्या है, और किस प्रतिकार का भागी है।?

सूरह क़ारिअह[1]- 101

سُورَةُ القَارِعَةِ

सूरह क़ारिअह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में क़्यामत को ((क़ारिअह)) कहा गया है। अर्थात खड़ खड़ाने वाली आपदा। और इसी से इस का यह नाम रखा गया है।
- आयत 1 से 5 तक प्रलय के समय की स्थिति से सूचित किया गया है।
- आयत 6,7 में जिन के कर्म न्याय के तराज़ू में भारी होंगे उन का अच्छा परिणाम बताया गया है।[1]
- आयत 8 से 11 तक में उन का दुष्परिणाम बताया गया है जिन के कर्म न्याय के तराज़ू में हल्के होंगे। और नरक की वास्तविक्ता बताई गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
1. वह खड़खड़ा देने वाली।	اَلْقَارِعَةُ ۝١
2. क्या है वह खड़खड़ा देने वाली?	مَا الْقَارِعَةُ ۝٢
3. और तुम क्या जानो कि वह खड़खड़ा देने वाली क्या है?[2]	وَمَآ أَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝٣

---

1 यह सूरह भी मक्की है और इस का विषय भी प्रलय (क़्यामत) तथा परलोक (आख़िरत) है। इस में प्रश्न के रूप में सर्वप्रथम सावधान कर के दो वाक्यों में प्रलय का चित्रण कर दिया गया है कि उस दिन सभी घबरा कर इस प्रकार इधर उधर फिरेंगे जैसे पतिंगे प्रकाश पर बिखरे होते हैं। और पर्वतों की यह दशा होगी कि अपने स्थान से उखड़ कर धुनी हुई ऊन के समान हो जायेंगे। फिर बताया गया है कि परलोक में हिसाब इस आधार पर होगा कि किस के सदाचार का भार दुराचार से अधिक है और किस के सदाचार का भार उस के दुराचार से हल्का है। प्रथम श्रेणी के लोगों को सुख मिलेगा। और दूसरी श्रेणी के लोगों को आग से भरी गहरी खाई में फेंक दिया जायेगा।

2 (1-3) "क़ारिअह": प्रलय ही का एक नाम है जो उस के समय की घोर दशा का

4. जिस दिन लोग बिखरे पतिंगों के समान (व्याकुल) होंगे।	يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۟ۙ٤
5. और पर्वत धुनी हुई ऊन के समान उड़ेंगे।[1]	وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ۟ؕ٥
6. तो जिस के पलड़े भारी हुये	فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۟ۙ٦
7. तो वह मन चाहे सुख में होगा।	فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۟ؕ٧
8. तथा जिस के पलड़े हल्के हुये	وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ۟ۙ٨
9. तो उस का स्थान "हाविया" है।	فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ۟ؕ٩
10. और तुम क्या जानो कि वह (हाविया) क्या है?	وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ۟ؕ١٠
11. वह दहक्ती आग है।[2]	نَارٌ حَامِيَةٌ ۟۠ع١١

चित्रण करता है। इस का शाब्दिक अर्थः द्वार खटखटाना है। जब कोई अतिथि अकस्मात रात में आता है तो उसे दरवाज़ा खटखटाने की आवश्यकता होती है। जिस से एक तो यह ज्ञात हुआ कि प्रलय अकस्मात होगी। और दूसरा यह ज्ञात हुआ कि वह कड़ी ध्वनी और भारी उथल पुथल के साथ आयेगी। इसे प्रश्नवाचक वाक्यों में दोहराना सावधान करने और उस की गंभीरता को प्रस्तुत करने के लिये है।

[1] (4-5) इन दोनों आयतों में उस स्थिति को दर्शाया गया है जो उस समय लोगों और पर्वतों की होगी।

[2] (6-11) इन आयतों में यह बताया गया है कि प्रलय क्यों होगी? इसलिये कि इस संसार में जिस ने भले बुरे कर्म किये हैं उन का प्रतिकार कर्मों के आधार पर दिया जाये, जिस का परिणाम यह होगा कि जिस ने सत्य विश्वास के साथ सत्कर्म किया होगा वह सुख का भागी होगा। और जिस ने निर्मल परम्परागत रीतियों को मान कर कर्म किया होगा वह नरक में झोंक दिया जायेगा।

सूरह तकासुर[1] - 102

سُورَةُ التَّكَاثُرِ

सूरह तकासुर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 8 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((तकासुर)) अर्थातः अधिक से अधिक धन प्राप्त करने की इच्छा को जीवन के मूल उद्देश्य से अचेत रहने का कारण बताया गया है। इसी लिये इस का यह नाम रखा गया है। [1]
- इस की आयत 1 से 5 तक में सावधान किया गया है कि जिस धन को तुम सब कुछ समझते हो और उसे अर्जित करने में अपने भविष्य से अचेत हो तुम्हें आँख बंद करते ही पता लग जायेगा कि मौत के उस पार क्या है।
- आयत 6 से 8 तक में बताया गया है कि नरक को तुम मानो या न मानो वह दिन आ कर रहेगा जव तुम उसे अपनी आँखों से देख लोगे। और तुम्हें उस का विश्वास हो जायेगा किन्तु वह समय कर्म का नहीं बल्कि हिसाब देने का दिन होगा। और तुम्हें अल्लाह के प्रत्येक प्रदान का जवाब देना होगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

1. तुम्हें अधिक (धन) के लोभ ने मगन कर दिया।

أَلْهَىٰكُمُ ٱلتَّكَاثُرُ ۝١

2. यहाँ तक कि तुम क़ब्रिस्तान जा पहुँचे।[2]

حَتَّىٰ زُرْتُمُ ٱلْمَقَابِرَ ۝٢

---

[1] इस सूरह का प्रसंग भी इस के मक्की होने का संकेत करता है।

[2] (1-2) इन दोनों आयतों में उन को सावधान किया गया है जो संसारिक धन ही को सब कुछ समझते हैं और उसे अधिकाधिक प्राप्त करने की धुन उन पर ऐसी सवार है किः मौत के पार क्या होगा इसे सोचते ही नहीं। कुछ तो धन की देवी बना कर उसे पूजते हैं।

3. निश्चय तुम्हें ज्ञान हो जायेगा।	كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝٣
4. फिर निश्चय ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा।	ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝٤
5. वास्तव में यदि तुम को विश्वास होता (तो ऐसा न करते।)[1]	كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ۝٥
6. तुम नरक को अवश्य देखोगे।	لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ۝٦
7. फिर उसे विश्वास की आँख से देखोगे।	ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ۝٧
8. फिर उस दिन तुम से सुख सम्पदा के विषय में अवश्य पूछ गछ होगी।[2]	ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ۝٨

---

[1] (3-5) इन आयतों में सावधान किया गया है कि मौत के पार क्या है? उन्हें आँख बन्द करते ही इस का ज्ञान हो जायेगा। यदि आज तुम्हें इस का विश्वास होता तो अपने भविष्य की ओर से निश्चिन्त न होते। और तुम पर धन प्राप्ती की धुन इतनी सवार न होती।

[2] (6-8) इन आयतों में सूचित किया गया है कि तुम नरक के होने का विश्वास करो या न करो वह दिन आ कर रहेगा जब तुम उस को अपनी आँखों से देख लोगे। उस समय तुम्हें इस का पूरा विश्वास हो जायेगा। परन्तु वह दिन कर्म का नहीं हिसाब देने का दिन होगा। और तुम्हें प्रत्येक अनुकम्पा (नेमत) के बारे में अल्लाह के सामने जवाब देही करनी होगी। (अहसनुल बयान)

सूरह अस्र[1] - 103

سُورَةُ العَصْرِ

सूरह अस्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 3 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((अस्र)) अर्थात् (युग) की शपथ से होता है, इस लिये इस का नाम सूरह अस्र रखा गया है।[1]
- इस सूरह में मात्र तीन ही आयतें हैं फिर भी इस के अर्थ में पूरे मानव जाति के उत्थान और पतन का एतिहास आ गया है। और मार्गदर्शन का मीनार बन कर व्यक्ति तथा जातियों और धार्मिक समुदायों को सीधी राह से सूचित कर रही है। ताकि वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लें, और ग़लत राह पर पड़ कर विनाश के गढ़े में गिरने से बच जायें।
- युग की गवाही इस के लिये प्रस्तुत की गई है कि यदि मनुष्य के कर्म ईमान से ख़ाली हों तो वह विनाश से नहीं बच सकता।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
1. निचड़ते दिन की शपथ!	وَالْعَصْرِ ١
2. निःसंदेह इन्सान क्षति में हैं।[2]	إِنَّ الْإِنسَانَ لَفِي خُسْرٍ ٢

---

1 यद्धपी यह एक छोटी सी सूरह है परन्तु इस में ज्ञान का एक समुद्र समाया हुवा है। इस सूरह का विषय इस बात पर सावधान करना है कि समस्त मानव जाति (इन्सान) विनाश की ओर जा रही है। इस से केवल वही लोग बच सकते हैं जो ईमान लाये और अच्छे कर्म किये।

2 (1-2) "अस्र" का अर्थः निचोड़ना है। युग तथा संध्या के समय के भाग के लिये भी इस का प्रयोग होता है। और यहाँ इस का अर्थ युग और दिन निचड़ने का समय दोनों लिया जा सकता है। इस युग की गवाही इस बात पर पेश की गई है किः इन्सान जब तक ईमान (सत्य विश्वास) के गुणों को नहीं अपनाता विनाश से सुरक्षित नहीं रह सकता। इसलिये कि इन्सान के पास सब से मूल्यवान पूँजी समय है जो तेज़ी से गुज़रता है। इसलिये यदि वह परलोक का सामान न करे तो अवश्य क्षति में पड़ जायेगा।

3. अतिरिक्त उन के जो ईमान लाये। तथा सदाचार किये, एंव एक दूसरे को सत्य का उपदेश तथा धैर्य का उपदेश देते रहे।[1]

إِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ٣ ع

---

[1] इस का अर्थ यह है कि परलोक की क्षति से बचने के लिये मात्र ईमान ही पर बस नहीं इस के लिये सदाचार भी आवश्यक है और उस में से विशेष रूप से सत्य और सहन शीलता और दूसरों को इन की शिक्षा देते रहना भी आवश्यक है। (तर्जुमानुल कुर्आन, मौलाना आज़ाद)

सूरह हुमज़ह[1] - 104

سُوۡرَةُ الهُمَزَةِ

सूरह हुमज़ह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 9 आयतें हैं।

- इस का नाम ((सूरह हुमज़ह)) है क्यों कि इस की प्रथम आयत में यह शब्द आया है जिस का अर्थ हैः व्यंग करना, ताना मारना, ग़ीबत करना आदि।[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक में धन के पूजारियों के आचरण का चित्र दिखाया गया है और उन्हें सचेत किया गया है कि यह आचरण अवश्य विनाश का कारण है।
- आयत 4 से 9 तक में धन के पूजारियों का परलोक में दुष्परिणाम बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ
1. विनाश हो उस व्यक्ति का जो कचोके लगाता रहता है और चौंटे करता रहता है।	وَيۡلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ①
2. जिस ने धन एकत्र किया और उसे गिन गिन कर रखा।	ٱلَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُۥ ②
3. क्या वह समझता है कि उस का धन उसे संसार में सदा रखेगा?[2]	يَحۡسَبُ أَنَّ مَالَهُۥٓ أَخۡلَدَهُۥ ③

---

1 यह सूरह भी मक्की युग की आरंभिक सूरतों में से है। इस का विषय धन के पुजारियों को सावधान करना है कि जिन की यह दशा होगी वह अवश्य अपने कुकर्म का दण्ड पायेंगे।

2 (1-3) इन आयतों में धन के पुजारियों के अपने धन के घमंड में दूसरों का अपमान करने और उन की कृपणता (कंजूसी) का चित्रण किया गया है, उन्हें चेतावनी दी गई है किः यह आचरण विनाशकारी है, धन किसी को संसार में सदा जीवित नहीं रखेगा, एक समय आयेगा कि उसे सब कुछ छोड़ कर ख़ाली हाथ जाना पड़ेगा।

4. कदापि ऐसा नहीं होगा। वह अवश्य ही "हुतमा" में फेंका जायेगा।	كَلَّا لَيُنۢبَذَنَّ فِى ٱلْحُطَمَةِ ٤
5. और तुम क्या जानो कि "हुतमा" क्या है?	وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا ٱلْحُطَمَةُ ٥
6. वह अल्लाह की भड़काई हुई अग्नि है।	نَارُ ٱللَّهِ ٱلْمُوقَدَةُ ٦
7. जो दिलों तक जा पहुँचेगी।	ٱلَّتِى تَطَّلِعُ عَلَى ٱلْأَفْـِٔدَةِ ٧
8. वह उस में बन्द कर दिये जायेंगे।	إِنَّهَا عَلَيْهِم مُّؤْصَدَةٌ ٨
9. लँबे लँबे स्तम्भों में।[1]	فِى عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍۭ ٩

---

[1] (4-9) इन आयतों के अन्दर परलोक में धन के पुजारियों के दुष्परिणाम से अवगत कराया गया है कि उन को अपमान के साथ नरक में फेंक दिया जायेगा। जो उन्हें खण्ड कर देगी और दिलों तक जो कुविचारों का केन्द्र है पहुँच जायेगी, और उस में इन अपराधियों को फेंक कर ऊपर से बन्द कर दिया जायेगा।

सूरह फ़ील[1] - 105

سُورَةُ الفِيلِ

सूरह फ़ील के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं।

- इस सूरह में ((फ़ील)) शब्द आया है जिस का अर्थ हाथी है। इसी लिये इस का यह नाम है।[1]
- इस पूरी सूरह में एक शिक्षाप्रद ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत है।
- आयत 1 में कहा गया है कि अब्रहा जिस की सेना कॉबा को ढहाने आई थी उस का अल्लाह ने कैसा सत्यानाश कर दिया? उस पर विचार करो।

---

1 यह सूरह भी मक्की है। इस में अल्लाह की शक्ति और अपने घर "कॉबा" को "अबरहा" से सुरक्षित रखने और उसे उस की सेना सहित नाश कर देने की ओर संकेत किया गया है जिस की संक्षिप्त कथा यह है कि यमन के राजा "अबरहा" ने अपनी राजधानी "सन्आ" में एक कलीसा (गिर्जा घर) बनाया। और लोगों को कॉबा के हज्ज से रोकने की घोषणा कर दी। और 570 या 571 ई॰ में 60 हज़ार सेना के साथ जिस में 13 या 9 हाथी थे कॉबा पर आक्रमण करने के इरादे से चल पड़ा। और जब मक्का से तीन कोस रह गया तो "मुहस्सर" नामी स्थान पर पड़ाव किया, और उस की सेना ने कुछ ऊँट पकड़ लिये जिन में दो सौ ऊँट रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा अब्दुल मुत्तलिब के थे जो कॉबा के पुरोहित और नगर के मुख्या थे। वह अब्रहा के पास गये जिन से वह बड़ा प्रभावित हुआ और उन्होंने अपने ऊँट माँगे। अब्रहा ने कहाः तुम ऊँट माँगते हो और कॉबा के बारे में जो तुम्हारा धर्म स्थल है कुछ नहीं कहते? अब्दुल मुत्तलिब ने कहाः मैं अपने ऊँटों का मालिक हूँ। रहा यह घर तो उस का स्वामी उस की रक्षा स्वंय करेगा। अब्रहा ने उन को ऊँट वापस कर दिये। और उन्होंने नागरिकों से आ कर कहा किः अपने परिवार को लेकर (पर्वत) पर चले जायें। फिर उन्होंने कुरैश के कुछ प्रमुखों के साथ कॉबा के द्वार का कड़ा पकड़ कर दुआ (प्रार्थना) की और कहाः हे अल्लाह! अपने घर और इस के सेवकों की रक्षा कर। दूसरे दिन अब्रहा ने मक्का में प्रवेश का प्रयास किया परन्तु उस का अपना हाथी बैठ गया और आँकुस पड़ने पर भी नहीं हिला। और दूसरी दशा में फेरा जाता तो दौड़ने लगता था। इतने में पंक्षियों का एक झुंड चोंचों और पंजों में कंकरियाँ लिये हुये आया और इस सेना पर कंकरियों की वर्षा कर दी, जिन से उन का शरीर गलने लगा, और अब्रहा सहित उस की सेना का विनाश कर दिया गया।

- आयत 2 में बताया गया है कि कैसे उस की चाल असफल हो गई।
- आयत 3,4 में अल्लाह के अपने घर की रक्षा करने और आयत 5 में आक्रमणकारियों के बुरे अन्त की चर्चा है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
1. क्या तुम नहीं जानते कि तेरे पालनहार ने हाथी वालों के साथ क्या किया?	اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝١
2. क्या उस ने उन की चाल को विफल नहीं कर दिया?	اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۙ۝٢
3. और उन पर पंक्षियों के दल भेजे?	وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۙ۝٣
4. जो उन पर पकी कंकरी के पत्थर फेंक रहे थे।	تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ۝٤
5. तो उन को ऐसा कर दिया जैसे खाने का भूसा।[1]	فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُوْلٍ ۝٥

---

[1] (1-5) इस सूरह का लक्ष्य यह बताना है कि कॉबा को आकर्मण से बचाने के लिये तुम्हारे देवी देवता कुछ काम न आये। कुरैश के प्रमुखों ने अल्लाह ही से दुआ की थी और उन पर इस का इतना प्रभाव पड़ा था कि कई वर्षों तक साधारण नागरिकों तक ने भी अल्लाह के सिवा किसी की पूजा नहीं की थी। यह बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश से कुछ पहले की थी और वहाँ बहुत सारे लोग अभी जीवित थे जिन्होंने यह चित्र अपने नेत्रों से देखा था। अतः उन से यह कहा जा रहा है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो आमंत्रण दे रहे हैं वह यही तो है कि अल्लाह के सिवाय किसी की पूजा न की जाये, और इस को दबाने का परिणाम वही हो सकता है जो हाथी वालों का हुआ। (इब्ने कसीर)

सूरह कुरैश[1] - 106

سُورَةُ قُرَيْشٍ

सूरह कुरैश के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 4 आयतें हैं।

- इस में मक्का के क़बीले ((कुरैश)) की चर्चा के कारण इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक में मक्का के वासी कुरैश के अपनी व्यापारिक यात्रा से प्रेम रखने के कारण जो यात्रा वह निर्भय और शान्त रह कर किया करते थे क्योंकि कॉबा के निवासी थे उन से कहा जा रहा है कि वह केवल इस घर के स्वामी अल्लाह ही की वंदना (उपासना) करें।
- आयत 4 में इस का कारण बताया गया है कि यह जीविका और शान्ति जो तुम्हें प्राप्त है वह अल्लाह ही का प्रदान है। इस लिये तुम्हें उस का आभारी होना चाहिये और मात्र उसी की इबादत (वंदना) करनी चाहिये।

---

1 इस सूरह के अर्थ को समझने के लिये यह जानना ज़रूरी है कि कुरैश जाति नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पूर्वज कुसई पुत्र किलाब के युग में "हिजाज़" में फैली हुई थी। उन्होंने सब को मक्का में एकत्र किया और अपनी सुनिती से एक राज्य की स्थापना की। और हाजियों की सेवा की ऐसी व्यवस्था की कि पूरी अरब जातियों और क्षेत्रों में उन का अच्छा प्रभाव पड़ा। कुसई के बाद उन के चार पुत्रों में राज्य पद विभाजित हो गये। परन्तु उन में अब्द मनाफ़ का नाम अधिक प्रसिद्ध हुआ। और उन के चार पुत्रों में से नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दादा अब्दुल मुत्तलिब के पिता हाशिम ने सब से पहले यह सोचा किः अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भाग लिया जाये, जिस के कारण कुरैश का संबंध अनेक देशों और सभ्यताओं से हो गया। मक्का अरब द्वीप का व्यापारिक केंद्र बन गया। और अब्रहा की पराजय ने कुरैश की मान मर्यादा और अधिक कर दी। इसलिये सूरह के चार वाक्यों में कुरैश से मात्र इतना ही कहा गया है कि जब तुम इस घर (कॉबा) को मूर्तियों का नहीं अल्लाह का घर मानते हो कि वह अल्लाह ही है जिस ने इस घर के कारण शांती प्रदान की और तुम्हारे व्यापार को यह उन्नती दी, तथा तुम्हें भुखमरी से बचाया तो तुम्हें भी मात्र उसी की पूजा उपासना करनी चाहिये।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
1. क़ुरैश के स्वभाव बनाने के कारण।	لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۙ﴿۱﴾
2. उन के जाड़े तथा गर्मी की यात्रा का स्वभाव बनाने के कारण।[1]	اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۚ﴿۲﴾
3. उन्हें चाहिये कि इस घर (कॉबा) के प्रभु की पूजा करें।[2]	فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۙ﴿۳﴾
4. जिस नें उन्हें भूख में खिलाया तथा डर से निडर कर दिया।	الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ﴿۴﴾ ع

---

[1] (1-2) गर्मी और जाड़े की यात्रा से अभिप्राय गर्मी के समय क़ुरैश की व्यापारिक यात्रा है जो शाम और फ़लस्तीन की ओर होती थी। और जाड़े के समय वे दक्षिण अरब की यात्रा करते थे जो गर्म क्षेत्र है।

[2] इस घर से अभिप्रायः कॉबा है। अर्थ यह है कि यह सुविधा उन्हें इसी घर के कारण प्राप्त हुई। और वह स्वंय यह मानते हैं कि 360 मूर्तियाँ उन की रब नहीं हैं जिन की पूजा कर रहे हैं। उन का रब (पालनहार) वही है जिस ने उन को अब्रहा के आक्रमण से बचाया। और उस युग में जब अरब की प्रत्येक दिशा में अशान्ति का राज्य था मात्र इसी घर के कारण इस नगर में शान्ति है। और तुम इसी घर के निवासी होने के कारण निश्चिन्त हो कर व्यापारिक यात्रायें कर रहे हो, और सुख सुविधा के साथ रहते हो। क्योंकि काबे के प्रबन्धक और सेवक होने के कारण ही लोग क़ुरेश का आदर करते थे। तो उन्हें स्मरण कराया जा रहा है कि फिर तुम्हारा कर्त्तव्य है कि केवल उसी की उपासना करो।

सूरह माऊन[1] - 107

سُورَةُ الْمَاعُونِ

सूरह माऊन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 7 आयतें हैं।

- इस सूरह की अन्तिम आयत में ((माऊन)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। जिस का अर्थ है लोगों को देने की साधारण आवश्यक्ता की चीज़ें। [1]
- आयत 1 में उस के आचरण पर विचार करने के लिये कहा गया है जो प्रलय के दिन के प्रतिफल को नहीं मानता।
- आयत 2,3 में यह बताया गया है कि ऐसा ही व्यक्ति समाज के अनाथों तथा निर्धनों की कोई सहायता नहीं करता। और उन के साथ बुरा व्यवहार करता है।
- आयत 4 से 6 तक में उन की निन्दा की गई है जो नमाज़ पढ़ने में आलसी होते हैं। और दिखावे के लिये नमाज़ पढ़ते हैं।
- और आयत 7 में उन की कंजूसी पर पकड़ की गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ۝
1. (हे नबी) क्या तुम ने उसे देखा जो प्रतिकार (बदले) के दिन को झुठलाता है?	أَرَءَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالدِّينِ ۝١
2. यही वह है जो अनाथ (यतीम) को धक्का देता है।	فَذَٰلِكَ الَّذِي يَدُعُّ الْيَتِيمَ ۝٢
3. और ग़रीब के लिये भोजन देने पर नहीं उभारता।[2]	وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۝٣

---

1 इस सूरह का विषय यह बताना है कि परलोक पर ईमान न रखना किस प्रकार का आचरण और स्वभाव पैदा करता है।

2 (2-3) इन आयतों में उन काफ़िरों (अधर्मियों) की दशा बताई गई है जो

4. विनाश है उन नमाज़ियों के लिये[1]
5. जो अपनी नमाज़ से अचेत हैं।
6. और जो दिखावे (आडंबर) के लिये करते हैं।
7. तथा माऊन (प्रयोग में आने वाली मामूली चीज़) भी माँगने से नहीं देते।[2]

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ ۝٤

الَّذِينَ هُمْ عَن صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝٥

الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ۝٦

وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ۝٧

परलोक का इन्कार करते हैं।

[1] इन आयतों में उन मुनाफ़िक़ों (द्वय वादियों) की दशा का वर्णन किया गया है जो ऊपर से मुसलमान हैं परन्तु उन के दिलों में परलोक और प्रतिकार का विश्वास नहीं है।

इन दोनों प्रकारों के आचरण और स्वभाव को बयान करने से अभिप्राय यह बताना है किः इन्सान में सदाचार की भावना परलोक पर विश्वास के बिना उत्पन्न नहीं हो सकती। और इस्लाम प्रलोक का सहीह विश्वास दे कर इन्सानों में अनाथों और ग़रीबों की सहायता की भावना पैदा करता है और उसे उदार तथा परोपकारी बनाता है।

[2] आयत नं॰ 7 में मामूली चीज़ के लिये (माऊन) शब्द का प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ है साधारण माँगने के सामानः जैसे पानी, आग, नमक, डोल आदि। और आयत का अभिप्राय यह है किः आख़िरत का इन्कार किसी व्यक्ति को इतना तंग दिल बना देता है किः वह साधारण उपकार के लिये भी तैयार नहीं होता।

सूरह कौसर[1] - 108

سُورَةُ الكَوثَر

सूरह कौसर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 3 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में "कौसर" शब्द आया है जिस का अर्थ हैः बहुत सी भलाईयाँ। और जन्नत के अन्दर एक नहर का नाम भी है। इस लिये इस का नाम "सूरह कौसर" है। [1]
- इस की आयत 1 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बहुत सी भलाईयाँ प्रदान किये जाने की शुभ सूचना दी गई है।
- और आयत 2 में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इस प्रदान पर नमाज़ पढ़ते रहने तथा कुर्बानी करने का आदेश दिया गया है।
- आयत 3 में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिलासा दी गई है कि जो आप के शत्रु हैं वह आप का कुछ बिगाड़ नहीं सकेंगे बल्कि वह स्वयं बहुत बड़ी भलाई से वंचित रह जायेंगे।
- हदीस में है कि आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा कि कौसर एक नहर है जो तुम्हारे नबी को प्रदान की गई है। जिस के दोनों किनारे मोती के और बर्तन आकाश के तारों की संख्या के समान हैं। (सहीह बुख़ारीः 4965)

---

[1] यह सूरह मक्का में उस समय उतरी जब मक्का वासियों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इसलिये अपनी जाति से अलग कर दिया कि आप ने उन की मूर्तिपूजा की परम्परा का खण्डन किया। और नबी होने से पहले आप की जो जाति में मान मर्यादा थी वह नहीं रह गई।

आप अपने थोड़े से साथियों के साथ निस्सहाय हो कर रह गये थे। इसी बीच आप के एक पुत्र का निधन हो गया था जिस पर मूर्ति पूजकों ने खुशियाँ मनाईं। और कहा कि मुहम्मद के कोई पुत्र नहीं। वह निर्मूल हो गया और उस के निधन के बाद उस का कोई नाम लेवा नहीं रह जायेगा। ऐसे ह्रदय विदारक क्षणों में आप को यह शुभ सूचना दी गई कि आप निराश न हों आप के शत्रु ही निर्मूल होंगे। यह शुभ सूचना और भविष्य वाणी कुर्आन ने उस समय दी जब कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि ऐसा हो जाना संभव है। परन्तु कुछ ही वर्षों बाद ऐसा परिवर्तन हुआ कि मक्का के अनेकेश्वर वादियों का कोई सहायक नहीं रह गया। और उन्हें विवश हो कर हथियार डाल देने पड़े। और फिर आप के शत्रुओं का कोई नाम लेवा नहीं रह गया। इस के विपरीत आज भी करोड़ों मुसलमान आप से संबंध पर गर्व करते हैं, और आप पर दरूद भेजते हैं।

- और इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने कहा कि कौसर वह भलाईयाँ हैं जो अल्लाह ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को प्रदान की हैं। (सहीह बुख़ारीः 4966)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
1. (हे नबी!) हम ने तुम को कौसर प्रदान किया है।[1]	اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝١
2. तो तुम अपने पालनहार के लिये नमाज़ पढ़ो तथा बलि दो।[2]	فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝٢
3. निः संदेह तुम्हारा शत्रु ही बे नाम निशान है।[3]	اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۝٣

---

1 कौसर का अर्थ हैः असीम तथा अपार शुभ।
और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि कौसर एक हौज़ (जलाशय) है जो मुझे परलोक में प्रदान किया जायेगा। जब प्रत्येक व्यक्ति प्यास प्यास कर रहा होगा और आप की उम्मत आप के पास आयेगी, आप पहले ही से वहाँ उपस्थित होंगे और आप उन्हें उस से पिलायेंगे जिस का जल दूध से उजला और मधु से अधिक मधुर होगा। उस की भूमी कस्तूरी होगी, उस की सीमा और बर्तनों का सविस्तार वर्णन हदीसों में आया है।

2 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप के माध्यम से सभी मुसलमानों से कहा जा रहा है कि जब शुभ तुम्हारे पालनहार ही ने प्रदान किये हैं तो तुम भी मात्र उसी की पूजा करो और बली भी उसी के लिये दो। मूर्ति पूजकों की भाँति देवी देवताओं की पूजा अर्चना न करो और न उन के लिये बलि दो। वह तुम्हे कोई शुभ लाभ और हानि देने का सामर्थ्य नहीं रखते।

3 आयत नं॰ 3 में "अब्तर"ः का शब्द प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ हैः जड़ से अलग कर देना जिस के बाद कोई पेड़ सूख जाता है। और इस शब्द का प्रयोग उस के लिये भी किया जाता है जो अपनी जाति से अलग हो जाये, या जिस का कोई पुत्र जीवित न रह जाये, और उस के निधन के बाद उस का कोई नाम लेवा न हो। इस आयत में जो भविष्य वाणी की गई है वह सत्य सिद्ध हो कर पूरे मानव संसार को इस्लाम और क़ुर्आन पर विचार करने के लिये बाध्य कर रही है। (इब्ने कसीर)

सूरह काफ़िरून[1]- 109

سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ

सूरह काफ़िरून के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 6 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((काफ़िरून)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- आयत 1 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को निर्देश दिया गया है कि काफ़िरों से कह दें कि वंदना (उपासना) के विषय में मुझ में और तुम में क्या अन्तर है?
- आयत 4 से 5 तक में यह ऐलान है कि दीन (धर्म) के विषय में कोई समझौता और उदारता असंभव है।
- आयत 6 में काफ़िरों के धर्म से अप्रसन्न (विमुख) होने का ऐलान है।
- हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने तवाफ़ की दो रक्अत में यह सूरह और सूरह इख़्लास पढ़ी थी। (सहीह मुस्लिमः 1218)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
1. (हे नबी) कह दोः हे काफ़िरो!	قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ ①
2. मैं उन (मूर्तियों) को नहीं पूजता जिन्हें	لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ ②

---

1 यह सूरह भी मक्की है। इस सूरह की भूमिका यह है कि मक्का में यद्यपि इस्लाम का कड़ा विरोध हो रहा था फिर भी अभी मूर्ति पूजक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निराश नहीं हुये थे। और उन के प्रमुख किसी न किसी प्रकार आप को संधि के लिये तैयार कर रहे थे। और आप के पास समय समय से अनेक प्रस्ताव लेकर आया करते थे। अन्त में यह प्रस्ताव लेकर आये किः एक वर्ष आप हमारे पूजितों (लात, उज़्ज़ा आदि) की पूजा करें, और एक वर्ष हम आप के पूज्य की पूजा करें। और इसी पर संधि हो जाये। उसी समय यह सूरह अवतीर्ण हुई, और सदा के लिये बता दिया गया कि दीन में कोई समझौता नहीं हो सकता है। इसीलिये हदीस में इसे शिर्क से रक्षा की सूरह कहा गया है।

तुम पूजते हो।

3. और न तुम उसे पूजते हो जिसे मैं पूजता हूँ।

وَلَآ أَنتُمْ عٰبِدُونَ مَآ أَعْبُدُ ۝٣

4. और न मैं उसे पूजुँगा जिसे तुम पूजते हो।

وَلَآ أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدتُّمْ ۝٤

5. और न तुम उसे पूजोगे जिसे मैं पूजता हूँ।

وَلَآ أَنتُمْ عٰبِدُونَ مَآ أَعْبُدُ ۝٥

6. तुम्हारे लिये तुम्हारा धर्म, तथा मेरे लिये मेरा धर्म है।[1]

لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ۝٦

---

1 (1-6) पूरी सूरह का भावार्थ यह है कि इस्लाम में वही ईमान (विश्वास) मान्य है जो पूर्ण तौहीद (एकेश्वरवाद) के साथ हो, अर्थात अल्लाह के अस्तित्व तथा गुणों और उस के अधिकारों में किसी को साझी न बनाया जाये। क़ुर्आन की शिक्षानुसार जो अल्लाह को नहीं मानता, और जो मानता है परन्तु उस के साथ देवी देवताओं को भी मानता है तो दोनों में कोई अन्तर नहीं। उस के विशेष गुणों को किसी अन्य मे मानना उस को न मानने के ही बराबर है और दोनों ही काफ़िर हैं। (देखियेः उम्मुल किताब, मौलाना आज़ाद)

सूरह नस्र[1] - 110

سُورَةُ النَّصۡرِ

सूरह नस्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 3 आयतें हैं।

- इस सूरह में ((नस्र)) शब्द आने के कारण, जिस का अर्थ सहायता है, इस का यह नाम रखा गया है। [1]
- इस की आयत 1 में अल्लाह की सहायता आने तथा मक्का की विजय की चर्चा है।
- आयत 2 में लोगों के समुहों में इस्लाम लाने की चर्चा है।
- आयत 3 में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अल्लाह का यह प्रदान प्राप्त होने पर उस की और अधिक प्रशंसा तथा पवित्रता गान का निर्देश दिया गया है।
- हदीस में है कि इस सूरह के उतरने के पश्चात् आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपनी नमाज़ (के रुकूअ और सज्दे) में अधिक्तर ((सुब्हानका रब्बना व बिहम्दिका अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली)) पढ़ा करते थे। (सहीह बुख़ारीः 4967, 4968)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) जब अल्लाह की सहायता एंव विजय आ जाये।

إِذَا جَآءَ نَصۡرُ ٱللَّهِ وَٱلۡفَتۡحُ ١

---

1 अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि यह कुर्आन की अन्तिम सूरह है जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतरी। इस सूरह में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भविष्य वाणी के रूप में बताया गया है कि जब इस्लाम की पूर्ण विजय हो जाये, और लोग समूहों के साथ इस्लाम में प्रवेश करने लगें तो आप अल्लाह की हम्द (प्रशंसा) और तस्बीह (पवित्रता का वर्णन) करने में लग जायें। और उस से क्षमा माँगते रहें।

2. और तुम लोगों को अल्लाह के धर्म में दल के दल प्रवेश करते देख लो।[1]

3. तो अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करो। और उस से क्षमा माँगो, निःसंदेह वह बड़ा क्षमी है।[2]

وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ﴿٢﴾

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۗ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ﴿٣﴾ ع

---

[1] (1-2) इस में विजय का अर्थ वह निर्णायक विजय है जिस के बाद कोई शक्ति इस्लाम का सामना करने के योग्य नहीं रह जायेगी। और यह स्थिति सन् 8 (हिज्री) की है जब मक्का विजय हो गया। अरब के कोने कोने से प्रतिनिधि मंडल रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सेवा में उपस्थित हो कर इस्लाम लाने लगे। और सन् 10 (हिज्री) में जब आप (हज्जतुल वदाअ) (अर्थातः अन्तिम हज्ज) के लिये गये तो उस समय पूरा अरब इस्लाम के आधीन आ चुका था और देश में कोई मुश्रिक (मूर्ति पूजक) नहीं रह गया था।

[2] इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से कहा गया है कि इतना बड़ा काम आप ने अल्लाह की दया से पूरा किया है, इस के लिये उस की प्रशंसा और पवित्रता का वर्णन तथा उस की कृतज्ञता व्यक्त करें। इस में सभी के लिये यह शिक्षा है कि कोई पुण्य कार्य अल्लाह की दया के बिना नहीं होता। इसलिये उस पर घमंड नहीं करना चाहिये।

सूरह तब्बत[1]- 111

سُورَةُ تَبَّتْ

सूरह तब्बत के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं।

- इस की आयत 1 में (तब्बत) शब्द आने के कारण इस का नाम (सूरह तब्बत) है। जिस का अर्थ तबाह होना है।[1]
- आयत 1 से 3 तक में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के शत्रु अबू लहब के बुरे परिणाम से सूचित किया गया है।
- आयत 4 और 5 में उस की पत्नी के शिक्षाप्रद परिणाम का दृश्य दिखाया गया है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से बैर रखने में अपने पति के साथ थी।
- हदीस में है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आदेश दिया गया कि आप अपने समीप के परिजनों को डरायें तो आप ने सफ़ा (पर्वत) पर चढ़ कर पुकारा। और जब सब आ गये, तो कहाः यदि मैं तुम से कहूँ कि इस पर्वत के पीछे एक सेना है जो तुम पर सवेरे या संध्या को धावा बोल देगी तो तुम मानोगे? सब ने कहाः हाँ। हम ने कभी आप को झूठ बोलते नहीं देखा। आप ने कहाः मैं तुम्हें अपने सामने की दुःखदायी

---

1 यह सूरह आरंभिक मक्की सूरतों में से है। इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को यह आदेश दिया गया कि आप समीप वर्ती संबंधियों को अल्लाह से डरायें, तो आप सफ़ा "पहाड़ी" पर गये, और पुकाराः "हाय भोर की आपदा!" यह सुन कर कुरैश के सभी परिवार जन एकत्र हो गये। तब आप ने कहाः यदि मैं तुम से कहूँ कि इस पर्वत के पीछे एक सेना है जो तुम पर आक्रमण करने को तैयार है तो तुम मेरी बात मानोगे? सब ने कहाः हाँ। हम ने कभी आप से झूठ नहीं आज़माया। आप ने फ़रमायाः मैं तुम्हें आग (नर्क) की बड़ी यातना से सावधान करता हूँ। इस पर किसी के कुछ बोलने से पहले आप के चचा "अबु लहब" ने कहाः तुम्हारा सत्यानास हो! क्या हमें इसी लिये एकत्र किया है?

और एक रिवायत यह भी है कि उस ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मारने के लिये पत्थर उठाया, इसी पर यह सूरह उतारी गई। (देखियेः सहीह बुख़ारीः 4971, और सहीह मुस्लिमः 208)

यातना से डरा रहा हूँ। इस पर अबू जहल ने कहाः तुम्हारा नाश हो! क्या इसी लिये हम को एकत्र किया है? इसी पर यह सूरह अवतरित हुई। (सहीह बुख़ारीः 4971)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
1. अबु लहब के दोनों हाथ नाश हो गये, और वह स्वंय भी नाश हो गया![1]	تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝١
2. उस का धन तथा जो उस ने कमाया उस के काम नहीं आया।	مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ۝٢
3. वह शीघ्र लावा फेंकती आग में जायेगा।[2]	سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝٣
4. तथा उस की पत्नी भी, जो ईंधन	وَّامْرَاَتُهٗ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝٤

---

[1] अबु लहब का अर्थः ज्वाला मुखी है। वह अति सुंदर और गोरा था। उस का नाम वास्तव में "अब्दुल उज़्ज़ा" था, अर्थातः उज़्ज़ा का भक्त और दास।
"उज़्ज़ा" उन की एक देवी का नाम था। परन्तु वह अबु लहब के नाम से जाना जाता था। इसलिये क़ुर्आन ने उस का यही नाम प्रयोग किया है और इस में उस के नर्क की ज्वाला में पड़ने का संकेत भी है।

[2] (1-2) यह आयतें उस की इस्लाम को दबाने की योजना के विफल हो जाने की भविष्यवाणी हैं। और संसार ने देखा कि अभी इन आयतों के उतरे कुछ वर्ष ही हुये थे कि "बद्र" की लड़ाई में मक्के के बड़े बड़े वीर प्रमुख मारे गये। और "अबु लहब" को इस ख़बर से इतना दुःख हुआ कि इस के सातवें दिन मर गया। और मरा भी ऐसे कि उसे मलगिनानत पुसतुले (प्लेग जैसा कोई रोग) की बीमारी लग गई। और छूत के भय से उसे अलग फेंक दिया गया। कोई उस के पास नहीं जाता था। मृत्यु के बाद भी तीन दिन तक उस का शव पड़ा रहा। और जब उस में गंध होने लगी तो उसे दूर से लकड़ी से एक गढ़े में डाल दिया गया। और ऊपर से मिट्टी और पत्थर डाल दिये गये। और क़ुर्आन की यह भविष्यवाणी पूरी हुई। और जैसा कि आयत नं॰ 2 में कहा गया उस का धन और उस की कमाई उस के कुछ काम नहीं आई। उस की कमाई से उद्देश्य अधिकतर भाष्यकारों ने "उस की संतान" लिया है। जैसा कि सहीह हदीसों में आया है कि तुम्हारी संतान तुम्हारी उत्तम कमाई है।

लिये फिरती है।

5. उस की गर्दन में मूँज की रस्सी होगी।[1]

فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝٥

---

1 (1-5) अबु लहब की पत्नी का नाम "अरवा" था। और उस की उपाधि (कुनियत) "उम्मे जमील" थी। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की शत्रुता में किसी प्रकार कम न थी।

लकड़ी लादने का अर्थ भाष्य कारों ने अनेक किया है। परन्तु इस का अर्थ उस को अपमानित करना है। या पापों का बोझ लाद रखने के अर्थ में है।

वह सोने का हार पहनती थी और "लात" तथा "उज़्ज़ा" की शपथ ले कर -यह दोनों उन की देवियों के नाम हैं- कहा करती थी कि मुहम्मद के विरोध में यह मूल्यवान हार भी बेच कर ख़र्च कर दूँगी। अतः यह कहा गया है कि आज तो वह एक धन्यवान व्यक्ति की पत्नी है। उस के गले में बहुमूल्य हार पड़ा हुआ है परन्तु आख़िरत में वह ईंधन ढोने वाली लोंडी की तरह होगी। गले में आभूषण के बदले बटी हुई मूंज की रस्सी पड़ी होगी। जैसी रस्सी ईंधन ढोने वाली लोंडियों के गले में पड़ी होती है। और इस्लाम का यह चमत्कार ही तो है कि जिस "अबु लहब" और उस की पत्नी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शत्रुता की उन्हीं की औलादः "उत्बा", "मुअत्तब", तथा "दुरह" ने इस्लाम स्वीकार कर लिया।

सूरह इख़्लास[1] - 112

سُورَةُ الإِخلَاص

सूरह इख़्लास के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 4 आयतें हैं।

- इख़्लास का अर्थ है अल्लाह की शुद्ध इबादत (वंदना) करना। इसी का दूसरा नाम तौहीद (अद्वैत) है, इस सूरह में तौहीद का वर्णन है, इसी लिये इस का यह नाम है। [1]

---

[1] यह सूरह मक्की सूरतों में से है।
यद्यपि इस के उतरने से संबंधित रिवायत से लगता है कि यह सूरह मदीने में उस समय उतरी जब मदीने के यहूदियों ने आप से प्रश्न किया कि बताइये कि वह पालनहार कैसा है जिस ने आप को भेजा है? या यह कि "नजरान" के ईसाईयों ने इसी प्रकार का प्रश्न किया कि वह कैसा है, और किस धातु का बना हुआ है? तो यह सूरह उतरी। परन्तु सब से पहले यह प्रश्न स्वयं मक्का वासियों ने ही किया था। इसलिये इसे मक्का में उतरने वाली आरम्भिक सूरतों में गणना किया जाता है।
इस का नाम "सूरह इख़्लास" है। इख़्लास का अर्थ हैः अल्लाह पर ऐसे ईमान लाना कि उस के अस्तित्व और गुणों में किसी की साझेदारी की कोई आभा (झलक) न पाई जाये। और इसी को तौहीदे ख़ालिस (निर्मल ऐकेश्वरवाद) कहते हैं।
जहाँ तक अल्लाह को मानने की बात है तो संसार ने सदा उस को माना है परन्तु वास्तव में इस मानने में ऐसा मिश्रण भी किया है कि मानना और न मानना दोनों बराबर हो कर रह गये हैं। तौहीद को उजागर करने के लिये अल्लाह ने बराबर नबी भेजे परन्तु इन्सान बार बार इस तथ्य को खोता रहा। आदरणीय इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने तौहीद (ऐकेश्वरवाद) के लिये प्रस्थान किया, और अपने परिवार को एक बंजर वादी में बसाया कि वह मात्र एक अल्लाह की पूजा करेंगे। परन्तु उन्हीं के वंशज ने उन के बनाये तौहीद के केन्द्र अल्लाह के घर कॉबा को एक देव स्थल में बदल दिया। तथा अपने बनाये हुये देवताओं का अधिकार माने बिना अल्लाह के अधिकार को स्वीकार करने के लिये तैयार न थे। यह स्थिति मात्र मक्का वासियों की न थी, ईसाई और यहूदी भी यद्यपि तौहीद के दावेदार थे फिर भी उन के यहाँ तीन पूज्योंः पिता, पुत्र और पविगात्मा के योग से तौहीद बनी थी। यहूदियों के यहाँ भी अल्लाह का पुत्रः उज़ैर अवश्य था। कहीं पूज्य एक तो था परन्तु बहुत से देवी देवता भी उस के साथ पूज्य थे। (देखियेः उम्मुल किताब)

- इस की आयत 1,2 में अल्लाह के सकारात्मक गुणों को और आयत 3,4 में नकारात्मक गुणों को बताया गया है ताकि धर्मों और जातियों में जिस राह से शिर्क आया है उसे रोका जा सके। हदीस में है कि अल्लाह ने कहा कि मनुष्य ने मुझे झुठला दिया। और यह उस के लिये योग्य नहीं था। ओर मुझे गाली दी, और यह उस के लिये योग्य नहीं था। उस का मुझे झुठलाना उस का यह कहना है कि अल्लाह ने जैसे मुझे प्रथम बार पैदा किया है दोबारा नहीं पैदा कर सकेगा। जब कि प्रथम बार पैदा करना मेरे लिये दोबारा पैदा करने से सरल नहीं था। और उस का मुझे गाली देना यह है कि उस ने कहा कि अल्लाह के संतान है। जब कि मैं अकेला निर्पेक्ष हूँ। न मेरी कोई संतान है और न मैं किसी की संतान हूँ। और न कोई मेरा समकक्ष है। (सहीह बुख़ारी- 4974)
- सहीह हदीस में है कि यह सूरह तिहाई क़ुर्आन के बराबर है। (सहीह बुख़ारीः 5015, सहीह मुस्लिमः 811)
- एक दूसरी हदीस में है कि एक व्यक्ति ने कहा कि, हे अल्लाह के रसूल! मैं इस सूरह से प्रेम करता हूँ। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः तुम्हें इस का प्रेम स्वर्ग में प्रवेश करा देगा। (सहीह बुख़ारीः 774)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
1. (हे ईश दूत!) कह दोः अल्लाह अकेला है।[1]	قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ①

---

[1] आयत नं॰ 1 में "अहद" शब्द का प्रयोग हुआ है जिस का अर्थ हैः उस के अस्तित्व एंव गुणों में कोई साझी नहीं है। यहाँ "अहद" शब्द का प्रयोग यह बताने के लिये किया गया है कि वह अकेला है। वह वृक्ष के समान एक नहीं है जिस के अनेक शाखायें होती हैं।

आयत नं॰ 2 मे "समद" शब्द का प्रयोग हुआ है जिस का अर्थ हैः अब्रण होना। अर्थात जिस में कोई छिद्र न हो जिस से कुछ निकले, या वह किसी से निकले। और आयत नं॰ 3 इसी अर्थ की व्याख्या करती है कि न उस की कोई संतान है और न वह किसी की संतान है।

2. अल्लाह निःछिद्र है।	اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ ②
3. न उस की कोई संतान है, और न वह किसी की संतान है।	لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ ③
4. और न उस के बराबर कोई है।[1]	وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۧ ④

---

[1] इस आयत में यह बताया गया है कि उस की प्रतिमा तथा उस के बराबर और सम्तुल्य कोई नहीं है। उस के कर्म, गुण, और अधिकार में कोई किसी रूप में बराबर नहीं। न उस की कोई जाति है न परिवार।
इन आयतों में कुर्आन उन बिष्यों को जो जातियों के तौहीद से फिसलने का कारण बने उसे अनेक रूप में वर्णित करता है। और देवियों और देवताओं के विवाहों और उन के पुत्र और पौत्रों का जो विवरण देव मालावों में मिलता है कुर्आन ने उसी का खण्डन किया है।

सूरह फ़लक्[1] - 113

سُورَةُ الفَلَق

सूरह फ़लक् के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((फ़लक्)) शब्द आने के कारण, जिस का अर्थ भोर है, इस का यह नाम रखा गया है।[1]

---

1 सूरह "फ़लक्" और सूरह "नास" को मिला कर "मुअव्वज़तैन" कहा जाता है। जब यह दोनों सूरतें उतरीं तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः आज की रात्री में मुझ पर कुछ ऐसी आयतें उतरी हैं जिन के समान मैं ने कभी नहीं देखी। (मुस्लिमः 814)
इसी प्रकार इब्ने आबिस जुहनी (रजियल्लाहु अन्हु) से आप ने फ़रमाया किः मैं तुम्हें उत्तम यंत्र न बताऊँ जिस के द्वारा शरण (पनाह) माँगी जाती है? और आप ने यह दोनों सूरतें बतायीं, और कहा कि यह "मुअव्वज़तैन" अर्थात शरण माँगने के लिये दो सूरतें हैं। (देखियेः सहीह नसईः 5020)
जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर जादू किया गया जिस का प्रभाव यह हुआ कि आप घुलते जा रहे थे, किसी काम को सोचते कि कर लिया है, और किया नहीं होता था, किसी वस्तु को देखा है जब कि देखा नहीं होता था। परन्तु जादू का यह प्रभाव आप के व्यक्तिगत जीवन तक ही सीमित था।
एक दिन नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपनी पत्नी "आइशा" (रज़ियल्लाहु अन्हा) के पास थे कि सो गये, और जागे तो उन को बताया की दो व्यक्ति (फ़रिश्ते) मेरे पास आये, एक सिराहने की ओर था, और दूसरा पैताने की ओर। एक ने पूछाः इन्हें क्या हुआ है? दूसरे ने उत्तर दियाः इन पर जादू हुआ है। उस ने पूछाः किस ने किया है? उत्तर दियाः "लबीद बिन आसम" ने। पूछाः किस वस्तु में किया है? उत्तर दियाः कंघी, बाल और नर खजूर के ख़ोशे में। पूछाः वह कहाँ है? उत्तर दियाः बनी ज़ुरैक़ के कुवें की तह में पत्थर के नीचे है। इस के बाद आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अली, अम्मार और ज़ुबैर (रजियल्लाहु अन्हुम) को भेजा, फिर आप भी वहाँ आ गये, पानी निकाला गया, फिर जादू जिस में कंघी के दाँतों और बालों के साथ एक ताँत में ग्यारह गाँठ लगी हुई थीं। और मोम का एक पुतला था जिस में सुईयाँ चुभोई हुई थीं। आदर्णीय जिब्रील (अलैहिस्सलाम) ने आ कर बताया किः आप "मुअव्वज़तैन" पढ़ें। और जैसे जैसे आप पढ़ते जा रहे थे उसी के साथ एक एक गाँठ खुलती और पुतले से एक एक सुई निकलती जा रही थी, और अन्त के साथ ही आप जादू से इस प्रकार निकल गये जैसे कोई बंधा हुआ खुल जाता है। (देखियेः सहीह

- इस की आयत 1 में यह शिक्षा दी गई है कि शरण उस से माँगो जिस के पालनहार होने की निशानी तुम रात दिन देख रहे हो।
- आयत 2 से 5 तक में यह बताया गया है कि किन चीज़ों की बुराई से शरण माँगनी चाहिये।
- हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा कि इस रात मुझ पर कुछ ऐसी आयतें अवतरित हुई हैं जिन के समान आयतें कभी नहीं देखी गईं। वह यह सूरह, और इस के पश्चात् की सूरह है। (सहीह मुस्लिमः 814)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
1. (हे नबी!) कहो कि मैं भोर के पालनहार की शरण लेता हूँ।	قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ①
2. हर उस की बुराई से जिसे उस ने पैदा किया।	مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ②
3. तथा रात्री की बुराई से जब उस का अंधेरा छा जाये।[1]	وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ③

बुख़ारीः 5766, तथा सहीह मुस्लिमः 2189)
फिर आप ने "लबीद" को बुला कर पूछा, और उस ने अपना दोष स्वीकार कर लिया। फिर भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस को क्षमा कर दिया और फ़रमाया किः अल्लाह ने मुझे स्वस्थ कर दिया है।
हदीसों से यह सिद्ध होता है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बराबर रात्री में सोते समय इन दोनों सूरतों को पढ़ कर अपने दोनों हाथों पर फूँकते फिर अपने दोनों हाथों को अपने पूरे शरीर पर फेरते थे।
मानो अल्लाह तआला ने इन अन्तिम दो सूरतों द्वारा जादू और अन्य बुराईयों से बचाव का एक साधन भी दे दिया जो सदा मुसलमानों की जादू तंत्र आदि से रक्षा करता रहेगा।

[1] (1-3) इन में संबोधित तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को किया गया है, परन्तु आप के माध्यम से पूरे मुसलमानों के लिये संबोधन है। शरण माँगने के लिये तीन बातें ज़रूरी हैं: (1) शरण माँगना। (2) जो शरण माँगता हो। (3)

4. तथा गांठ लगा कर उन में फूँकने वालियों की बुराई से।	وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ٤
5. तथा द्वेष करने वाले की बुराई से जब वह द्वेष करे।[1]	وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ٥

जिस के भय से शरण माँगी जाती हो। और अपने को उस से बचाने के लिये दूसरे की सुरक्षा और शरण में जाना चाहता हो। फिर शरण वही माँगता है जो यह सोचता है किः वह स्वंय अपनी रक्षा नहीं कर सकता, और अपनी रक्षा के लिये वह ऐसे व्यक्ति या अस्तित्व की शरण लेता है जिस के बारे में उस का यह विश्वास होता है कि वह उस की रक्षा कर सकता है। अब स्वभाविक नियमानुसार इस संसार में सुरक्षा किसी वस्तु या व्यक्ति से प्राप्त की जाती है जैसे धूप से बचने के लिये पेड़ या भवन आदि की। परन्तु एक ख़तरा वह भी होता है जिस से रक्षा के लिये किसी अनदेखी शक्ति से शरण माँगी जाती है जो इस विश्व पर राज करती है। और वह उस की रक्षा अवश्य कर सकती है। यही दूसरे प्रकार की शरण है जो इन दोनों सूरतों में अभिप्रेत है। और कुर्आन में जहाँ भी अल्लाह की शरण लेने की चर्चा है उस का अर्थ यही विशेष प्रकार की शरण है। और यह तौहीद पर विश्वास का अंश है। ऐसे ही शरण के लिये विश्वास हीन देवी देवताओं इत्यादि को पुकारना शिर्क और घोर पाप है।

[1] (4-5) इन दोनों आयतों में जादू और डाह की बुराई से अल्लाह की शरण में आने की शिक्षा दी गई है। और डाह ऐसा रोग है जो किसी व्यक्ति को दूसरों को हानि पहुँचाने के लिये तैयार कर देता है। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर भी जादू डाह के कारण ही किया गया था। यहाँ ज्ञातव्य है कि इस्लाम ने जादू को अधर्म कहा है जिस से इन्सान के परलोक का विनाश हो जाता है।

सूरह नास[1]- 114

سُورَةُ النَّاسِ

सूरह नास के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 6 आयतें हैं।

- इस में पाँच बार ((नास)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम है। जिस का अर्थ इन्सान है।[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक शरण देने वाले के गुण बताये गये हैं।
- आयत 4 में जिस की बुराई से पनाह (शरण) माँगी गई है उस के घातक शत्रु होने से सावधान किया गया है।
- आयत 5 में बताया गया है कि वह इन्सान के दिल पर आक्रमण करता है।
- आयत 6 में सावधान किया गया है कि यह शत्रु जिन्न तथा इन्सान दोनों में होते हैं।
- हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हर रात जब बिस्तर पर जाते तो सूरह इख़्लास और यह और इस के पहले की सूरह (अर्थातः फ़लक़) पढ़ कर अपनी दोनों हथेलियाँ मिला कर उन पर फूंकते, फिर जितना हो सके दोनों को अपने शरीर पर फेरते। सिर से आरंभ करते और फिर आगे के शरीर से गुज़ारते। ऐसा आप तीन बार करते थे। (सहीह बुख़ारीः 6319, 5748)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) कहो कि मैं इन्सानों के पालनहार की शरण में आता हूँ।
2. जो सारे इन्सानों का स्वामी है।
3. जो सारे इन्सानों का पूज्य है।[2]

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ①

مَلِكِ النَّاسِ ②

إِلَٰهِ النَّاسِ ③

---

1 यह सूरह मक्का में अवतरित हुई।

2 (1-3) यहाँ अल्लाह को उस के तीन गुणों के साथ याद कर के उस की शरण

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۝٤

4. भ्रम डालने वाले और छुप जाने वाले (राक्षस) की बुराई से।

الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝٥

5. जो लोगों के दिलों में भ्रम डालता रहता है।

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝٦

6. जो जिन्नों में से है, और मनुष्यों में से भी।[1]

लेने की शिक्षा दी गई है। एक उस का सब मानव जाति पालनहार और स्वामी होना। दूसरे उस का सभी इन्सानों का अधिपति और शासक होना। तीसरे उस का इन्सानों का सत्य पूज्य होना।

भावार्थ यह है कि उस अल्लाह की शरण माँगता हूँ जो इन्सानों का पालनहार शासक और पूज्य होने के कारण उन पर पूरा नियंत्रण और अधिकार रखता है। जो वास्तव में उस बुराई से इन्सानों को बचा सकता है जिस से स्वंय बचने और दूसरों को बचाने में सक्षम है उस के सिवा कोई है भी नहीं जो शरण दे सकता हो।

[1] (4-6) आयत नं॰ 4 में "वस्वास" शब्द का प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ हैः दिलों में ऐसी बुरी बातें डाल देना कि जिस के दिल में डाली जा रही हों उसे उस का ज्ञान भी न हो।

और इसी प्रकार आयत नं॰ 4 में "ख़न्नास" का शब्द प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ हैः सुकड़ जाना, छुप जाना, पीछे हट जाना, धीरे धीरे किसी को बुराई के लिये तैयार करना आदि।

अर्थात् दिलों में भ्रम डालने वाला, और सत्य के विरुद्ध मन में बुरी भावनायें उत्पन्न करने वाला। चाहे वह जिन्नों में से हो, अथवा मनुष्यों में से हो। इन सब की बुराइयों से हम अल्लाह की शरण लेते हैं जो हमारा स्वामी और सच्चा पूज्य है।

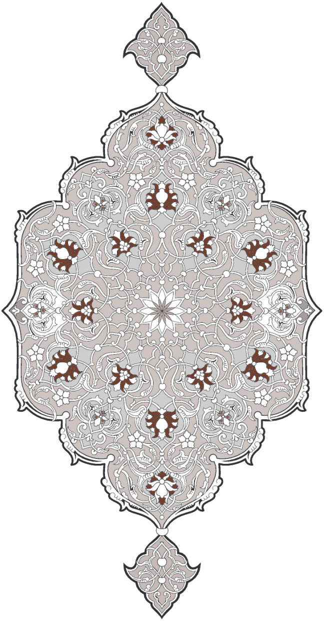

فهرس بأسماء السور

सूरतों की सूची

क्रमशः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं॰	السورة
1	फ़ातिहा	1	الفاتحة
2	बक़रह	5	البقرة
3	आले इमरान	92	آل عمران
4	निसा	142	النساء
5	माइदा	197	المائدة
6	अन्आम	238	الأنعام
7	आराफ़	285	الأعراف
8	अन्फ़ाल	335	الأنفال
9	तौबा	355	التوبة
10	यूनुस	391	يونس
11	हूद	415	هود
12	यूसुफ़	442	يوسف
13	रअद	467	الرعد
14	इब्राहीम	480	إبراهيم
15	हिज्र	492	الحجر
16	नह्ल	505	النحل
17	बनी इस्राईल	532	بني إسرائيل
18	कहफ़	557	الكهف
19	मर्यम	580	مريم
20	ता-हा	596	طه
21	अम्बिया	617	الأنبياء
22	हज्ज	637	الحج
23	मुमिनून	656	المؤمنون
24	नूर	672	النور
25	फ़ुर्क़ान	692	الفرقان
26	शुअरा	706	الشعراء
27	नम्ल	730	النمل

क्रमशः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं॰	السورة
28	क़स़स	747	القصص
29	अन्कबूत	766	العنكبوت
30	रूम	781	الروم
31	लुक़मान	794	لقمان
32	सज्‌दा	803	السجدة
33	अह्ज़ाब	809	الأحزاب
34	सबा	829	سبإ
35	फ़ात़िर	843	فاطر
36	यासीन	854	يس
37	साफ़फ़ात	866	الصافات
38	स़ाद	883	ص
39	जुमर	895	الزمر
40	मुमिन	912	المؤمن
41	हा मीम सज्दा	929	حم السجدة
42	शूरा	942	الشورى
43	जुख़रुफ़	956	الزخرف
44	दुख़ान	971	الدخان
45	जासियह	979	الجاثية
46	अह्क़ाफ़	987	الأحقاف
47	मुहम्मद	998	محمد
48	फ़त्ह	1007	الفتح
49	हुजुरात	1018	الحجرات
50	क़ाफ़	1026	ق
51	ज़ारियात	1033	الذاريات
52	तूर	1041	الطور
53	नज्म	1048	النجم
54	क़मर	1056	القمر
55	रह्मान	1063	الرحمن
56	वाक़िआ	1071	الواقعة

कमशः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं॰	السورة
57	हदीद	1079	الحديد
58	मुजादला	1088	المجادلة
59	हश्र	1095	الحشر
60	मुम्तहिना	1103	الممتحنة
61	सफ़्फ़	1110	الصف
62	जुमुआ	1114	الجمعة
63	मुनाफ़िक़ून	1118	المنافقون
64	तग़ाबुन	1122	التغابن
65	त़लाक़	1127	الطلاق
66	तह़रीम	1132	التحريم
67	मुल्क	1137	الملك
68	क़लम	1143	القلم
69	हाक़्क़ा	1150	الحاقة
70	मआरिज	1156	المعارج
71	नूह	1161	نوح
72	जिन्न	1165	الجن
73	मुज़्ज़म्मिल	1170	المزمل
74	मुद्दस्सिर	1174	المدثر
75	क़ियामा	1180	القيامة
76	दहर	1185	الدهر
77	मुर्सलात	1190	المرسلات
78	नबा	1195	النبإ
79	नाज़िआत	1200	النازعات
80	अबस	1205	عبس
81	तक्वीर	1210	التكوير
82	इन्फ़ितार	1214	الانفطار
83	मुतफ़्फ़िफ़ीन	1217	المطففين
84	इन्शिक़ाक़	1221	الانشقاق
85	बुरूज	1224	البروج

क्रमशः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं॰	السورة
86	तारिक	1228	الطارق
87	ऑला	1231	الأعلى
88	ग़ाशियह	1235	الغاشية
89	फ़ज्र	1238	الفجر
90	बलद	1242	البلد
91	शम्स	1246	الشمس
92	लैल	1249	الليل
93	जुहा	1253	الضحى
94	श्रह	1256	الشرح
95	तीन	1259	التين
96	अलक	1261	العلق
97	क़द्र	1265	القدر
98	बय्यिनह	1267	البينة
99	ज़िलज़ाल	1270	الزلزال
100	आदियात	1272	العاديات
101	क़ारिअह	1274	القارعة
102	तकासुर	1276	التكاثر
103	अस्र	1278	العصر
104	हुमज़ह	1280	الهمزة
105	फ़ील	1282	الفيل
106	क़ुरैश	1284	قريش
107	माऊन	1286	الماعون
108	कौसर	1288	الكوثر
109	काफ़िरून	1290	الكافرون
110	नस्र	1292	النصر
111	तब्बत	1294	تبت
112	इख़्लास	1297	الإخلاص
113	फ़लक़	1300	الفلق
114	नास	1303	الناس

إنّ وزارةَ الشُّؤونِ الإسلاميّةِ والدَّعوةِ والإرشادِ
في المملكةِ العربيّةِ السُّعوديّةِ
المشرفةَ على مجمّعِ الملكِ فهدٍ
لِطباعةِ المصحفِ الشّريفِ في المدينةِ المنوّرة
إذ يسرُّها أن يُصدرَ المجمّعُ هذه الطّبعةَ مِنَ القُرآنِ الكريمِ
وترجمةِ معانيهِ وتفسيرِهِ إلى اللّغةِ الهنديّة
تسألُ اللهَ أن ينفعَ بها النّاسَ
وأن يجزيَ
خادمَ الحرمَينِ الشّريفَينِ الملكَ سلمانَ بنَ عبدِ العزيزِ آل سعودٍ
أحسنَ الجزاءِ على جهودهِ العظيمةِ في نشرِ كتابِ اللهِ الكريمِ
واللهُ وليُّ التّوفيقِ

इस्लामी उमूर, तथा दावत और इर्शाद मंत्रालय, सऊदी अरब, जो किंग फहद कुर्आन परिन्टिन्ग कम्पलेक्स, मदीना मुनव्वरा, पर निरिक्षक है, को कुर्आन पाक और उस के अर्थों का हिन्दी अनुवाद और व्याख्या को छापते हुऐ अति प्रसन्नता हो रही है। वह अल्लाह तआला से दुआ करता है कि इस से लोगों को लाभ पहुँचे। और हरमैन शरीफ़ैन के सेवक किंग सल्मान बिन अब्दुल अज़ीज़ आल सऊद को कुर्आन पाक के प्रचार करने में उन के महान् प्रयासों पर बहुत ही अच्छा प्रत्युपकार दे।

بِعَوْنِ اللهِ وَتَوْفِيقِهِ
تَمَّ طَبْعُ هَذَا المُصْحَفِ الشَّرِيفِ
وَتَرْجَمَةِ مَعَانِيهِ فِي مُجَمَّعِ المَلِكِ فَهْدٍ
لِطِبَاعَةِ المُصْحَفِ الشَّرِيفِ بِالمَدِينَةِ المُنَوَّرَةِ
بِإِشْرَافِ وَزَارَةِ الشُّؤُونِ الإِسْلَامِيَّةِ
وَالدَّعْوَةِ وَالإِرْشَادِ فِي المَمْلَكَةِ
العَرَبِيَّةِ السُّعُودِيَّةِ
عَام ١٤٤٠هـ

अल्लाह
की सहायता और
तौफ़ीक़ से क़ुर्आन पाक का
यह भाग, और उस के अर्थों का
अनुवाद इस्लामी उमूर, तथा दावत
और इर्शाद मंत्रालय, सऊदी अरब
के संरक्षण में, किंग फहद
क़ुर्आन परिन्टिन्ग कम्पलेक्स,
मदीना मुनव्वरा में,
वर्ष 1440 हिज्री
में छापा गया।

حُقُوق الطَّبع محفُوظة
لِمُجَمَّعِ المَلِكِ فَهدٍ لِطِبَاعَةِ المُصحَفِ الشَّرِيفِ

ص.ب ٦٢٦٢ - المدينة المنوّرة
www.qurancomplex.gov.sa
contact@qurancomplex.gov.sa

छपाई के अधिकार किंग फह्द कुर्आन परिन्टिन्ग
कम्पलेक्स, मदीना मुनव्वरा, के लिये सुरक्षित हैं।

पोस्ट बॉक्स नं॰ **6262**
www.qurancomplex.gov.sa
contact@qurancomplex.gov.sa

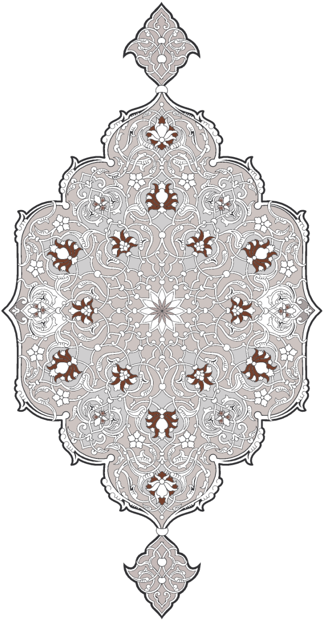

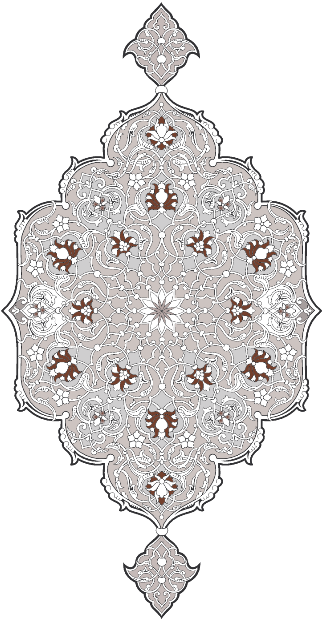

ⓒ مجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف ، ١٤٤٠ هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر .

مجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف
القرآن الكريم وترجمة معانيه وتفسيره إلى اللغة الهندية . /
مجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف . - المدينة المنورة ، ١٤٤٠ هـ
١٣٢٨ ص ؛ ١٤ × ٢١ سم
ردمك: ٩٧٨-٦٠٣-٨١٨٧-٥٦-٢

١- القرآن - تفسير - اللغة الهندية أ. العنوان
ديوي ٢٢١،٤٩١٤ ١٤٤٠/٢٢٩

رقم الإيداع : ١٤٤٠/٢٢٩

ردمك : ٩٧٨-٦٠٣-٨١٨٧-٥٦-٢

9 786038 187562

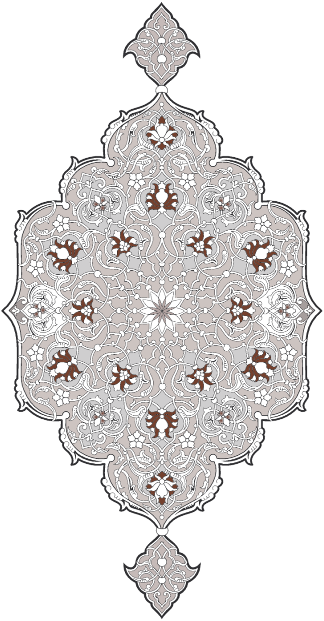

٤٠٠٠/د٤٨ (٠١)(٠١) ردمك: ٩٧٨-٦٠٣-٨١٨٧-٥٦-٢